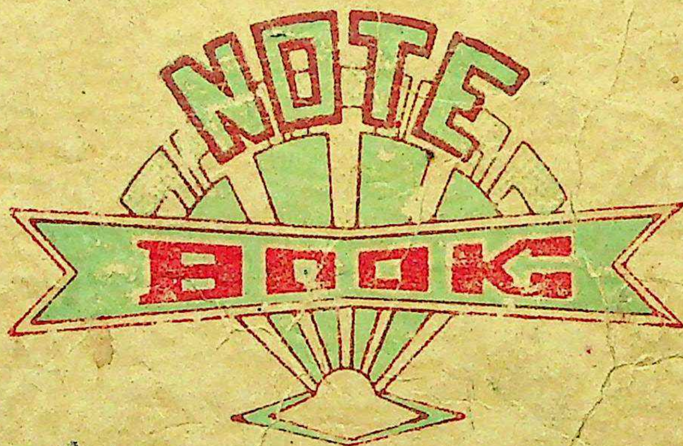
Parijat



Kan[illegible] Sarkar

[illegible] copy

१५ - कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी - श्री हनुमान जयन्ती

१६. कार्तिक कृष्ण अमावस्या, दीपावली, कालरात्रि सिद्धि

सुखरात्रि, श्री तारा आविर्भाव दिवस, लक्ष्मी पूजा

१७ अगहन कृष्ण ८ श्री भैरव अष्टमी, (श्मशान पूजा)

१८ अगहन शुक्ल १३ में चतुर्दशी दण्डपाणि भैरव आविर्भाव दिवस

१९ पौष कृष्ण ८ महाकाल भैरव आविर्भाव दिवस

तथा घोर रात्रि

२०. पौषी पूर्णिमा - श्री शाकम्भरी जयन्ती

२१ फाल्गुन कृष्ण १३ महाशिवरात्रि अथवा सिद्धिरात्रि

केचिन्मते - महारात्रि होली सिद्धि रात्रि कहलाती है।

यंत्र सिद्धि तब करें जब हस्त नक्षत्र पर सूर्य हो। या पुष्य

या मूल नक्षत्र रवि को जब पड़े। या गुरु पुष्य हो तब करें

पंचदशी यन्त्र की कलम से लिखें एक पटरे पर वह

पटरा, बटवृक्ष या पाकर या गुलर या कटहल की

लकड़ी का बना हुआ हो। उस पर १५ हजार लिखो

दाहिने हाथ से। बायें से मिटाओ। रोली से या

फल गंध से लिखो। १५ हजार जप, १५ सौ मंत्र से हवन

कनेर पुष्प घी से। डेढ़ सौ तर्पण, १५ बार मार्जन, २ ब्राह्मणों

भोजन ५०० यंत्र रोज लिखें ३० दिन में खतम होगा। ५० आहुति

१ चैत्र शुक्ल अष्टमी "क्रोधरात्रि" भवानी का जन्म
२. चैत्र शुक्ल नवमी - श्री भुवनेश्वरी जयन्ती
३ चैत्र शुक्ल १५ पूर्णिमा श्री हनुमान जयन्ती
४. वैशाख शुक्ल, ३ अक्षय तृतीया
दारुणरात्रि, धूमावती ~~जयन्ती~~ आविर्भाव दिवस,
श्री परशुराम जयन्ती
५ वैशाख शुक्ल ४ श्री मातंगी प्रादुर्भाव दिवस
६ वैशाख शुक्ल ९ श्री सीता जन्मोत्सव
७ वैशाख शुक्ल १३ त्रयोदशी श्री छिन्नमस्ता आविर्भाव
८ श्री नृसिंह चतुर्दशी - (दिवस
९ ज्येष्ठ शुक्ल १० श्री गंगादशहरा, श्री बटुक भैरव
आविर्भाव दिवस तथा दिव्यरात्रि
१० आषाढ़ शुक्ल २ द्वितीया श्री जगन्नाथ रथयात्रा
११ भाद्रपद कृष्ण अष्टमी मोहरात्रि सिद्धिरात्रि
१२ आश्विन कृष्ण ३० अमावस्या श्री भैरवी चक्र
दिवस
१३ आश्विन शुक्ल ८ महारात्रि
१४ आश्विन शुक्ल पूर्णिमा कोजागरा कृत्य
मार्गसिर शुक्ल चौदश को दत्तात्रेय अवतार

इत्यादि तंत्र में है।
९८४ नं पेज का है
उल्टी तरफ देखो
यहीं दी है

आकर्षण मंत्र

॥ यथादिरूपमंत्रप्रयोगः॥

(यथादिमंत्ररूपमंत्रः) इसमें कुछ जपविधान संख्या

ॐ नमः आदि रूपाय अमुकस्याकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा॥

विधान — इस मंत्र को गोरोचन और केसर से मनुष्य कोरे कपड़े पर लिखके प्रातकाल मध्याह्न और सायं इन तीनों समय खैर के अंगार में तपावे तो स्त्री हो या पुरुष या पशु आकर्षण हो जाते हैं। यानी वह आ जाते हैं।

॥रुद्र मंत्र प्रयोगः॥

पहलो — ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा। दूसरा मंत्र चाहे यह जपे।
ॐ नमो भगवते रुद्राय रा दृष्टिलपिनाहर स्वाहा दुहाई केसासुर को छूट जूट फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा

विधान — मंगलवार से शुरू करके ८ अक्षर वाले पहले मंत्र को प्रतिदिन एक हजार दूसरे मंत्र को २१ बार जपे तो दश दिन में सिद्ध हो जायेगा। ग्यारहवें दिन होम तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन कराने के बाद मंत्र सिद्ध हो जाने की परिक्षा इस तरह करे। एक सरकंडे को बीच से चीरकर दोनों तरफ से दो मनुष्य पकड़ें और साधक चूहे के बिल की मिट्टी सरसों बिनौले तीनों चीजों को १०८ बार मंत्र द्वारा मंत्रित करके सरकंडे पर मारे तो दोनों टूक मिल जायेंगे तो समझो मंत्र सिद्ध हुआ।

जिसको आकर्षण करना हो उसके वस्त्र पर उक्त तीनों चीजों को मंत्रित १०८ बार करके मारे तो वह स्त्री पुरुष जितने दिनों के मार्ग पर होगा उतने ही दिनों में आजायेगा इसमें संदेह नहीं

(सर्व लोक — ॥ मोहन तन्त्र ॥)

ॐ नमः सर्वलोक मोहनं कुरु कुरु स्वाहा। १०८ बार जपले पहले। चाहे चौगुनी जपले।

विधान - तुलसी बीज का चूर्ण सहदेवीरस में घिसले रविवार के दिन तिलक करके निकले। जगत् मोहित होवे।

हरताल अश्वगंधा को केले के रस में पीसले गोरोचन भी मिला दे तो जगत् मोहन होवे।

श्रीमान सेंगई — भृंगि, चन्दन, वचा कुष्ठ मिला कर अपनी देह वस्त्र व मुख में साधक लेप ले। पशु पक्षी प्रजा राजा या पान की जड़ को तिलक करके जाय।

मेन्सिल कपूर केले के रस में घिस कर तिलक करले वश हो जो देखे।

॥ नारी वश प्रकरण ॥

मालती का फूल लावे रेशमी सूत्र की बत्ती बनाके

शुक्र के दिन मनुष्य की खोपड़ी में अंडी का तेल डाले काजल पारे उसे लगावे तो दृष्टिमात्र से मोहित होवे

अपने मुख में मीठा कुष्ठ पान में खवा दे तो भी वश होवे

जौ का आटा हल्दी का चूर्ण घी पान का रस मिला दे फिर मुख में मले सुन्दर हो जाय, दोनों चरण में मले तो कमल के समान हो जाय।

गोरोचन कमल का पत्ता घिस के तिलक लगावे। तो त्रिवश

मालती के फूल कडुवे तेल में पका के फिर भग पर लगावे तो पुरुष सुखी हो।

जिह्वा मल लौंग में मिला कर खिलावे तो पति वश हो

स्त्री अपने महीने के खून में गोरोचन मिला कर अपने मस्तक पर तिलक करे तो पति वश हो।

छिपकली की पूंछ महीने के खून के कपड़े में लपेट के रवि वार को जला के दिखावे तो पति वश हो। सर्व लोक वशी हो।

दत्तात्रेय तन्त्र है यह

सर्वलोक

॥ वशीकरण मंत्र ॥

(ॐ नमः सर्वलोक वशंकराय कुरु २ स्वाहा १०८ बार)
जपले चाहे चौगुना जपले।

विधान नर कपाल में रविवार के दिन चावल को खीर बनाले छाया में सुखाले तत चुर्ण पान में खवादे। जनम भर वश होके रहे

दूसरा। ब्रह्मदंडी बचा कुष्ठ चूर्ण तांबूल मिश्रित कर के तिलक करे रवि वार के दिन। सर्व लोक वशी करण होवे।

तीसरा वट वृक्ष की जड़ जल से घिसे विभुती मिला कर तिलक कर ले सर्वलोक वशीकरण

चौथा पत्थर चटा को सातवार मंत्रित करके खवादे जहां चाहे ले जाये जिसको

पांचवा छिपकली की पुंछ महीने के खून के कपड़े में रख बत्ती बनावे रविवार को जिससे कामलेना हो उसे जला कर दिखादे।

छठा भृंगराज लटजीरा सहदेई की तीनों की जड़ का तिलक करे

कडुवी तूंबी के बीज का तेल रेशम के कपड़े की बत्ती का जल पार ले तो नेत्र में लगाते ही जगत मोहित हो

गूलर के फूलकी

सातवां ^ ढूंवर के फूल की बत्ती बना के घी के दीपक में जलावे काजर पार कर लगाले जब काम को जावे।

आठवां श्वेत गुंजा में ब्रह्मदंडी की जड़ पीस कर अपने पूरे शरीर पर लेप कर ले जगत मोहन हो।

नवां सफेद दूब हरताल पीस कर तिलक करले।

दसवां बेलपत्ती छाया में सुखा के गाय के दूध में वटी बनाले फिर उसका तिलक लगा कर जाय। इतना मोहित होगा दान प्राण भी देने को तैयार होगा।

११ वां सफेद मदार कमल श्वेत चन्दन मिला कर तिलक करे

१२ वां सिंदुर कुंकुम गोरोचन धात्री रस में के पीस के तिलक करले।

१३ वां भांग के पत्ते सफेद सहित देह में पीस के लगाले।

१४ वां तुलसी के पत्ते छाया में सुखा के अश्वगंधा यानी सहित भांग के बीज मिला के गाय के दूध से गोली एक टंक भर बनाले। प्रातः खाले सब मोहित होवें

॥ राजा को वशी करण मंत्र ॥

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा

विधान - लटजीरा का फूल रविवार को लाकर मंत्र से १०८ बार मंत्रित करके राजा को खिलादे।

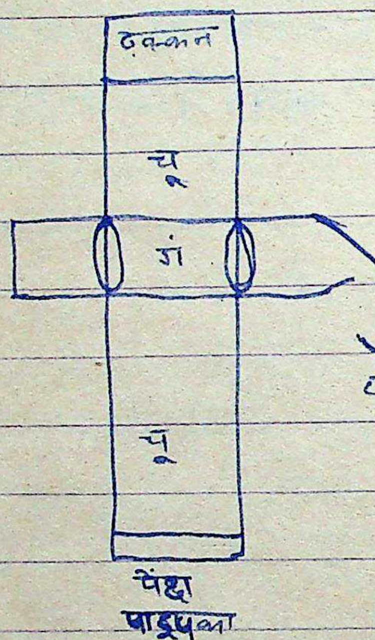
॥ मंत्री वशीकरण मंत्र ॥

बिस्मिल्ला हद्दाना कुलु अल्लाह हयगाना दिल है सब तुम हो दाना हमारे बीच कलाने को करो दिवाना।

विधान बिनौले २१ लेकर हर एक बिनौला पर २१ मंत्र पढ़कर अग्नि में होमे तो २१ दिन में सिद्ध होवे। पीछे ४१ बिनौले लेकर हर एक बिनौले पर ४१ मंत्र पढ़कर आधी रात्रि में होमे तो तीन ही दिन में मंत्री वश होवे

॥ नेत्र पीड़ा निवारण मंत्र

ॐ नमो श्री राम की धनुही लक्ष्मण का बाँण आँख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमार की आन। नीम की डाली से २१ बार झाड़ दो



गोल गोल आकार छेदों का हैं जो पाइप में आर पार करायाजाता है।

तिरछा कुछ रहे ग्लास

प्याली

पानी डालने से जब चूना खदबदान लगे तो ऊपर का मुख बन्द कर देवे
से बन्द कर देवे।

एक तांबे का बड़ा बर्तन ले उसके अगल बगल में इतना
बड़ा छेद कर दे जिसमें शीशी आ जावे जिसका यंत्र
इस चित्र में देखो। इस रीति से बना उसमें चूना भर दे
तुर्त का फुंका हुआ मरा चूना न हो। शीशी में हरा गंधक
भर दे। उस पात्र में कुछ तिरछा रखो। आरका ओ संधिये
शीशी के पास को गेहूं के आटे से बंद कर के सुखा दो
फिर शीशी के ऊपर भी चूना ढंक दो, और तांबे के
पात्र का मुख खुला रहने दो पीछे उस पात्र में पानी
डालो तो चूना खदबदावेगा उसकी गर्मी से तेल
गंधक का निकल कर बाहर पड़ने लगेगा। उसको
एक चीनी के प्याले में लेलो इस तेल को सींक
तांबे के पत्र पर लगा के तपा दो। गंधक हरी
होनी चाहिये। उसे प्याज के पत्र के रस में गोली
बनाकर शीशी में डालना चाहिये और ऐसा
करने से पाताली यंत्र द्वारा अग्नि योग से भी तेल
निकल आवेगा क्यों कि हरी गंधक विशेष पिघल
ती है।

स्वर्ण

एक महात्मा ने बताया आमलासार गंधक को जामुन को छाल के रस में १ पहर घोटे और गोला बनावे और एक तांबे का नारियल जिसके नीचे छेद हो उस नारियल में तांबे का पात्र के ऊपर कर गंधक का गोला धरे पीछे ताम्र के नारियल का मुख ताम्र पात्र से ही बंद करदे ऊपर अग्नि बालने से गंधक का तेल निकलेगा उसे प्याली में लेले। फिर प्रयोग समय सींक से तांबा पात्र पर लगाकर अग्नि में तपादे

पीला धतूरे का फूल सीसा आ०तोला लोंगली का रस लाय ग्वार पाठे का रस लाय खरल में घोट कर गोली बनाले गजपुट की घर आग में गोला फूंक दे तो स्वर्ण बने

मधु घी तांबा सोना मारबो पारा में खरल करे। दीजे तीव्र अग्नि जलवाय, मूस माहो में रखकर मुखबन्द करदे सन्धि न रहे। मिट्टी रुई मिलाकर कूट कर मुखबंद करदे और सुखाले। अग्नि के बीच में रख दो तो चांदी हो जाय।

॥ अरुणो उवाच ॥

सूर्यनारायण से अरुण जी ने कहा। कि वृथा धनं धान्य घर जिसके पुत्र नहीं है सब वृथा है। हे सूर्यनारायण कृपाकरके इस का प्रयाश्चित् बताओ (सूर्य भगवान बोले) हे अरुण जो आदमी ब्राह्मण का धन अपहरण करता है वह निर्वंशी होता है। इसको शुद्धि के लिये महारुद्र जप करे अथवा नर्वदा नदी और तापी नदी का तीर्थ यात्रा करे। एक ही वस्त्र से स्त्री पुरुष स्नान करे उसके बाद हरिवंशपुराण सुने और ब्राह्म कन्या का विवाह करादे। १०८ ब्राह्मण भोजन रवीर से करावे। (ईशानः सर्व भूतानाः मिति मंत्रेण प्रतिदिन १ हजार जपे

=

या सप्तसती के सौ पाठ सम्पुट लगाकर करे

मंत्र सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धन धान्या सुतान्वितः मनुष्यो मत् प्रसादेन् भविष्यति न संशयः। दस पाठ से हवन १ पाठ से तर्पण ३०० नवार्ण मंत्र से मार्जन करे। ३० ब्राह्मण रिवलावे।

यदि धन न हो तो शिवजी का मंत्र जपे।

शिव मंत्र

या बैल का दान करे। या ब्राह्मण की कन्या का दान दे। या 1 लाख कमल के फूल से शिव की पूजा करे महारुद्र मंत्र का जप करे

रुद्र मंत्र

जिसके बच्चे मर जाते हों उसका उपाय। भ्रूण हत्या करने वाले के बच्चे मर मर जाते हैं।
रुद्र मंत्र का सप्तांश हवन सप्तांश तर्पण सप्तांश मार्जन दूध शक्कर से हवन आम की लकड़ी में करे।

टाइम सोधन किया हुआ है।

~~कृत्सा बद~~

माघ बदी चतुर्दशी मंगलवार

पूस बदी चतुर्दशी उपरांत रविवार अमावश्या को

धूक के नेत्र का अंजन बनाया है।

तर्पयामि, पत्ते में तेल देना उच्चाटन मंत्र पढ़कर १०८
बार तर्पण इस पंख का करना

चौदश या अमावस्या कृष्णपक्ष की हो और दिन रवि पड़े तब यह उदर विदारण क्रिया करे। मुझसे यही

गलती हुई। दिन शुक्र था।

अब पूस कृष्ण पक्ष चौदस रविवार ता. २३ दिसम्बर को पड़ेगी। उच्चाटन प्रयोग धूकला, कोको काके मंगल वार रहे। (योजना उच्चाटन की)

(ॐ नमो महापरवेश (रामचन्द्र तैल्यकार सपुत्र बान्धवे स हन हन दह दह पच पच शीघ्र मुच्चाटयोच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः) (विद्वेषण की योजना)

ॐ नमो महा परवेश (वासुदेवस्य कमला देव्याः सह विद्वेषण कुरु कुरु स्वाहा।

यदि चौदस या मावस हो रवि, या मंगल उस दिन हो तो और अच्छा होगा

यह सब कर्म कृष्णपक्ष मंगल या रवि को अर्ध रात्री में करना

॥ अथ पक्षी राज घूक तंत्र ॥

अदृश्य विद्या

चौगुना जपे

चौगुनी बार मंत्रित करे तब सिद्ध होगा

कृष्ण पक्ष की चौदस मावस या रविवार को पक्षी घुघ्घू लाकर उसका उदर फाड़ दे उसकी हड्डी निकाल ~~कर~~ दे विष्ठा को सुखाले

स्वयं नंगा होकर निकाले। शमशान में मनुष्य की खोपड़ी में कड़ुवा तेल भर कर काजल पारे गुगल की धूप दे मंत्र से उसे १०८ बार अभिमंत्रित करे तो सिद्ध होवे।

विधान — उस काजल को तांबे के ताबीज में इकट्ठा करे फिर उस को मुख में रखले तो अदृश्य हो जाता है (यदि काजल का अंजन नेत्र में लगा ले तो देवता दिखाई पड़ें। भूत प्रेत पिशाच यक्ष योगिनी दिखे। जब मानुषी दृष्टि करना हो तो गोमूत्र से नेत्र धो दे। ठीक होवे

अदृश्य का यही है मंत्र — जब काजल लगावे तो मंत्र १०८ बार पढ़ले (ॐ कुरु कुरु स्वाहा मेह मरी अनेन धनेय: पाठेश्वरो नम:)

यह काम भी रवि मावस कृष्ण पक्ष को जब पड़े तब करे।

प्रयोग — उल्लू के मज्जा का तेल में काजल पारे उसे आंख में लगावे अदृश्य हो जाता है। यह तेल घुघ्घू की चर्बी और हड्डी के भीतर मज्जा होता है उसका तेल

प्रयोग — घुघ्घू के नेत्र को कड़ुवे तेल में घिसे शमशान में काजल उस तेल में पारे और लगावे तो अदृश्य होवे।

प्रयोग — उल्लू घुघ्घू के पंख अपना केश चिता की आग में जला दे सूक्ष्म चूर्ण बनाले अंकोल तेल डाल के गोली बना ले सिर पर धरले। अदृश्य होवे

१ नीलें कण्ठ, — २ कौवा, ३ उल्लू तीनों के ~~नसों को~~ दोनों आंखों को निकाल ले उस लोहे की थाली में घिसे काजल पार कर लोहे की सलाई से लगावे तो अदृश्य होवे गोमूत्र से धोवे मानुष दृष्टि होवे।

अदृश्य का है।। नीलांजन

२ ✗ उल्लू स्याह सूअर इनकी आंखें काट कर नीलांजन में पीसे, सकोरे में धर कर के तेल की बत्ती धर के काजल पारे नीचे इसी के मंत्र लिखा है इससे १०८ बार अभिमंत्रित करके काजल पारे। (स्वयोधान मंत्र है)

3 ✓ ॐ नमो भगवंते उड्डामरेश्वराय नमो रुद्राय हिलि चिलि चिलि व्याघ्र चर्म परीधानाय मरुल २ कुरु २ चंड प्रचंड किलि २ स्वाहा। इसी मंत्र से अभिमंत्रित कर अञ्जन किया जायेगा।

(नारी वशीकरण का) हर वशीकरण रविवार को ही होगा
दूसरा प्रकार सम भाग मांस रोली का होगा।

इतवार के दिन घुघघु का मांस लावे लाल चन्दन कुंकुम यानी रोली में रख कर पीसे गोली बनावे एक टंक ~~तोला~~ भर की बांधे गुगल धूप से सेंके गोली १०८ बार अभिमंत्रित कर के स्त्री को पान में देदे वश होवे।

नीतावश

वशीकरण | घुघ्घू का तालू निकाल कर पीस के पान में [struck] दे दे रविवार को धूप पर देके मंत्रित कर ले तो नारी धन प्राण दे दे

घूक की चौंच नाग केशर केशर गोरोचन चारों को पीसकर १०८ बार मंत्रित करके तिलक करे पीसते समय मंत्र पढ़ता जाय नारी देखे वश हो।

घुघ्घू का जीभ नींब के पत्ते में खूब महीन पीसे नेत्र में लगाले जो देखे वश होवे (circled)

आकर्षण है यह | घुघ्घू के नेत्र बिल्ली के नेत्र वच्छनाग गा [struck] केशर सिर के बाल सरसों पीली समान भाग ले कर पीसे समशान में एक खड्डा खोद कर गाड दे सात दिन पड़ा रहने दे उसे निकाल कर स्त्री के सिर पर डाले वश होवे बिना बुलाये आवे।

पड़े मेरव

कच्चे सकोरे में बत्ती रखकर नूतन पाल में कज्जल पाड़ो →

घुघ्घू के नेत्र बिल्ली के नेत्र वच्छनाग [struck] नाग केशर सिर के बाल पीली सरसों इनको पीसकर कपास की बत्ती बना कर एक रंग की [struck] गाय के घी में बत्ती डाल काजल पाड़े

नंगा होके | इतवार को मघा पड़े जिस दिन आधी रात में नंगा होके समशान में

(नारी वशी करण प्रयोग है यह।

आकर्षण — मिट्टी के कच्चे सकोरे में तेल भर कर बत्ती डाल कर पारे फिर नर कपाल को ऊपर रख के पारे उसे मंत्रित १०८ बार करदे गुगुल धूप देता जाय तब काजल सिद्ध होवे। तब सभी कामों में उसे ले सकता है।

वशी करण — जिस स्त्री के वस्त्र में उस काजल को एक रेखा लगादे तो आकर्षित होवे वशी। यानि नारी वश होवे। पुरुष नहीं

घुघु-कौवा को विष्ठा जिसके सिर पर डालदे। चूरी बनाकर रखले पहले से, मंगल बार को या रवि को।

वशी करण — धूप गरुड़
उल्लू का मांस हृदय का गोरोचन मिला कर रखा मंत्रित काजल, और अंजन मैं लगा ले नारी वश होवे। जो अंजन लगावे वही जप करे उसके नाम से।

आकर्षण मंत्र — ॐ नमो पंख ॐ नमो मस्त पंखेश अमुक मे वश्यम कुरु कुरु स्वाहा यह मंत्र नारी को वश करने का ही है।

विद्वेषण है यह मंडल — एक हाथ मे कौवे का पर, दूसरे हाथ मे घुघु का पंख दोनों को मिलावे मंत्र पढ़ते हुये कुश को तिनके से बांधदे फिर उससे पुरुष तर्पण करे घुघु देवता को। ~~[illegible]~~ मंत्र से शुरु करे सात दिन। १०८ बार सात दिन में जपले ~~[illegible]~~

उच्चाटन मंत्र	ॐ नमो महा परवेश रामचन्द्र तौलिनं सपुत्रबान्धवै सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रमुच्चाटयाच्चाटय हुं फट स्वाहा ठः ठः।
	जिनाम से एक साथ प्रयोग अलग २ जाति को करे तो एक जाति के बाद यह जोर है फिर दूसरी जाति का नाम ले।
	यह योजना का तरीका लिखा है।
विद्वेषण मंत्र	ॐ नमो महा परवेश बासुदेवस्य कमलादेव्याः सह विद्वेषण कुरु कुरु स्वाहा। १०८ बार जप ले सात दिन तो सिद्ध होवे। जब प्रयोग करे तो १०८ बार मंत्रित करदे
उच्चाटन	घूक परव दोनों जिसके घर गाड़ दे उच्चाटन होवे १०८ बार मंत्रित करदे। बिना मंत्र के उच्चाटन हो जाता है
उसे मारण	घूक विष्ठा ~~ससे~~ विष (वछनाग) के साथ पीस ले जिसपर छोड़े ~~उच्चाटन होवे~~।१ उसे मारण होवे
मंगल या शनि को कृष्णपक्ष में।	काक उल्लू परव ले १०८ टुकड़े करके जिसके नाम से मंत्र पढ़कर हवन करदे
मंगल को	घूक के शिर का चूर्ण जिसपर डालदे उच्चाटन हो
	घूक के दांत निंब की लकड़ी बिल्ली का नख चमड़ा धतूरे के रस में समसान की हड्डी में चुपड़ दे शत्रु के घर गाड़ दे। उच्चाटन होवे। (इसका मंत्र
उच्चाटन मंत्र	ॐ नमो महा परवेश रामचन्द्र तौलिनं सपुत्र बांधवै सह हन हन दह दह पच पच शीघ्र मुच्चाटयोच्चाटय हुं फट् स्वाहा। १०८ बार जपने से सिद्ध होजाता है।

मारण मंत्र :- ॐ नमो महापरवेश्वा काल रूपाय अमुकं भस्मी कुरु २ स्वाहा
१०८ बार जप से सिद्धी हो जाती है।

बिच्छू घुक को हरताल मिलाकर सिर पर डाले मरण हो

बुद्धि स्तम्भन मंत्र :- ॐ नमो महापरवेश्वा अमुकं बुद्धि स्तम्भनम कुरु २ स्वाहा
१०८ बार जप से सिद्धि होवे।

उल्लू वा बंदर को बिष्ठा का चूर्ण पान में खवादे
बुद्धि स्तम्भन होवे। उल्लू और बंदर का चूर्ण बना कर रख ले शतमें।

विक्षिप्त = घुक की बिष्ठा रेंडी के तेल में पीसे जिस पर डाले
पागल होवे १०८ बार मंत्रित कर देना

विक्षिप्त मंत्र :- ॐ नमो महापरवेश्वा विक्षिप्त कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमो महापरवेश स्वप्नावस्था यो नमो मिलीसितम्
कथय स्वाहा। १०८ बार जप से सिद्धी होवे।

उल्लू के हृदय के मांस को १०८ बार उपरोक्त मंत्र से मंत्रित करे
गुगुल से सेंके फिर सोये आदमी के हृदय पर डाले जो मन
में हो कह दे उड़ का सके।

या मावस सत्री
असाढ़ कृष्ण पक्ष चौदश के दिन मद्रा मरणोग होतब
(चौहदिन है। या रात) शनि, रवि, मंगल हो। उल्लू के कपाल में मट्टी भरे
उसमें धतूरे का बीज बोदे फिर जमीन में गाड़ दे। फिर
(गुगुल धूप दे।) भैरव का ध्यान (लाल) करे गुड़ के जल से पेड़ सींचे रोज
उसके ऊपर घी को दीपक रोज ~~बारेतब~~ जब तक (तक)
(बड़ी वृक्ष न हो जाय) जावे जालोव। जब बड़ा वृक्ष होवे तो पंचाग उखाड़
ले घीस के ~~तिलक~~ चन्दन सा ~~बनावे~~ बनाले
(जो तिलक करे तो) हजार आंख वाला हो जावेगा इसका मंत्र यह इससे
(काम न हो) तो नेत्र में लगाले।
ॐ नमो महा परवेश सहस्त्राक्ष रूपं कुरु कुरु स्वाहा
१०८ बार जप से सिद्धी होवे। रोज १०८ बार जपे शत को
जब तक पेड़ न हो जाय।

प्रयोग
धूक की ~~बोरी~~ हरताल में्सिल तीनों को गोली
घास के पानी से बनाले १०८ बार मंत्र से गोली
को मंत्रित करे फिर घिस के नेत्र में लगावे
तो बिना चिराग के पुस्तक पढ़े

उल्लू के कपाल में घी की बत्ती से काजल पारे
१०८ बार मंत्रित करके नेत्र में लगाने से
रात में पढ़े। इसका मंत्र आगे देखो।

रात्रि में पढ़ने से सिद्ध होवे — १०८ बार जपने से सिद्धि है।

ॐ नमो महा पैरवेश्रा रात्रौ रात्रौ दर्शय स्वाहा॥

निधि दर्शन मंत्र — ॐ नमो महापरवेश भू निधिं दर्शय ठः ठः स्वाहा। १०८ बार से सिद्धि

कपूर — उल्लू का चक्षु लेके रोली हल्दी या गोरोचन मांस मधु सम भाग लेके अंजन लगावे तो पृथ्वी के अन्दर का गढ़ा धन दीखे।

ज्वर निवारण। रोजवाला — उल्लू का परवना दाहिना सफेद सूत्र से बांध ले जिसके बांये कान में बांध दे तो रोज आने वाला ज्वर जाय

चौथइया ज्वर जाय — घूक का दाहिना परव काले वस्त्र में बत्ती सी बना ले घी के दीपक पर काजल पारे जिसे चौथइया आवे, उसके नेत्र में लगावे दूर होवे। आश्चर्य होगा तुम्हें।

घूक विष्ठा। गुंजा के बराबर पान में दे तो सर्व ज्वर जाय। इसका मंत्र यह है। यह काम रवि मंगल शनि हो। चौदस या मावस कृष्ण पक्ष हो। रवि चौदस या मंगल शनि को चौदस मावस पड़े तब दे।

नीचे योजना जप को लिखते है
जिसका ज्वर दूर करना हो उसके
ज्वर का　　　　　　　　　　नाम से ४ माला जप कर ले

ॐ नमो महा पंरवेश्वा ज्वरं नाशय २ स्वाहा । १०८ बार जप

जब प्रयोग करे तो कहे ॐ नमो महा पंरवेश्वा जगदीशी देव्या: ज्वरं नाशय २ स्वाहा इत्यादि २।

भूतनाशं　ॐ नमो महा पंरवेश्वा भुत बाधां नाशय २ स्वाहा ।। १०८ बार

प्रयोग　चुक का मास छाया में सुखा के धूप गुगल दिखा के रखले जिसे देना हो गुंजा मात्र ताबीज में भर दे धूप देकर १०८ बार मंत्रित करके तो भुत भागा जाय

उच्चाटन = घूक विष्ठा सिद्धार्थ (सरसो) करलाथ मिलाकर जिसके शीर पर डाले उसे शीघ्र उच्चाटन होजाता है।

॥ मन्त्र प्रकरण प्रारम्भ ॥

चौथा श्लोक है यह

एतां राजवेताविद्यां पिता पुत्रेऽपि नार्पयेत् ॥ तस्माद्गोप्यं वरारोहे मम वाक्यं न संशयः ॥४॥ मोहनं स्तम्भनाकर्षं वशीकरणमुत्तमम् ॥

श्लो.

तत्रादौ बिशांक यंत्र बिधानम् ॥ विश्वलोकतन्त्रे - पार्वत्युवाच

नमस्ते देवदेवेशे सर्व शास्त्र विशारद ॥ बिशांकस्य विधिं ब्रूहि भक्तानां हितकारक ॥१॥ श्री महादेव उवाच ॥ प्रयत: सं प्रवक्ष्यामि सुन्दरी यन्त्र मुत्तमम् ॥ बिशांकस्य महादिव्यं ब्रह्मविद्या शिवात्मकम् ॥२॥ प्राकृत प्रभृति कस्यापि न चोक्तो यंत्र राजकः ॥ तवस्नेहान्मयाऽऽख्यातो गोप्यः सर्वत्र सर्वदा ॥३॥ विद्वेषोच्चाटनकरं मारणं प्राणदायकं ॥४॥ सर्वार्थ जनकं चैव वैरि चित्तस्य शोषणम् ॥ समस्त यन्त्र फलदं महा रक्षा करं सदा ॥६॥ महाभाग्ये कलम्यं तु महदैश्वर्य दायकम् ॥ सर्व कल्याणनिलयं दुर्लभं भुवनत्रये ॥७॥ इन्द्राद्याकर्षणं देवि योषिदाकर्षणं परम् ॥ नागाकर्षण करं देवि गंधर्वोरगरक्षसाम् ॥८॥ करुणामृत कल्लोलं वाक्चित्त प्रकाशकम् ॥ मुगतानां निधीनां च सद्य आकृष्टि कारकम् ॥९॥ कालसंहार पापघ्नं महामोक्ष प्रदायकम् ॥ वश्यकामेन देवेशि सदोपास्यं प्रयत्नतः ॥१०॥ मातंगा वशमायान्ति तस्य सर्वे तस्य वशंगताः ॥ देवकन्याकृष्टि करं कल्पद्रुम मिवा परम् ॥११

बिशांक त्रिपुरसुन्दरी का यंत्र है यह

यहां को श्लोक रूप (?) लिखा दिया है

योगीशैः पूजितं नित्यं ज्ञान वैराग्य भाजनम् ॥ धन धान्य प्रदं
लोके सुत राजवशं करम् ॥ १२ ॥ रसायन करं स्वर्णा सिद्धि
दायकमुत्तमम् ॥ जगतां सर्व पाप घ्नं सर्व रोग निवारणम् ॥
॥ १३ ॥ गत्युरध्याजारत्नवाग वह्नि स्तंभ मुर्तवशंभ करम् ॥
अमराणां मृत्युकर मुच्चाटनं महतापि ॥ १४ ॥ परसैन्य स्तंभ
नं तद्विवादे विजयावहम् ॥ दुर्भिक्षे वृष्टि जनकं कृषि
वृद्धि करं परम् ॥ १५ ॥ रत्न वृद्धि करं सर्व मनोरथ समृद्धि
दम- पुत्र पौत्र प्रदं देह बल वृद्धि प्रदायकम् ॥ १६ ॥
शत्रवस्तस्य नश्यंति येनेदं साध्यते भुवि ॥ व्याधयो
विलयं यांति विनौषधि निषेवणैः ॥ १७ ॥ राज्यदं भ्रष्ट
राज्यस्य निर्धनस्य धनप्रदम ॥ मुक्तिदं सन्मुमुक्षणां
भगतीनां गतिप्रदम् ॥ १८ ॥ अणिमा, महिमा, चैव गरिमा
लघिमा तथा ॥ प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं
प्राप्यतेऽचिरात् ॥ १९ ॥ गृहेभ्यो न भयं तस्य राज चोरभयं
नहि ॥ न शस्त्रादि भयं तस्य न भयं देवदानवात् ॥ २० ॥
चमत्कार करी विद्या धनधान्य समृद्धिदा ॥ पुत्र पौत्र
प्रदा विद्या यांति मुक्ति प्रदायिनी ॥ २१ ॥ सर्वेषां यंत्रराजानां

शिरोमुकुट वर्तित वीतस्पृहम् ॥ स्थित्वा पालयते लोकान्
सृष्ट्या सूते जगत्त्रयम् ॥२२॥ संहृत्या संहरेदेतद्यंत्रं
त्रैलोक्य सुन्दरि ॥ यथा ज्ञाने ज्ञानतत्त्वं ज्ञानं परिसमाप्यते ॥
॥२३॥ ततोऽस्मिन् यंत्रराजे तु नान्यदन्वेषितं भवेत् ॥
बहुना किमो हीक्तेन सर्व सिद्धि प्रदायकम् ॥२४॥
तस्योद्धारं प्रवक्ष्यामि समाहित मना: श्रृणु ॥ त्वया कुत्रापि
नो वाच्यं गोप्यागोप्यतं महत् ॥२५॥ हृदये मम सर्वस्वं मद्भाग्यं
मम प्राणवत् ॥ प्राणादपि प्रियतमं न प्रकाश्यं त्वया क्वचित् ॥
॥२६॥ किम योगै: किं मखै स्तीर्थै: किं तपोभि: प्रयासकै: ॥
किं दानै: किम् जपै: स्तोत्रै: किं पूजा याग विस्तरै: ॥२७॥
किं मन्त्रैरसदालापै: किं वान्यै देवसंस्तवै: ॥ किं तस्य
योग सिद्धया वा काय क्लेशादि भिस्च किम् ॥२८॥ नास्य
ध्यानं न वा पूजा न न्यासो नास्य भावना ॥ जपादस्य
भवेत्सिद्धो यंत्रराजस्त्रिवर्गक: ॥२९॥ पूर्वपश्चिम भागे
च कृत्वा रेखा चतुष्टकम् ॥ उत्तर दक्षिणे रेखां पतस्कोणे
तु कारयेत् ॥३०॥ वसुनन्द हुताशन नेत्र/मुनि प्रमथाधिपै
वेदरसै: क्रमत: । ~~स्काधि कोण विंशत्या~~ रचितं किल
विंशति यंत्र मिदं धनधान्य यशोदय सिद्धि करम ॥३१

नव कोष्ठांकितं यंत्र स्वर्ग पाताल सिद्धिदम् ॥ एकाधिकोण
विंशत्या बाहिरेकाः प्रकीर्तिताः ॥३२॥ आदौ कुर्यात्पुरश्चर्यां
साधकः सिद्धिहेतवे । पुरश्चरणहीनस्य यंत्रसिद्धिर्न जायते ।
॥३३॥ लेखने यंत्रराजस्य भूरिविघ्ना भवंति हि ॥ क्वचिद्वार
चराशब्दस्ता शब्दः क्वचिद्भवेत् ॥३४॥ गानं गन्धर्व
पत्नीनां नृत्यमप्सरसामपि ॥ मातुः पितुर्वा पुत्रस्य दर्शनं
श्रीगुरोरपि ॥३५॥ नाना सर्पमृगव्याल सिंह व्याघ्रादि
दर्शनम् ॥ गात्रास्फुरनमाध्मानं गात्रगौरव मेव च ॥३६
रोदनं दुःखितानां च महावातो महाभयः ॥ पर्वतोत्पतनं
वृक्षभंगो विद्युल्लतागमः ॥३७॥ क्वचिन्मेघायते भूमिः समुद्रः
प्लावयेन्महीम् ॥ क्वचिद्विमानं पतति क्वचिदावर्तते पुनः ॥
क्वचिद्विकृताकारा यान्ति वै भूतनायकाः ॥ एवं
नाना विधा विघ्ना जायंते जगदीश्वरि ॥३८॥ निवार्य
दुस्तरांस्तांस्तु समाधाय मनः स्थिरम् । विघ्नांश्च
गणयेत्तावत्सिद्धिं नैव प्रकाशयेत् ॥४०॥ गात्रस्थाः
रोगान्न गणयेत्पुनर्जन्म न चिंतयेत् ॥ एवं कृतपुरश्चर्यः
साक्षाद्ब्रह्ममयो साक्षाद्ब्रह्ममयो भवेत् ॥४१॥ किं तस्य योग सिद्धया
वा कायक्लेशादि भिश्च किम् ॥ यस्य प्रसन्नो भगवान्

यंत्रराजो जनार्दन ॥ तस्य किं दुर्लभम् लोके स्वर्ग स्वर्भू पाताल मंडले ॥ विषं निर्विषतां याति पानियम मृतं भवेत् ॥ परसैन्य स्तंभनं स्यात्पर काय प्रवेशनम् ॥ यंत्र राजि वशीभूते किं न सिद्ध्यति भूतले ॥४४॥ खेचरी मेलनं तस्य भूचरी मेलनं भवेत ॥ श्मशानेऽपि मृतो याति मोक्षमार्गं सनातनम् ॥४५॥ यथास्य

साधनं = वक्ष्ये तदिह एकमना: शृणु ॥ यंत्रराजेन सिद्ध्यन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥४६॥ यथास्य प्रयोग: ॥

यंत्रस्य प्रयोग: तत्रादौ चन्द्रतारादि बलान्विते सुमुहूर्ते सिद्ध तीर्थे पर्वते वने वा जपस्थानं प्रकल्प्य नद्यादौ स्नात्वा नित्य नैमित्तिकं विधाय एकाकी कुशासने प्राङ् मुख उदङ् मुखो वा उपविश्य विश्वरूपं यंत्र राजस्य हृदये विचिंतयेत् ॥ तथा च - माया बीजांतरीभूतम ज्ञानेन्धन दाहकम् ॥ भावना वश मापन्न: साक्षाद्यंत्रमयो भवेत ॥ ॥ इति ॥ संचिंत्य एकचित्त: स्थिरासनो मौनी - (ॐ गुरवे नमः ॥१॥ ॐ गणापतये नम: ॥२॥ इति नत्वा प्रजापतिं प्रार्थयेत् ॥ तथा च - ॐ प्रजानाथ नमस्तेऽस्तु । प्रजापालन तत्पर ॥ प्रसन्नो भव मे देव यंत्र सिद्धिं प्रयच्छ मे ॥ १ ॥

कोष्ठ में किस तरफ कौन शब्द भर जायेगा श्लोक में ही निर्माण कर दिया गया है। प्रथमष्टा मान पहले २ भरो फिर नव तृतियां लिखा है मान ६ - फिर ३ भरो। फिर २ - ० - ११ लिखा है। फिर १० - ४ - ६ लिखा है चतुर्था: मान ४ - ६ समझना।
उदाहरण जैसे देखो हमेशा बीच कोष्ठ शुरु माना जाता है फिर बांई तरफ भरे फिर दांहिनी तरफ भरे।

कृष्णागुरु मान मूलमूल

२	२	१०
०	६	४
११	३	६

ए केचिद्भूत कूष्मांडा भैरवा भूत नायका: ॥ ते सर्वे विलयं यांतु प्रजानाथं नमोऽस्तुते ॥ २ ॥ प्रयच्छ सिद्धि मतुलां यंत्रराजां सुदुर्लभाम् ॥ त्वत्प्रसादादहं नाथ कृतकृत्यो भजे परम् ॥ ३ ॥ इति गिरिशं संप्रार्थ्य प्रसन्नचितो मौनी यंत्र लिखेत् ॥ चन्दनागुरु कस्तूरी रक्तचंदन कर्पूर कुंकुम देवदारु कुष्ठैः गंधाभिद्रो जाती लेखन्या भुर्ज पत्रे प्रसिद्ध यंत्रे वा 'ॐ ह्रीं ॐ' इत्युच्चारण पूर्वकं नव कोष्ठांकितं कृत्वा प्रथमष्टौ नव तृतियं पुन: द्विसप्त का दृशां पुन: दृशा चतुर्था: इत्यंकान् ('ॐ ह्रीं ॐ' इत्युच्चारण पूर्वकं लिखेत् ॥ एवमेव विधिनाष्टोत्तर शतं यंत्राणि लिखित्वा नाना पुष्पै: संपूज्य कृष्णागुरु धूपं च दत्वा पुष्प वासित तैलेन दीपं दद्यात् ॥ एवं यंत्रं संपूज्य पुनरपि दीपं प्रज्वाल्य पश्चिमाभिमुखं

कलश संस्थाप्य - ॐ भोभो जलेशवसन सर्व कार्य प्रसाधक ॥ निर्विघ्नं कुरुमे कार्यं हर विघ्नान्नमोस्तुते ॥ १ ॥

प्रार्थना ॥ इति वरुणं संप्रार्थ्य इमं दीपं वरुण तुभ्य महं प्रददे ॥ इति दीपं दत्वा नाना पुष्पै: संपूज्य यंत्राग्रे मूल मंत्र जपेत् ॥ तथा च मंत्रो यथा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मम सर्व वांछितं देहि देहि स्वाहा

इसको देखने की रीति सबको मेष राशी वाले को [illegible] सूर्य घातक होगा। पत्रमें ३६

वृषराशी वालेको वृश्चिक का सूर्य घातक होगा।

रोगमे, रणमें, [illegible] यात्रा में इन बातों का बिचार करे

मंगल कार्यों में न बिचार करे।

रासी		मे	वृष	मि	क	सिं	क	त	वृश	धन	म	कु	मी
सू	घात	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं	घात	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं	घात	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	७
बु	घात	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
गु	घात	६	१०	२	७	११	२	८	१२	९	१	४	५
शु	घात	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श	घात	२	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा	घात	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के	घात	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मास	घात	कार्ति	अगह	पू	मा	फा	चै	बै	जेठ	आषा	श्रा	भादों	क्वा
का मतलब	ओसतन मेष	१	५	२	२	२	५	४	१	३	४	३	५
राशीवाले को	कार्तिक घातक	६	१०	४	७	८	१०	९	६	७	९	८	१०
रहेगा। इसी	तरह सब जानो	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	२१	१४	१३	१५
तिथि	घात	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
का मतलब मेष	राशीवाले को	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
तीथी घातक	रहेगी सबकी	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	२१	१४	१३	१५
वार	घात	सू	श	चं	बु	श	श	गु	शुक्र	शुक्र	मं	गु	शुक्र
न.	घात	म	ह	स्वा	अनु	मू	श्र	शत	रे	भ	रो	आ	श्ले
योग	घात	वि	शू	प	धृ	व्या	शु	शु	ब्र	वै	गंड	व्या	वव

क्षौर

जन्मरासी से या नामरासी से गुरु केन्द्र त्रिकोणमें हो तो बलवान होता है १, २, ४, ५, ७, ९, १०, ११ इनमे शुक्र गुरु बलवान होते हैं। साधक की रासी से गिनो देखो कहां गुरु शुक्र है यानी किस स्थान पर है।

अष्टगंध मन्त्रमहार्णव का प्रमाण

जाती माने चमेली।

कस्तूरी, मलियागिर चंदन, अगर (गुग्गुल), लाल चंदन, कपूर, कुंकुम, देवदारु, कूट, यह स्याही बनावे

काली गुग्गल का धूप यंत्र को दे। चमेली के तेल का दीपक जलावे, चमेली की कलम से लिखे।

क्षीरखण्ड। दूध, खांड, घी, मधु चावल यह विवरण खीर का है। और पंचामृत अलग बनाकर उससे भी १०८ बार हवन होवे।

भोजन तेल का बना खावे जब तक अनुष्ठान करे

। मंत्रप्रकरणम ।।

प्रयोग सिद्धिका — जब चन्द्र बल तारा बल सुमहूर्त मे सिद्धि करे पर्वत वन जपस्थान नित्य नैमित्तिक कर्म विधि से निवृत्त होकर एक ही कुशासन पर पूर्व मुख या उत्तर मुख बैठ कर विश्वरूप यंत्रराज को हृदय में चिन्तन करे मौन होकर नमस्कार (ॐ गु गुरुवे नमः) (ॐ

पुष्पमें प्रार्थना — गणपतये नमः) फिर (ॐ प्रजानाथ नमस्तेऽस्तु प्रजापालनतत्पर ।। प्रसन्नो भव मे देव यंत्र सिद्धिं प्रयच्छ मे ।। (ये केचित्प्रेत कुष्मांडा भैरवभूत नायकाः ।। ते सर्वे विलयं यान्तु प्रजानाथ नमोस्तुते ।। प्रयच्छ सिद्धि मतुला यंत्र राजास्तु दुर्लभाम् ।।

आखिरी में प्रार्थना — त्वत प्रसादादहं नाथ कृतकृत्यो व्रजे परम्

इस प्रकार शंकर भगवान की प्रार्थना करके मौन होके

जतिकी कलम से — यंत्र लिखे इस प्रकार के जल गंध से । भोज पत्र पर इस मंत्र को पढ़ते हुये (ॐ ह्रीं ॐ) यंत्र लिखे । नव कोष्ठ का यंत्र बनावे कुश के आसन पर बैठकर लिखे

पूर्व में कलश ... को रखदो — ऐसा यंत्र यही लिखा जायेगा

पूर्व मंत्र तत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

आसन दीपक

कलश, पूर्व

ईशान — आग्नेय

५	८	१०
७	९	४
१२	१३	६

उत्तर — दक्षिण

वायव्य — नैऋत्य

दीप, पश्चिम

नव कोष्ठ वाला

फिर ~~पहले~~ यंत्र का विधिव पुजन करो ~~काले~~ अगर गुगल को
धूप दिखाओ गुलाब बेला चमेली कुंद कमल आदि
के फूल से पुजन करो। चमेली के तेल का दीपक
बालो। जबतक १०८ आठ यंत्र रात्री में तुम लिखो।
और १ हजार जाप जब तक करो दीपक जलने दो। यह
जाप और यंत्र ८८ दिन तक होगा। यंत्र पुजन के बाद
वरुण का पुजन प्रार्थना करो

वरुण प्रार्थना

ॐ नमो गणेशावसन सर्व कार्य प्रसाधका।
निर्विघ्नं कुरु मे कार्यं हर विघ्नान्नमोस्तुते।।

इस प्रकार से प्रार्थना कर के कहे हे वरुण देव
मैं यह यंत्र दीप आपको प्रदान करता हुं। दीप
की पुजा सुन्दर पुष्पों से यंत्र के आगे करे दीप
दीप पश्चिम में रक्खे है। उस आगे बैठ कर मुल
मंत्र (~~ॐ श्रीं ह्रीं~~ (ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मम सर्व वांछितं
देहि देहि स्वाहा) यह मुल मंत्र है।

विनियोग विशांका का

अस्य विशांकस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि: । अनुष्टुप छंद: विशांका भवानी देवता । ॐ बीजम् । ह्रीं शक्ति: । श्रीं कीलक । चतुर्विध पुरुषार्थसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ब्रह्मर्षये नम: शिरसि । १ । अनुष्टुप्छंदसे नम: मुखे २ । ॐ विशांका भवानी देवतायै नम: हृदि ३ । ॐ बीजाय नम: गुह्ये ४ । ह्रीं शक्तये नम: पादयो: ५ । ॐ श्रीं कीलकाय नम: नाभौ ६ । विनियोगाय नम: सर्वांगे ॥ ७ ॥ इति । इसे १६ हजार रोज जपे दशांश हवन दशांश तर्पण दशांश मार्जन दशांश ब्राह्मण खिलावे ।

रसमूलमंत्र को

दूध, खांड, मधु, घी, पंचामृत बनाके सब एक में मिला ले उससे, आम की लकड़ी में हवन करे । यह क्रम २८ दिन चलेगा रोज यंत्र रात्री में लिखा जायेगा । और आटे में गोली बना कर एक एक कर के जल में जहां मछली होवें वहां डाले मूल मंत्र पढ़ता जाय । इसे वरुण खुश होते है वर देते हैं । ऐसा करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है । यह काम सिद्ध पीठ पर । या गुरु के पास । या जंगल में या देवालय में [illegible] नानादि से निवृत्त

स्पष्टो भूर्ज सिते पत्रे विलिखेद्दल गंधकैः

सितेपत्रे
भोजे कागज
सफेदपर

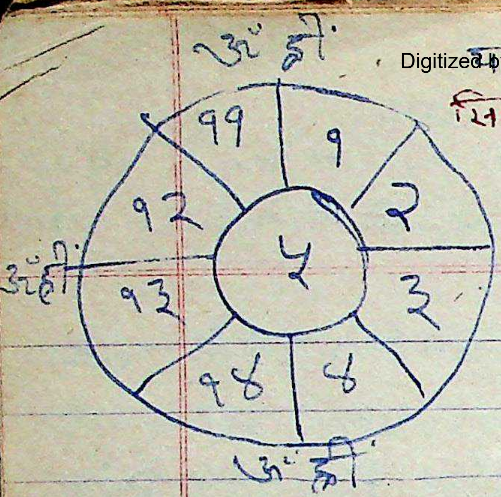
सफेद
सफेद भोजपत्र पर या कागज पर लिखे या पीपल के पत्ते पर लिखे। चमेली की कलम से लिखे

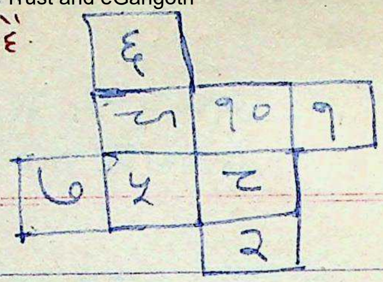
,पुष्पाशोभि भाव
८८।

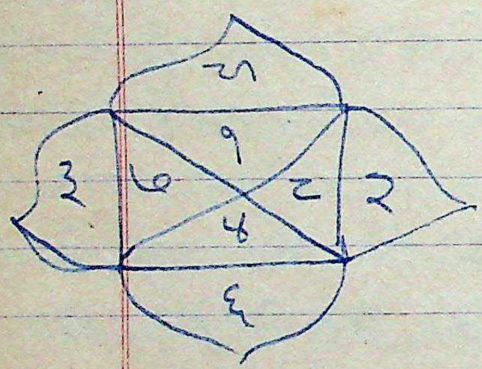
होकर कुशासन पर एक चित्त होकर बैठे गुरु का गणेश का शंकर जी का ध्यान नमस्कार प्रार्थना करके जाति की कलम से लिखे। सफेद भोज पत्र पर या कागज पर लिखे (ॐ ह्रीं ॐ) बोलता जाय। १०८ यंत्र लिख के धूप दे काले गूगल की। ~~महेश की~~ फिर सुगंधित तेल का दीपक धरे पश्चिम में। फिर कलश में वरुण का ध्यान करे। फिर उन १०८ मंत्रों को नाना प्रकार के पुष्पों से पूजन करे फिर १ हजार मंत्र जप हवन तर्पण मार्जन ब्राह्मण खिलावे।

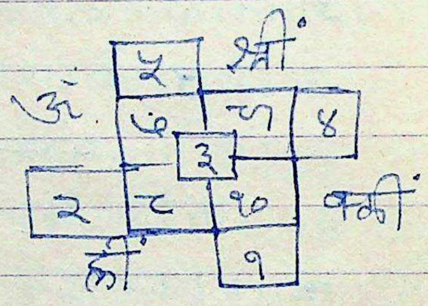
दूसरा प्रकार
यह क्रिया कर्म रात्री में किया जाय गा न ध्यान न पूजा न न्यास न भावना की जरुरत है केवल जप करले १ माला हवन फिर तर्पण मार्जन भोजन कराद सबेरे। और १०८ यंत्र लिख २ कर एकट्ठा करता जाय जिस दिन ८८ दिन पूरे हो देवीं जो विशां का हैं उनको यंत्र में पूजा करे। और फिर उन [illegible] को आटे में धर २ कर गोली बना २ कर मछली को १-१ करके खिलावे मंत्र बोलता जाय।
(ॐ ह्रीं ॐ) यदि ४० दिन का अनुष्ठान करे तो ३ हजार यंत्र रोज लिखे। ३० माला रोज करे मूलमंत्र की।

सिद्ध बीसा यन्त्र है


ॐ ह्रीं
११
१
२
१२
५
ॐ ह्रीं
१३
३
१४
४
ॐ ह्रीं


ॐ ह्रीं
६
१०
१
५
२


१
३
२
४
६


श्रीं
ॐ
५
४
३
२
१०
क्लीं
क्लीं
१

वशी करण का विधान

॥ विशांक के प्रयोग ॥

प्रयोग - ~~पवित्र आसन पर बैठ कर रो तीनो काल में जिसे वशी करण करना हो उसकी योजना बना कर जैसे ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अमुकम् मे वश्यम कुरु कुरु स्वाहा। इस तरह से योजना करे। फिर ५०० यंत्र बना कर जल में बहा दे। और १ बड़ी मछली जिन्दा लाकर एक घड़े में पाले उसी को यंत्र की गोली आटे से बना कर खिलावे हर गोली पर ॐ ह्रीं ॐ जपता रहे।~~ ~~या योजना (ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं। अमुकम् मे वश्यम कुरु कुरु स्वाहा) कहता जाय~~

॥ या यह मूल मंत्र जपे।

(ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अमुकं ~~मे~~ वश्यम मे वश्यम स्वाहा)

यह कहता जाय. यह विधान १ ही दिन होगा, बाद में मछली गंगा जी में छुड़वा दे।

प्रयोग दूसरा वशी करण - । कुम्हार के यहां से नया मिट्टी का सकोरा लावे यंत्र लिखे, अष्टगंध से। फिर उसे बांये पैर से उल्टा कर दे। फिर उसके पास बैठ कर १०८ बार मूल मंत्र (ॐ ह्रीं, श्रीं, क्लीं अमुकं मे वश्यं मे वश्यम स्वाहा शुद्धि से जप दे

आकर्षण मंत्र प्रयोग

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अमुकम् आकर्षय आकर्षय स्वाहा ॥
इस से चक्रवर्ती भी चला आवेगा। आधे पहर के अन्दर भूचर यक्ष राक्षस १ पहर में कुबेर भी आसन छोड़ के चले आवेंगे। बरुण भी आ जायेंगे। दिक्पाल विदिशा पाताल भी १ पहर में चले आवेंगे। देव कन्या यक्ष कन्या, अप्सरा मंडल भी यक्ष राक्षस पन्नग सब चले आवेंगे। जितनी देर में यंत्र लिखोगे। तुम नगर-गांव-बावड़ी कुंआ सागर सब आ जायेंगे जंगल के देव देवी सब आ जायेंगे। और के लिये क्या कहा जासकता है। आकर्षण वशीकरण के लिय एक ही विधि लागू होती है। विपरीत कार्य भी एक दिन में हो जाता है। अश्व गज सेना राजा सब लोग हैं। केवल १०८ बार जप दे १०८ यंत्र गोली बना के मछलो को खवावे जिस दिन आकर्षण वशीकरण करे तो खीर खाये यह सब इतने वश हो जायेंगे की यह सब दास बन जायेंगे। विष्णु तक को आना पड़ेगा।

उच्चाटन प्रयोग

मारण मे

यंत्र राजको लिख कर नीचे शत्रु का नाम लिख दे फिर
लपेटे
इस यंत्र को सूत से वेष्टित करे फिर शत्रु के नामको
योजना करके जपे। फिर अग्नि में तपावे तो ज्वर हो
यदि जला दे तो मरे। इन्द्र भी मर जाता है नर की क्या बात है। जैसे
मंत्र (ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं प्रामक ऽ कर्षयम ऽ कर्षयम स्वाहा) वैसे ही अमुकं उच्चाटय स्वाहा।

जब उच्चाट करना हो तो जिधर से हवा जाती हो उधर
मुंह करके काम करे
विद्वेषण में - राक्षस का फोटू सामने धर ले फिर
उस तरफ मुंह करके काम करे।
(किसी वस्तु की वृद्धी के लिये करे तो पूर्व में मुंह कर
ले इसके अलावा मारण मोहनादि करे तो ईशान
में मुख कर ले

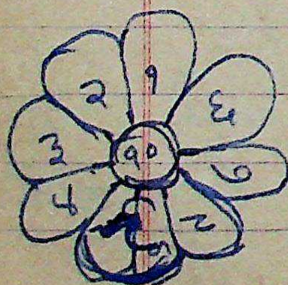
अमुक प्रयोग उच्चाटन का
धतूरे के रस में काली स्याही मिलावे उससे यंत्र
लिखे १०८ और शमशान में गाड़ दे। या हवा
में उड़ा दे शमशान में जाकर। या बहेड़े के
पेड़ में बांध दे फौरन उच्चाटन हो चाहे इन्द्र भी
रक्षा करते हों।

विद्वेषण प्रयोग

उल्लू के परवने से सकोरे में यंत्र लिखे और मंत्र मूल
१०८ वार पढ़े। दो यंत्र बनावे एक तो नौ कोष्ठ वाला यंत्र
एक गणेश यंत्र फिर दोनों सिकोरों को बांधे पैर
से उल्टा करदे। तो विद्वेषण होवे इससे देवताओं की
मैत्री नष्ट हो सकती है तो दुसरों का क्या कहना।
चाहे स्वर्ग पाताल मृत्युलोक में कहीं हो।

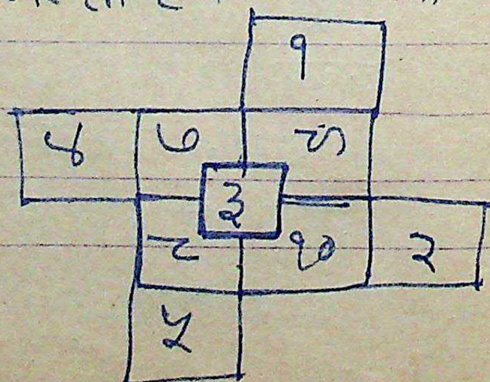
शान्ती करण प्रयोग

इस शान्ती कारक कार्य में यन्त्र तीन हजार। लिखे तीन हजार जप करे
इससे रोग शान्ती मन शान्ती क्रोध शान्ती दिशा शांन्ति
जेल से मुक्ती दरिद्रता निवारण होती है। तीनों
लोक का आक्रमण शान्ति होता है। जो निष्काम
जपता है उसे मुक्ती मिलती है। बीसांक

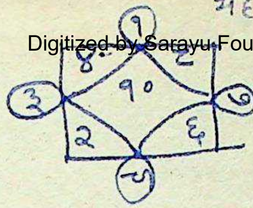


बीसांक



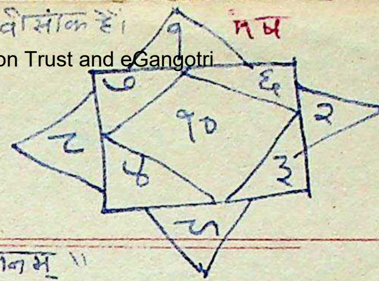


[illegible]	५	१०
[illegible]	[illegible]	४
[illegible]	[illegible]	६



मइसब बीसांक हैं।

मघ



तुला

४	७	९
९	३	८
७	१०	३

॥ षोडश प्रकार महेश्वरपूजनम् ॥

नवग्रह शान्ति का यन्त्र

पाद्य
अर्घ्य
स्नान
वस्त्र
चन्दन
पुष्प बिल्वपत्र माला
धूप
दीप
नैवेद्य
आचमन
पान
दक्षिणा
जनेऊ
आरती

२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

६	८	२	४
४	२	८	६
८	६	४	२
२	४	६	८

सूर्य

९	२	९
८	१०	२
३	८	९

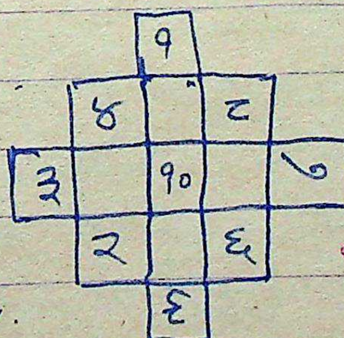
मेष

९	१	१०
५	८	७
३	११	६

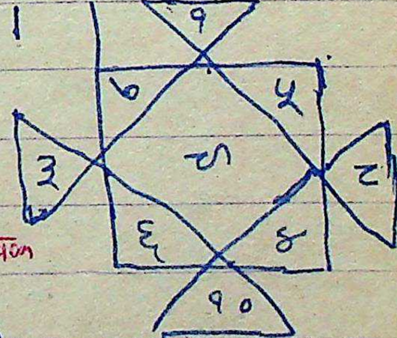
१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	९	२
७	४	५	४

४	२	८	६
६	८	२	४
२	४	६	८
८	६	४	२

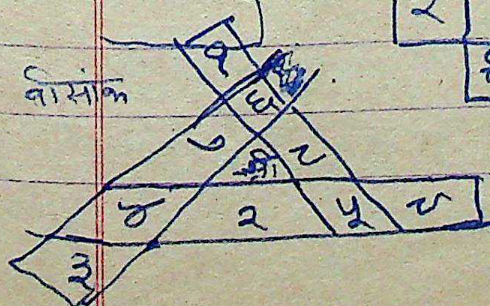
बीसा



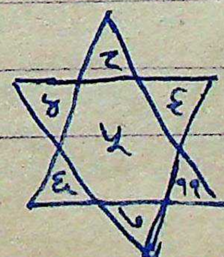
बीसा



बीसांक



वृश्चिक



प्राङ्-मुख मौन पूर्व
उदङ्-मुख मौन उत्तर

५६ क्रम लिपि वाला मुख में होगा

पन्द्रहियां यंत्र का प्रकरण।
अथास्य प्रयोगः

यह कोष्ठ भरने का क्रम एक महात्मा का है। नीचे जो बनाया है। ध्यान रखना

पूर्व

ईशान				आग्नेय
	८	१	६	
उत्तर	३	५	७	दक्षिण
	४	९	२	
वायव्य		पश्चिम		नैऋत्य

वरुण

जैसे पूर्व में एक है २ नैऋत्य में है ३ उत्तर में वायव्य में है। ७ है बीच में ५ है तो तुम इसी क्रम से भरो

(पहले शुरु में गब [illegible] भरे तो पहले १ उसके नीचे ५ उसके नीचे ९ फिर बांई तरफ शुरु में ८ नीचे ३ नीचे ४ फिर दाहिने हाथ की तरफ से शुरु करे पहले ६ नीचे ७ नीचे २ ऐसे कर भरे

शिव जी के कथनानुसार १-२-३-४-५-६-७-८-९ इस प्रकार कोष्ठ में देखके भरो जहां जो अंक है।

पुरश्चरण प्रयोग

अब शुरु करे सिद्ध करना तो चाहे (हस्त रविवार) चाहे (पुष्य रविवार) चाहे (मूल रवि) नक्षत्र (श्रवण या शुभ वार में सिद्ध पीठ पर या शमसान पर या देवालय में या अरण्य में कुशासन पर रक्तासन पर रक्त वस्त्र पहन कर और लाल चन्दन की माला पूर्व मुख या उत्तर मुख बैठ कर। पृथ्वी का मन्त्र कर आसन के नीचे जल डाले। फिर पृथ्वीति त्वया धृता लोका वाला मंत्र पढ़ कर आसन के ऊपर जल डाले आचमन प्राणायाम ध्यान करे फिर भूतलिपि मंत्र जप सर्व विघ्न के निवारण के लिये करे। यह भूत लिपि मंत्र है।

यंत्र नव [illegible] से शिवजी के कथना नुसार भर के तुम:
मद्रेश्वर जी का आवाहन करके सोलहो प्रकार से पूजन करे।
फिर इसके आगे बैठ कर १०८ मंत्र मूल मंत्र का जप ले। क्रम
फिर तुम आगे तीसरे पेज मे देखो लिखा होगा।

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः
कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं
नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ॥ इति लिपि॥

पश्चात् गूलर वृक्ष के पत्ते की [illegible] काठों से [या] और शान
वृक्ष यानी पीपल की कलम से या आक के पेड़ की गोंद
(यानी बांदा) [से] उसको गांठ से [दे] साख निकलती है [सो] उसको
पर कलम आठ अंगुल की [हो] [चौथ(?)] दूध वाले वृक्ष के कपड़े पर यानी
छाल पर या रेशमी कपड़े पर रोली से नवकोष्ठ
का यंत्र बनावे (ॐ मद्रेश्वर मद्र पूरय पूरय स्वाहा)
[पूजन करते फिर मूलमन्त्र पढ़ता]
इसी मूल मंत्र को पढ़ता जाय यंत्र बनाता जाय।
फिर इसी मंत्र से मद्रेश्वर देवता की षोडशो
प्रकार से पूजा करे। फिर न्यास करे सब

पंचदशी यन्त्रम्

वृश्चिक

१	८	६
५	३	७
९	४	२

कर्क ×

२	४	९
७	[illegible]	३
६	६	३

मेष

८	१	६
३	५	७
४	९	२

मेष

६	१	८
७	५	३
२	९	४

तुला

६	७	२
१	५	९
८	३	४

मेष

८	१	६
३	५	७
४	९	२

तुला

२	७	६
९	५	१
४	३	८

धन

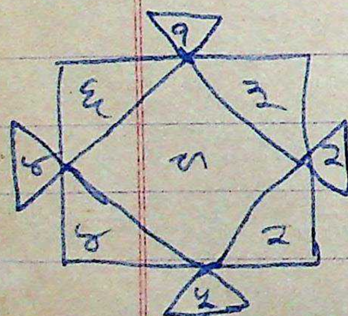
४	९	२
३	५	७
८	१	६

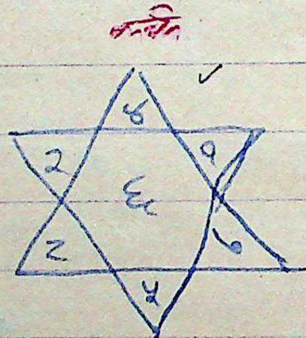
मि. या है तुला की

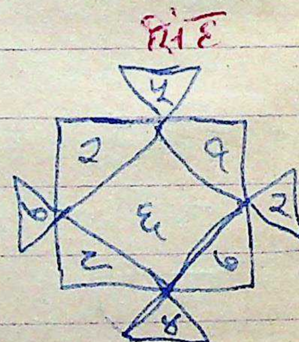
८	३	४
१	५	९
६	७	२

मि.

४	३	८
९	५	१
२	७	६







बीसा यन्त्र

१०	९	१२
८	१५	३
२	४	५

पुत्रोत्पत्ती यंत्रम् कमर में बांधे

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
।>	।>	।>	।>
>	>	>	>
<	<	<	<

रति काल में दाहिने जांघ में लाल डोरे से स्त्री को बांधना गर्भ धार जांघे

नव पूजा करने के बाद नैवद्य चुरमा गुड़ का सबको प्रदान करे।

१ अंक से ६ अंक तक क्रमशः पूजन

फिर जो कोष्ठ बना है उसमें नव दुर्गा शैलपुत्री से लेकर सिद्धदात्री तक पूजा करे। फिर उसी कोष्ठों में (१ अंक से) नवग्रहों की पूजा पंचोपचार से करे। फिर चौदहों इन्द्रो की पूजा पूर्व दिशा से करो (~~इन्द्र~~ (इन्द्रादि चतुर्दश इन्द्रेभ्यो नमः) इसी मंत्र से चौदहों इन्द्र की पूजा करे। (इन्द्रादि चतुर्दश इन्द्राणां सायुधां संपुजयेत) ओं चतुर्दश इन्द्राणां सायुधानि इहागच्छन्तु पूजयां) इससे पूजा चतुर्दश इन्द्राणां सायुधेभ्यो नमः

६२३	१स	८६
७सी	५यू	३७
२म	५८	४स

धरणी यन्त्र कमर में बांधने से गर्भपात न हो

इस क्रम से पूरक मंत्र के देवता हनुमान जी हैं।
के हिसाब से कोष्ठ
भरा जायेगा।

॥ प्राण प्रतिष्ठा ॥

॥ पंचदशी यन्त्रम् ॥

८	१	६
३	५	७
४	९	२

प्राण प्रतिष्ठा प्रयोगः- नवकोष्ठ में अंक भरने का क्रम
पूर्व १ नैऋत्ये २ सौम्ये यानी उत्तर में ३ वायव्य में ४ मध्य में
५ आग्नेय में ६ याम्ये यानी दक्षिण में ७ शैवे यानी ईशान में ८
वारुणे यानी पश्चिम में ९ ॥ फिर इस क्रम से कोष्ठ भर के।
(ॐ महेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा)। इस प्रकार महेश्वर मंत्र
का आवाहन करके षोडशोपचार से पूजन करे और ऐकाग्र
चित्त से ४०० मंत्र यानी ४ माला करले।

विनियोग

अस्य महेश्वर मंत्रस्य, स्वर्णाकर्षण भैरव ऋषिः। विराट्
छंदः। महेश्वरो देवता। ह्रीं बीजम्। भद्रं शक्तिः। पूरयेति
कीलकम्। महेश्वर प्रीतये जपे विनियोगः।

॥ऋष्यादि न्यासः॥

ॐ स्वर्णाकर्षण भैरवाय नमः (शिरसि) विराट् छंदसे नमः मुखे
महेश्वर देवतायै नमः (हृदि) ह्रीं बीजाय नमो (गुह्ये) भद्रं शक्तये
नमः (पादयोः) (पूरयेति कीलकाय नमः (नाभौ) विनियोगाय नमः
सर्वांगे। (॥ ~~हृदयादि षडंगन्यासः~~ ॥) (करन्यासः)

ॐ महेश्वर अंगुष्ठाभ्यां नमः) (भद्रं तर्जनीभ्यां नमः)

(पूरय मद्र मध्यमाभ्यां नमः) (भद्रेश्वर अनामिकाभ्यां नमः) (भद्रं कनिष्ठिकाभ्यां नमः) (पूरय करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः)

(हृदयादि षडंगन्यासः)

(ॐ भद्रेश्वर हृदयाय नमः) (भद्रं शिरसे स्वाहा) (पूरय शिखायै वषट्) (भद्रेश्वर कवचाय हुं) (भद्रं नेत्रत्रयाय वौषट्) (पूरय अस्त्राय फट्) = इस प्रकार न्यास करके फिर जप ४ माला करे इस मंत्र से (ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा) फिर एक से लेकर अंक तक क्रम से नव दुर्गा का आवाहन पूजन करे फिर उसी क्रम से नवग्रह का सूर्य से लेकर केतु तक आवाहन पूजन करे। फिर इन्द्र के वज्र का आवाहन पूजन करे। फिर मंत्र पढ़ने का तरीका इस तरह है। (ॐ शैलपुत्र्यै नमः) (ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः) (ॐ चंद्रघंटायै नमः) (ॐ कुष्मांडायै नमः) (ॐ स्कन्दमातायै नमः) (ॐ कात्यायन्यै नमः) (ॐ कालरात्र्यै नमः) (ॐ महागौर्यै नमः) (ॐ सिद्धिदात्र्यै नमः) इसी तरह नवग्रहों का मंत्र बोल कर आवाहन पूजन नमस्ते करे। (ॐ आदित्याय नमः) (ॐ चन्द्रमसे नमः) (ॐ भौमाय नमः) (ॐ बुधाय नमः) (ॐ जीवाय नमः) (ॐ शुक्राय नमः) (ॐ शनैश्चराय नमः) (ॐ राहवे नमः) (ॐ केतवे नमः) फिर (ॐ इन्द्राय नमः) (ॐ अग्नये नमः) (ॐ यमाय नमः) (ॐ नैऋत्ये नमः) (ॐ वरुणाय नमः) (ॐ वायवे नमः) (ॐ कुबेराय नमः) (ॐ ईशानाय नमः) (ॐ ब्रह्मणे नमः)

(ॐ अनन्ताय नमः) फिर इन्द्र के आयुधों का मंत्र (ॐ वज्राय नमः) (ॐ शक्तये नमः (ॐ दण्डाय नमः) (ॐ खड्गाय नमः) (ॐ ...), ... पाशाय, त्रिशूलाय, ॐ पद्माय, चक्राय, ॐ महेश्वराय नमः) इस प्रकार मंत्र बोलकर सब को आवाहन पूजन नमस्कार करे गुड़ के चूरमा का सबको भोग लगावे। काली गूगल का धूप दे। चमेली का का और घी का दीपक दिखावे। फिर प्रणाम करके १०८ बार महेश्वर जी का मंत्र जपले। फिर १५ हजार जप सब कुल करले नियम से लिखे

विघ्न मैं (घरर शब्द होगा) (कभी तालबाजन की आवाज होगी) (कभी गन्धर्व की स्त्रियों का गाना) (कहीं नाच सुनाई पड़ेगा) कहीं दिखाई देगा) (गुरु का दर्शन होने लगेगा) (माता पिता दिखाई देंगे) (सर्प सिंह मृगा बाघ भी दिखेंगे (शरीर को गांठ दुखेंगी) (कभी रोने की आवाज सुनाई देगी) (कभी घर जल जाने की सम्भावना होगी) (पर्वत उड़ते गिरते दिखेंगे) (कभी उड़ते गिरते दिखेंगे) (कभी बिजली तड़केगी) (जलमई पृथ्वी दिखेगी) (कहीं विमान उड़ते दिखेंगे) (कभी भूत प्रेत दिखेंगे) इन विघ्नों से न डरे तो वह जीव साक्षात ब्रह्मस्वरूप हो जायेगा।

जब १५ हजार मन्त्र लिख लेवें तो फिर उसका पूजन करके उन मन्त्रों के सामने १५ हजार जप कर ले, फिर दशांश हवन तर्पण मार्जन, ब्राह्मण भोजन कराद हवन लाल कनेर के फूल से घी में डुबा के हवन करना चाहिये। ~~[illegible]~~
कलयुग में चौगुना लिखे चौगुना जपे।

सब कुल — फिर

~~इसी प्रकार~~ १५ हजार यंत्र लिखे। १०८ बार मृत्युंजय मंत्र जप पहले करले। उसी (कमल की) कलम से लिखे। जब १५ हजार यंत्र लिख जाय तो १५ हजार मृत्युंजय मंत्र जपे। दशांश हवन १५०० हुआ। १५०० लाल कनेर के फूल से घी लगाकर हवन करे। फिर तर्पण, मार्जन, भोजन पश्चात, सोना, चांदी, तांबा के ताबिज में भरे कंठ में या गले में पहने साधक फिर प्रयोग करे॥

बृहस्पति के दिन लिख बांधे तो उत्तम है।

~~तीसरा प्रकार~~

ॐ नमः सिद्धि ...

शंकर मातु शंकर पितु

४०	४२	४	५
१	३	४८	४३
४६	४७	५	४
२	७	४७	४४

करै बरन लक्ष्मी पति — पापी के जाई दीप — ॐ शंकरस्य ...

पुत्र सिद्धि

शुभ दिन व शुभ नक्षत्र मे गोरोचन से श्वेत भोजपत्र पर लिखकर चांदी या सोने के पत्र मे भरके गले में धारण करें तो पुत्र ही होवेगा

प्रयोग विधि

प्रयोग करे तो

प्रयोग | यदि ब्राह्मण के ऊपर शुक्र गुरुवार के दिन प्रयोग करे। क्षत्रीपर रविवार को मंगलवार को, प्रयोग करे वैश्य के ऊपर सोमवार को, शूद्रपर बुध को

मुसलमान पर शनिवार को। राजा पर हस्तरवि या पुष्य रवि, श्रवण नक्षत्र या मुल हो व्यतिपात योग न रहे।

कार्य के अनुकूल दीप रखना | राजा के वश के लिये धन प्राप्ती के लिये दीपक घी का उत्तर मुख रखवे। उच्चाटन मारण में दीप दक्षिण में रखवे। वशीकरण और धन के लिये घी का दीपक रखवे और सरसो का तेल उच्चाटन मारण में रखवे।

ब्राह्मण के प्रयोग में भोज पत्र पर यंत्र लिखे क्षत्री के प्रयोग में ताड़ के पत्ते पर यंत्र लिखे वैश्य के लिये कागज पर यंत्र लिखे शुद्र के लिये भूमी पर यंत्र लिखे।

मुसलमान के लिये कागज पर

वशी॰ आ॰कर्षण॰ एक ही है॰

(कलम विवरण)

कलम विवरण॥

~~वैश्य को~~ चाहिये शान्ति कर्म में वशीकरण में पीपल की कलम से लिखे।

मोहन के वास्ते सोने की कलम से लिखे

आकर्षण के वास्ते चांदी की कलम से या वट वृक्ष या पीपल की कलम से लिखे

मोहन के वास्ते कौवे के पंख से लिखे

स्तम्भन के लिये हल्दी की कलम से लिखे या तांबे की कलम से लिखे।

मदार की से उच्चाटन विद्वेषण या में लोहे की कलम से लिखे।

यह कलम प्रमाण आठ अंगुल की होनी चाहिये मारण में नीम की कलम

चन्दन वर्णन

वशीकरण में लाल चन्दन से लिखना

~~सोना~~ चाहिये तो कस्तूरी के चन्दन से

स्तम्भन में हल्दी से

देव दर्शन वास्ते केसर से

मारण वास्ते काले धतूरे के रस से

उच्चाटन में शत्रु के मुर्दे के कोयले की स्याही

विद्वेषण में बहेड़ा के रस से

शान्ती कर्म से मलियागिरि चन्दन से

लकड़ी कैसी हो किस काम के लिये

आकर्षण में और वशीकरण में बट या पीपल की हो। क्रूर कार्यों में मदार की। मारण में नीम की समिधा हो

चन्द्रहियां यंत्र शुरु करे तब रवि पुष्य में या किसी सिद्ध योग में करे। २१ रोज ५००) यंत्र रोज लिखे यदि सात दिन में खतम करना हो तो ८०० रोज लिखे। दहिने से लिखे बांये से मिटावे

अंक भरने का नियम किस काम में कैसे कहां से अंक शुरु होगा देखो

१ अंक जो कोष्ठ में है उसके देवता हनुमान है फिर उसको एक अंक से यदि कुल यन्त्र भरा जायेगा हनुमान जी का दर्शन होगा।

दूसरे अंक से कोष्ठ यदि भरना शुरु करोगे तो राजा वश हो जायेगा।

तीसरे अंक से शुरु करोगे भरना कोष्ठ तो व्यापार का लाभ होगा।

४ से शुरु करोगे तो शत्रु का मारण होगा।

५ अंक से शुरु करोगे तो उच्चाटन होगा।

(८ अंक से शुरु करो फिर[१] ७ - ६ - १ - २ - ४ - ३ - ५ - ८ (यह क्रम मारण का है लिखने का

शुरु

१	८	६
५	३	७
९	४	२

पहला कोष्ठ जो है उसमें जहां १ अंक है सो तुम मारण में पहले कोष्ठ में ८ लिखो इसी क्रम में भरना होगा

राजवशीकरण मे। पहले २ - ३ - ४ - ५ - ६ - ७ - ८ - ९ - १ इस क्रम से भरो। फिर नर कपाल में धरो यंत्र के पीछे राजा का नाम लिख देना। कपाल रख देना छिपा कर।

३ - २ - ८ - ५ - ४ - ९ - १ - ६ - ७ - इस क्रम से जब भरा जायेगा तो बन्ध्या स्त्री के पुत्र होगा या किसी मादा नर हो, मानुष हो बालक होगा। मृतवत्सा के बांधोगे तो बच्चा नहीं मरेगा जल्दी

४ - ३ - ८ - १ - ५ - ९ - २ - ७ - ६ - इस क्रम से लिखने से कैदी छूट जाता है।

५ - ६ - ७ - २ - ९ - ४ - ३ - ८ - १ - इस क्रम से लिखने से धन घर में आवे बिना कष्ट के पर रोज १०८ यंत्र लिख के, आटे मे गोली बना के मछली को खिलावे तब।

६ - ७ - २ - ९ - ४ - ३ - ८ - १ - ५ इस क्रम से चाहे मित्र हो दुशमन हो राजा हो, आकर्षण होता है।

७ - ८ - ९ - ४ - ५ - ६ - १ - २ - ३ इस क्रम से उच्चाट हो जाता है।

१ - २ - ३ - ४ - ५ - ६ - १ - २ - ३

इस क्रम से यंत्र लिखें तो उच्चाटन होवे यह होवा (भूल से लिख लिख गया है।

१० यंत्र लिखने से मोहन। २० यंत्र आकर्षण में ३० यंत्र विजय वास्ते। दस हजार कैद से छुड़ाने वास्ते राज्य हाथ से निकल गया हो तो २० हजार लिखे। ४० हजार लिखे तो शाप छुड़ाने में सामर्थ्य शाप देने में सामर्थ हो जाता है। ५० हजार लिखने से वाक्य सिद्धि होती है। ६० हजार लिखने से राजा को वश करें। ७० हजार लिखने से विष्णु होवे ८० हजार लिखने से उसके सब कर्म सिद्ध होवे। ९० हजार लिखने से शिव बन सकता है

इच्छाकुरुश राजा — लाख लिखने से शिव तुल्य होवे। ~~सेनाना जो~~ १०० या ५० यंत्र लिखे तो उसे सिद्धी होती है।

लाख यंत्र शुभ जगह शुभ महुर्त शुभ नक्षत्र वार में

भूमि पे — लिखे भूमि में सोवे ब्रह्मचर्य रखे हवन रोज सरसों घी चावल सकर से फिर हवन करे

तो वाक्य सिद्धि होवे वह मनुष्य देव रूप हो जायेगा। सब पाप दुख दरिद्र से छूट जायेगा। १०० वर्ष तक जीता है। जिसे चाहे देख सकता है।

यदि भोज पत्र पर हल्दी रोली गुगुल की स्याही से लिखे, पूजा करदे, जल में डाल दे। स्वप्न में देवी उसे वर देती है जीवन मुक्त बना देती है। सर्व काम पूरे हों कहती है वह देवी।

यह यंत्र देवता ओं का दिया हुआ है १ लाख जप करने से किसी राक्षस पिशाच यक्ष योनी को बुला कर काम ले सकते या पृद्द कलुवा ७२ बीर को जो बात है उन्हें बुलाकर। दूध काला उरद काला तिल सक्कर घी इसको प्याले में रख के कुल ॥ पक्ष को, जुम्मे को बुध, बृहस्पत सोमबार इन दिनों मे बुला के बलि दे। तो सब बीर बश होवें। फिर जो चाहो कराओ।

एक ही यंत्र लिख कर दे दो से किसी का भी कार्य हो जायेगा

यदि एक लारव यन्त्र

रं बीज अग्नी का उच्चारण करता हुआ यंत्र लिखे उसे (रं) के कहते रजला दे तो जहां रहे सब मान करते हैं

दूसरा रं बीज को जपता हुआ पहले यंत्र लिखे फिर पूजा करके एक गड्ढे में डाल का मिट्टी से ढांक दे रं बोल कर तो सो पृथ्वी का राजा हो जाता है आठों सिद्धियां उसके हाथ में आ जाती हैं।

महीने के कपड़े में यंत्र लिखके दाहिने हाथ में बांधे

जिस पुरुष को लुं बीज को बोलता हुआ बांधे लिखे तो फांसी की जंजीर से छूट जाय। बांये हाथ से लुं बीज १०८ जपे।

रविवार को मदार के दूध से और शमसान के कोयले की स्याही बना कर कागज पर यह यंत्र लिख को चिता अग्नि में डाल दे तो पागल होवे १०८ बार डालने के बाद महेश्वर मंत्र जप दे जिसको पागल करना हो यंत्र के पीछे नाम लिख दे।

यदि पंच दशी यंत्र उलटा लिखे संध्या समय लिखे फिर पूजा करके कंठ में पहन ले और जिसे वश करना हो उसका नाम उस यंत्र के पीछे लिख दे तब स्वयं बांधे।

मनुष्य वश — सोमवार के दिन नागकेशर हल्दी पीली सरसों का तेल मिला के यन्त्र लिखे बत्ती मंत्र पढ़ते हुऐ बना कर तेल में डाले तेल ऊपर जो लिखा है वही डाले खोपड़ी में का जलधार उले आंख में लगाने से मनुष्य मोहित हो जाता है।

स्त्री वश — शुक्र के दिन। कपूर वच कूट की स्याही से यंत्र को भोजपत्र पर लिखे और पहने बांधे तो स्त्री प्राण धन सब दे देती है।

मारण — शनि दिन। चिता के कोयले की स्याही बनावे उससे उल्टा पंचदशी यंत्र कागज पर लिखे नीचे शत्रु का नाम लिख के गाड़ दे तो मरे

दूसरा मारण प्रयोग — यदि मुर्गे की आंख के खून से यंत्र उल्टा लिख कर समसान में गाड़ दे तो भी मरे

यदि बरगद के नीचे जमीन पर यंत्र बरगद की कलम से लिखे चौदस को लिखो तो १०८ बार तो अर्थ धर्म काम मोक्ष मिले

दूसरा प्रकार

बरगद के नीचे
या जनार की कलम से १ हजार यंत्र लिखे तो कैदी छूटे। यदि पीपल की कलम से ५०० यंत्र लाल चन्दन से कागज पर लिख के पूजा कर के जमीन में गाड़ दे तो सर्व काम हो।

गाय के मूत मैनसिल कपूर तगर से भोजपत्र पर १ हजार लिखे पीपल के नीचे बैठ कर पीपल की कलम से तो जो चाहे हो इन्द्र समान धन होवे।

भोजपत्र पर
मैनसिल बेल के रस हरताल की स्याही से यंत्र लिखे बेल की कलम से २ हजार एकान्त में लिख जमीन में वहीं गाड़ दे वाक्य सिद्धि हो मदार के पत्ते के रस से मदार के पत्ते पर यंत्र १ हजार जा० यंत्र दुशमन के नाम से लिखे और मदार वृक्ष में बांधे तो शत्रु को ज्वर हो शूल के समान पीड़ा होवे।

यदि हल्दी से यंत्र लिखे १०८ बार भोज पत्र पर
और दो पत्थर के बीच में दबा दे तो स्तम्भन होवे
शत्रु का | ~~यदि~~ शत्रु के द्वार पर गाड़ दे वो उखाड़े
तो उसके घर कलह हो।
यदि लटजीरों के रस से भोज पत्र पे यंत्र लिखे
पूजन करके रोगी के गले में बांध दे तो सब ज्वर
छूटे।
भृंगराज के रस से भोजपत्र पर लिखके पूजन
करके गले में बांधे जो वह विवाद में जीते।

विषम अंका महात्म

८वें कोष्ठ को ~~भरे~~ पहले भरे। दूसरे में ७वें छठे
५वें १में चौथे तीसरे ।ऽ।८वें को भरे
शुभ दिन में व्रत करके इसे लिखना शुरू करे दस हजार
या ५००० हजार ढाई हजार अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखे तो
२१ दिन में काम होवे। कलम चन्दन की॥ पहले जो लिखी है
नहीं हो॥

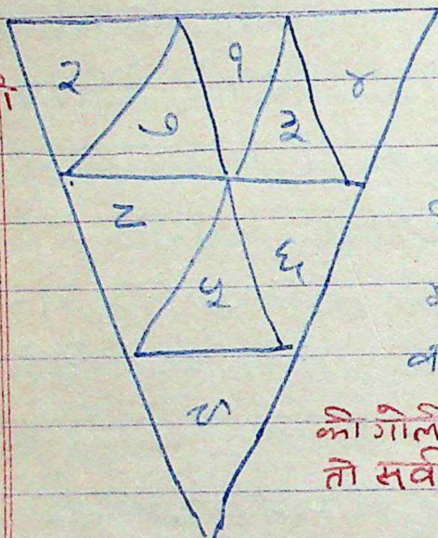
---

१ हजार गल्ले यंत्र जमीन पर लिखे फिर मिटा दे तो
वह मुल्जिम केद से छूटे।

	ह्रींआदि स्थापनम् १	

"त्रिकोणयंत्रम्"

पंचदशी यंत्र ये भी है।



इसमें पहले २ लिखो फिर ७-१-२-४-८-५-६-९ इस क्रम से १५ हजार लिखे और आटे में भर कर यंत्र मछली को खिलादे। या जल में बहादे तो सिद्धि होवे। यदि आटे की गोली यंत्रों को बना कर मछली को खवादे तो सर्व सिद्धियां प्राप्त होवें।

ग्रह शान्तियंत्र

पंचदशी यंत्र यह भी है।

८	ह्रींआदि स्था.	६
३	५	७
४	९	२

पहले १ से शुरू करे फिर २-३-४-५-६-७-८-९। चन्द्र दुष्ट में ऐसे पहले २-३-४-५-६-७-८-९-

यदि सूर्य की दशा या गोचर खराब हो तो १ से शुरू करे। चंद्र दुष्ट हों तो २ से। मंगल दुष्ट हों तो ३ से बुध दुष्ट हो तो ४ से। गुरु दुष्ट हो तो ५ से। शुक्र दुष्ट हो तो ६ से। शनि दुष्ट हो तो ७ से। राहु दुष्ट हो तो ८ से। केतु दुष्ट हों तो ९ से क्रम भरो कोष्ठमें

जो गृह जातक का खराब चल रहा हो उस अंक में ह्रीं जरूर शुरू करते समय लगा दो। मंत्र क्रम (ॐ ह्रीं आदित्याय नमः) (ॐ ह्रीं चन्द्रमसे नमः) इसी प्रकार सब गृहों के मंत्र बना कर आवाहन पूजन करो।

पीपल के पत्ते पर या छितवन के पत्ते पर १ यंत्र लिखकर पीपल के नीचे गाड़ दो २१ दिन तक तो गृह सभी शान्ति हो जाते है। यंत्र को पूर्व से लिख कर पश्चिम में समाप्त करे तो यंत्र सतोगुणी हो यदि दक्षिण से शुरु करके उत्तर में समाप्त करते हैं तो वायु यंत्र (राजस गुण का) हो जायेगा यदि पश्चिम से पूर्व में समाप्त करोगे तो विलोम यंत्र हो जायेगा। यह तामस होजायेगा।

एक बात का ध्यान रखना वार संख्या का क्रम रविवार से शुरु होता है तो यदि शुक्र की दशा खराब चल रही हो तो तुम ६ संख्या पंचदशी के नवकोष्ठ में जहां हो वहां (ह्रीं) बीज लिख देना। इसी में शुक्र भगवान का आवाहन करना ६ संख्या शुक्र की समझो। फिर उन्हीं का पूजन करो।

यह सब पचदशा यंत्र हैं।

मारण

ग्रह शान्ति यंत्र

इस प्रकार यंत्र तब बनता है जब सूर्य खराब चलते हैं।

मेष ✓

८	१ श्री ह्री	६
३	५	७
४	९	२

मेष ✓

८	१	६
३	५	७
४	९	२

मेष ✓

६	१	८
७	५	३
२	९	४

वृष ✓

२	९	४
७	५	३
६	१	८

[illegible] ✓

४	९	२
३	५	७
८	१	६

मिथुन ✓

४	३	८
९	५	१
२	७	६

मिथुन ✓

८	३	४
१	५	९
६	७	२

तुला ✓

६	७	२
१	५	९
८	३	४

शु. तुला ✓

२	७	६
९	५	१
४	३	८

बहत्तर यंत्र

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०	नाम	४२

प्रयोग कागज पर लिख के पीछे लिखे ७२ टके चलन बाजार द्रव्य पीछे यंत्र के लिख दो आसन के नीचे रख वार है कामिश्वरी का मंत्र ७२ दफे जपदे तो ७२ टके रोज आ जायेंगे। बताव नहीं।

१ अंक से भरना शुरू करोगे तो हनुमान जी का दर्शन ।। (२ अंक से शुरू होगा तो राजा वश होगा । तीसरे से व्यापार ४ से मारण । ८ अंक से मारण

इस बहत्तरवें यंत्र लिखने की चाल इस प्रकार है आम के पटरे पर अनार की कलम से रोली से लिखे । शुरू में ६-१२-१८ फिर २४-३०-३६ फिर ४२-४८

६	४२	२४
१२	४८	३०
१८	नाम	३६

बहत्तरयां यंत्र

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०	नाम	४२

इस प्रकार लिखो यंत्र तो बना है उसे देख लो जो अंक जहां पर हो वहीं रखना जायेगा केवल क्रम यह है यंत्र लिखते समय यह मंत्र पढ़ते जाओ (ॐ श्वेनाधाय नमः ।। इस यंत्र को शिव के पूजन करके ७२ बार सामने बैठ कर जप दे फिर (ॐ नमः कामदेवाय महाप्रभावाय ह्रीं कामेश्वरि स्वाहा यह पढ़ कर यंत्र पटरे का मिटा दे) ऐसे चौबिस यंत्र बनावें रोज और इस कामेश्वरि मंत्र को २१ सौ बार जप दे इस प्रकार (२१) दिन करे । जौ की रोटी बथुवा अलूना साग भोजन करे जमीन पर सोवे ब्रह्मचर्य रहे मौन रहे । २१ दिन बाद दशांश हवन तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन करावे यंत्र सिद्ध हो जायेगा ।

जब पहेले दिन जब टके आवें तो यंत्र को उठा कर पाग डो में रखले दूसरे दिन गेहू के आटे को घी शक्कर के साथ गोली बना कर नदी में बहावे तो रोज खर्च वास्ते रुपया आवेगा।

बत्तीसा यंत्र   यह बगला मुखी का यंत्र है।

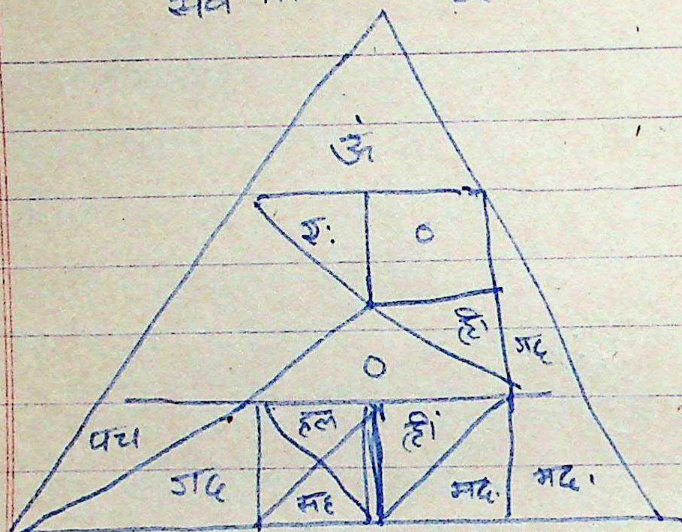
८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	७	८	१
४	५	१०	१३

इस यंत्र को हल्दी से कागज़ पर लिख के नीचे अपना कार्य लिखदे। फिर पूजन करके रुई के साथ बत्ती बनाके इतवार को तेल डाल के दीपक में यह बत्ती डालकर दीपक जलावे। हल्दी की माला से इस मंत्र को ११ सौ जपे (ॐ ह्लीं हंस:) ऐसा सात इतवार करने से मनुष्य सब दुख से मुक्त होवेगा

इसका दूसरा विधान यह है इतवार को प्रात:स्नान

करके कांसे की थाली में हल्दी से यंत्र लिखे उसके ऊपर फूलबत्ती बनाकर चौमुख दीपक स्थापन करे पंचोपचार से पुजन करके हाथ में थाली उठाले और सूर्य के सन्मुख खड़ा होके (ॐ ह्रीं हंसः) इस मंत्र को दिनभर सूर्यास्त तक जपे जिधर २ सूरज घुमे थाली लेकर साधक घुमता रहे मंत्र पढ़ना बन्द न करे जब सूर्य अस्त होने लगे तो अर्घ दे। मीठा भोजन करे। जमीन पर सोवे ब्रह्मचर्य रहे। इस प्रकार सात रविवार करे तो चाहे जितना कठिन काम हो पुरा होवे काम तो पहले ही होजायेगा पर सात इतवार करना होगा।

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र



इसे भोज पत्र पर अष्ट गंध से लिख के पूजा करके सोना चांदी तांबा मिले ताबीज़ में मढ़ा कर गले में बांध दे

हनुमान यन्त्रम्

नं०	ढं०	अं०	घं०
दं०	दं०	चं०	चं०
जं०	ढं०	जं०	वं०
ढं०	भं०	गं०	हं०

इसे कागज पर लाल चन्दन से सवा लाख लिखे और जल में बहा दे या आटे चीनी घी में इन यंत्रों को गोली बना के मछली को खिला दे। उस पर श्री हनुमान जी प्रसन्न हो जाते हैं॥

आपद उद्धारक बटुकयन्त्रम्॥

ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणं कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं

ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणं कुरु कुरु बटुकाय

ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणं कुरु कुरु बटुकाय

नाम
जिसे देना हो

ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणं कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं

इसे भोज पत्र लिख के सोना चांदी तांबा सब मिला के ~~ताबीज~~ ताबीज में पूजन करके भर कर पहना दे। सब दुःख दूर जाते हैं।

इच्छा प्राप्ति कारक यंत्रम्

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

लाल चन्दन से बेलपत्र पर १०८ लिख के सावन में ३० दिन शिव लिंग पर चढ़ावे तो शिवजी प्रसन्न होवें धन सम्पत्ति दें।

वृद्धि यन्त्रम्

बिक्री बढ़े

यं	ॐ	ठं
ह्रीं	देहि	श्रीं
कं	नमः	ह्रीं

दिवाली की रात को लिखके रुपया या धन में धरदे पूजा धूप देदे तब रखे

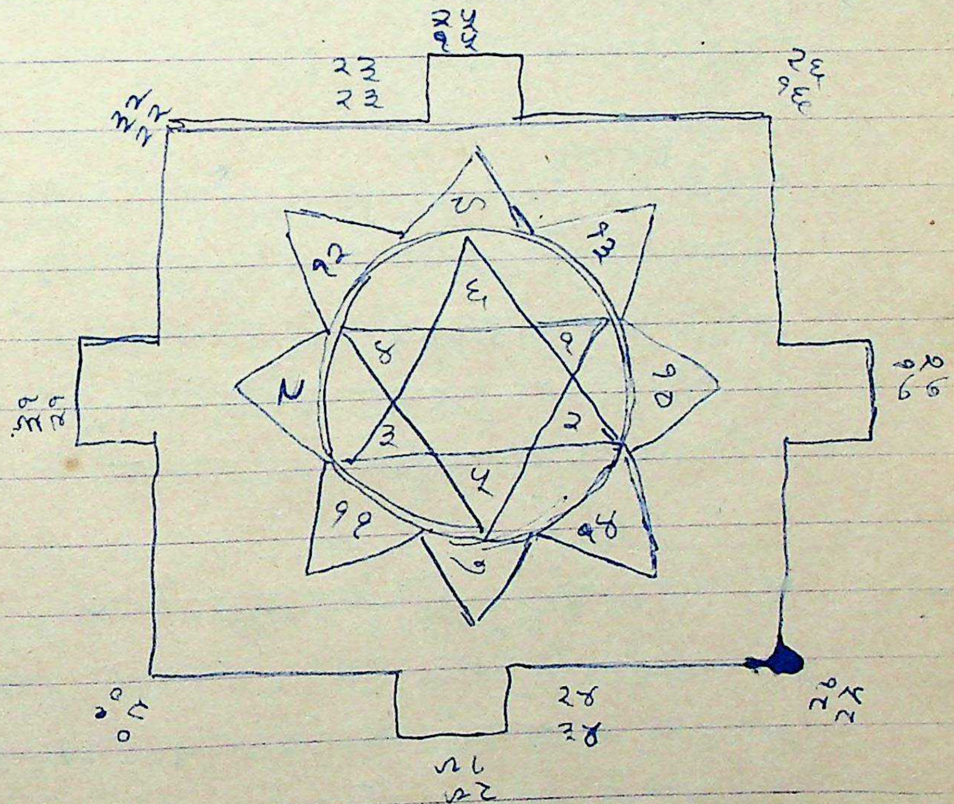
राजकोप निवारक यंत्रम्।।

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	नाम		ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

इसे भोज पत्र पर गोरोचन केसर लाल चन्दन अनामिका का खून मिला कर लिखे फिर अनेक प्रकार से पूजन करके मांस द्वारा पूजन करके कन्या खिलावे ब्राह्मण खिलावे योगनियों को नमस्कार करे

फिर कचहरी मुट्ठी में दाबकर जावे तत्काल राजकोप शान्त हो जावेगा।

नृसिंह पूजन यन्त्र



"पंचदशी के कुछ प्रयोग"

पंच दशी के अचूक प्रयोग

(१) चैत्र मास में जब पुष्य नक्षत्र हो उस रोज प्रात काल कोरे घड़े के खपरे के बीच में पीपल की कलम से केसर की स्याही से यन्त्र लिख कर और उसमें गंगा जल भर कर किसी पेड़ में लटका दे दूसरे दिन प्रात काल उस खपरे के जल को एक शीशी में भर कर पक्की डांट लगा के रख दो फिर उस जल को साल भर के भीतर किसी के भाग्यवान घर में बालक हो तो उसको जन्म में, नाल काटकर नहला कर एक बूंद डाल दो तो उस बालक को जितने पंछी ने पानी पिया होगा उतने पंछी की बोली आ जायेगी। उतनी भाषाओं का जानकार हो जायेगा।

(२) इस यंत्र को आंवले की कलम से और हल्दी की स्याही से शुभ दिन में भोज पत्र पर लिख कर पूजन करके अष्टधातु के या सोने के ताबिज में रखकर हस्त नक्षत्र में उस स्त्री के बांये हाथ में या कमर में बांध दो जिसका गर्भ नष्ट हो जाता हो। परन्तु जब यंत्र बांधो तो यह ध्यान रहे कि उस स्त्री की राशी से चन्द्र पांचवे नवे हो तीसरे ग्यारहवें हो। तो गर्भ रक्षा होगी।

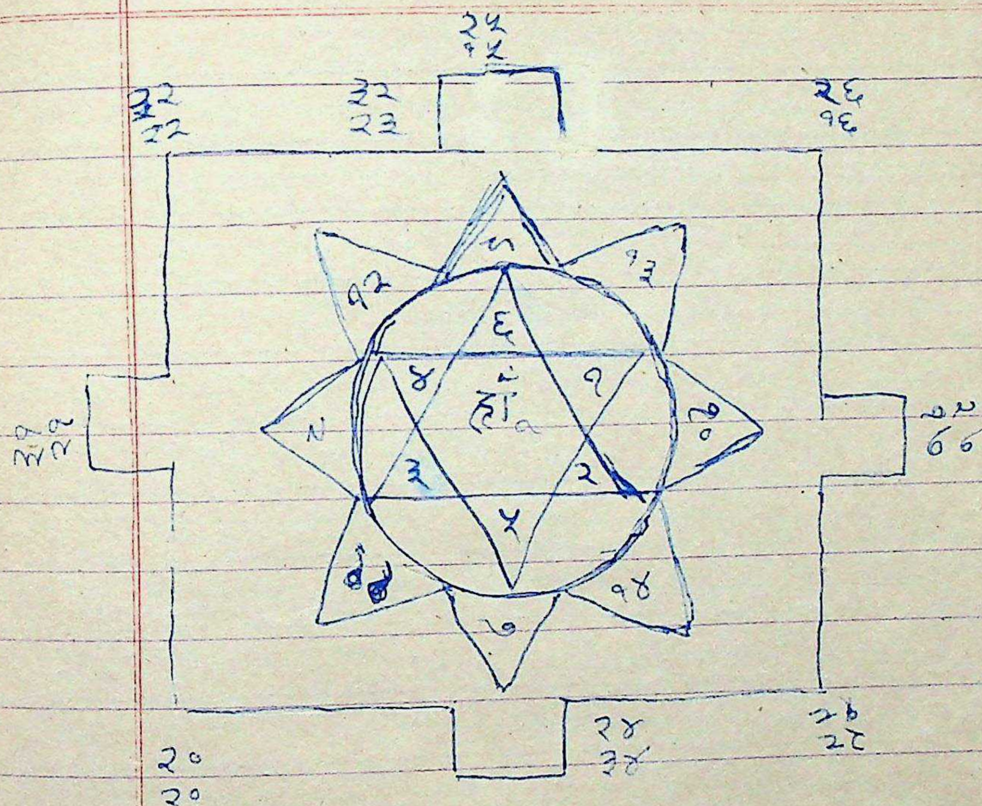
(३) इस यन्त्र को बेल के हरे पत्ते पर बेल की कलम से हस्त नक्षत्र में लिख कर सिंदुर की स्याही से लिख कर पूजन करके सोने या ताम्र धातु की ताबीज में रख कर पीले रेशम के डोरे से बांध कर बांह में बांध दे जिसे खूब घाटा लगा हो। व्यापार में।

(४) इस यन्त्र को शमीवृक्ष की यानी छेकुरे की कलम से गोरोचन और केशर की स्याही से केले के पत्ते पर लिख कर लाल कपड़े में बांध के दाहिनी भुजा पर पूजन करके बांध दो। जिसे मुकदमा जीतने की इच्छा हो।

(५) इस यंत्र को भोज पत्र पर हल्दी केसर की स्याही से कुश की कलम से लिख कर पूजन करके तांबे के ताबीज में भर के सफेद डोरे से बांध कर भुजा में बांध दो जो यात्रा से सकुशल लौटकर आना चाहता हो।

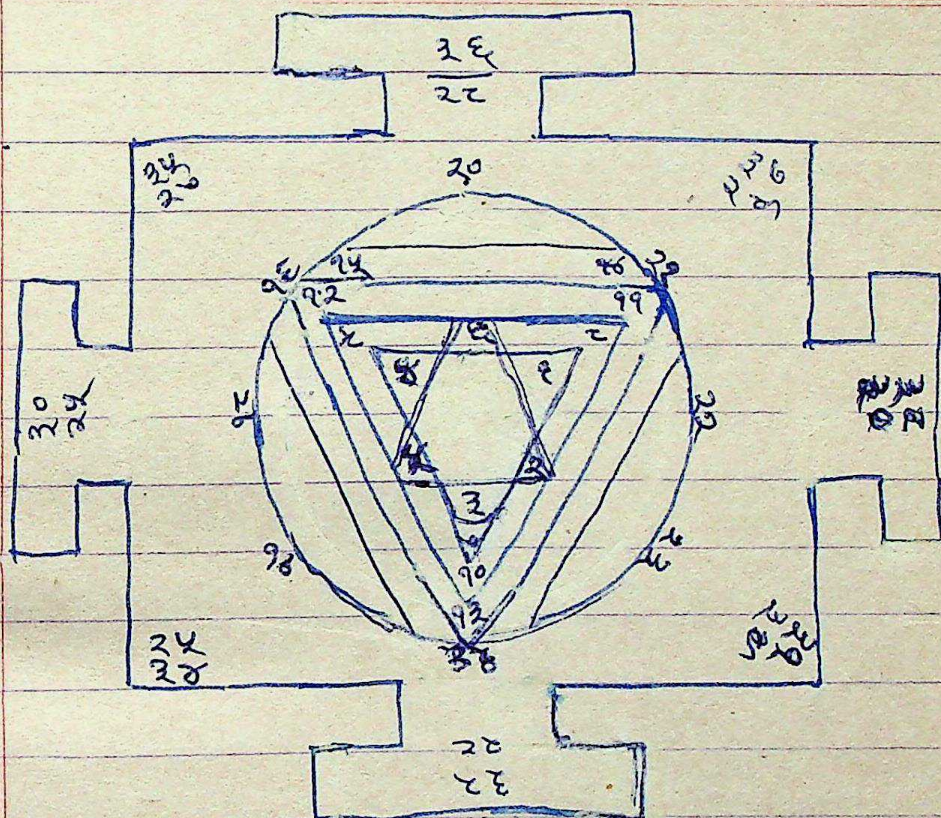
(६) चम्पा की कलम से केशर की स्याही से भोज पत्र पर पुष्यार्क या हस्तार्क या गुरुपुष्य हो उस दिन पूजन करके गुगुल धूप देके उसको बांध दो जिसे अनुकूल रखना हो। (मूल मंत्र (ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा) इस मंत्र को हमेशा जब पंचदशी यंत्र बनाओ पढ़ते जाओ।

हयग्रीव पूजनयंत्र



पूजन

दक्षिणकाली यंत्रम्





॥ दक्षिण काली मंत्र प्रयोगः ॥

अथ दक्षिण कालीमंत्र भेदः मंत्रमहोदधौ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिण कालीके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं इत्येकाविंशत्यक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानं - बिल्वमूले शवारुढो वटमूले तथैव च ॥ लक्षं मनुमिमं जप्त्वा सर्व ~~सिद्धेश्वरो~~ सिद्धीश्वरो भवेत ॥२॥ अन्यस्तु - (क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा) अन्यत (ॐ हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा)॥ अन्यश्च - (ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके स्वाहा) अन्यश्च - (ॐ क्रीं) इत्येकाक्षरो मंत्रः अन्यत् - (ॐ क्रीं कालिके स्वाहा) अन्यत् - (ॐ क्रीं हूं ह्रीं) अन्यत् - (ॐ क्रीं हूं ह्रीं हुं फट्) अन्यत् - (ॐ हूं ह्रीं हुं फट् स्वाहा)

अस्य विधानं सर्वं पूर्ववत् ज्ञेयम्। तथा च - एतेषां पूर्ववत्प्रोक्तं यजनं नारदादिभिः ॥ निग्रहानुग्रहे शक्ताः काली मंत्राः स्मृता इमे

॥ भद्र काली मंत्र प्रयोगः॥

तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा –

(ॐ ह्रौं कालि महाकालि किलि किलि फट् स्वाहा)

अस्य विधानं – न्यासादिकं पूर्ववत्कृत्वा ध्यायेत् । ध्यानं
क्षुत्क्षामा कोटराक्षी मसि मलिन मुखी मुक्तकेशी
रुदंती नाहं तृप्ता वदंती जगदखिलमिदं ग्रास
मेकं करोमि । हस्ताभ्यां धारयंती ज्वलदनल
शिखासन्निभं पाशमुग्रं दंतैर्जम्बू फलाभैः परि
हरतु भयं पातु मां भद्रकाली ॥१॥ इति ध्यात्वा
पूजादिकं सर्वं पूर्ववत् कृत्वा जपं कुर्य्यात् ॥
तथा जप माला विधातव्या ह्यष्टोत्तर शतेन वा ॥
ध्यातव्येयं महाकाली देवी सर्वभया पहा ॥१॥
प्रयोग मात्रं कर्तव्यं वैरि निग्रह कारकम् ॥
इयं देवी महा द्वेषशत्रु निग्रह कारिणी ॥
यथेष्टं चिंतया ऽऽचिंत्य धर्म कर्मार्थ सिद्धिदा ॥
अस्य पुरश्चरणादिकं सर्वं दक्षिण कालीवत् ज्ञेयम्

पृष्ठ १६८ म॰म॰

१ अथ भाषानुवादः- देवीजी बोली हे ईश्वर ! शिवसाधन गणेश साधन, शक्ति साधन, विष्णुसाधन, सूर्य्य-साधन आदि अनेक साधनों की रीति मैंने-तुम्हारे समीप श्रवण करी है, अब मैं अन्यान्य देवताओं की साधना सुनने की इच्छा करती हूँ सो आप कहिये ॥१॥२॥

महादेवजी बोले हे देवि ! मैं इस समय हनुमत्साधन कहता हूँ। सो तुम सावधान होकर सुनो. यह साधन बड़े पुण्य का देने वाला और बड़े बड़े जो पातक हैं-उनका नाश करने वाला है, इसकी साधन विधि अति गुप्त है और शीघ्र सिद्धि को देने वाली है। इस साधन के बल से साधक तीनों लोकों में जयकरने समर्थ हो सकता है ॥४॥ तिसके साधन की विधि मैं कहता हूँ जो मनुष्यों की सिद्धि को देने वाली है।

इस साधन के बल से साधक तीनों लोकों को जय करने में समर्थ हो सकता है ॥४॥

तिसके साधनकी विधि मैं कहता हूँ जो मनुष्यों को सिद्धि की देने

प्रथम "हँ" दूसरे हुं "हनुमते" पीछे रुद्रात्मकाय अन्त मे हुं फट् अर्थात्

ॐ हँ हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट् "

यह बारह अक्षर का मन्त्र जो मैंने कहा इसको यत्न पूर्वक गुप्त रखना चाहिये। हे सुन्दरि ! मैं तुम्हारा दास हूं इसवास्ते मैंने तुम्हारे स्नेह और भक्ति के वशीभूत होकर यह मन्त्र कहा है ॥५॥

इस मन्त्र को प्रथम भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जी ने अर्जुन से कहा था। अर्जुन ने इसी मन्त्र को सिद्ध करके चर और अचर जगत को जीता है नदी के किनारे, विष्णु भगवान् के मन्दिर में

निर्जन स्थान में अथवा पर्वत में एकाग्रचित होकर इस साधन को करे। हनुमान जी बड़े भारी पर्वत को उखाड़कर रावण की ओर धावमान हो रहे हैं और रावण से घोर शब्द करके कहते हैं कि रे। दुष्टात्मन् ठहर ठहर भाग मत, हनुमान् जी का वर्ण लाल बल के रङ्ग के समान अरुण है उनका भयानक स्वरूप कालान्तक यम के समान है इनके दोनों नेत्र अग्नि की भांति प्रकाशमान है और देह कोटि सूर्य की कान्ति वाली है रुद्ररूपी हनुमान जी अंगद जी आदि बड़े बड़े बीरों से युक्त हैं इस प्रकार हनुमान जी का ध्यान करके मन्त्र का जप करे लक्ष जप पूर्ण हो जाने पर हनुमान जी उस साधक पर प्रसन्न हो जाते हैं।

इस प्रकार जप करके सातवें दिन दिन रात जप करना चाहिये। इस प्रकार जप करने पर

रात्रि के चौथे प्रहर में महा भय प्रदर्शन पूर्वक निश्चय हनुमानजी साधक के समीप आगमन करते हैं यदि साधक माला को अखण्डित भय को परित्याग करने में समर्थ होतो अभिलषित वर प्राप्त कर सकता है विद्या को धन को राज्य को तथा शत्रु निग्रह को उसी समय प्राप्त करता है। सत्य है भले प्रकार निश्चय किया हुआ है। इति

— ० अथ ध्यानम् ० —

ॐ महा शैलं समुत्पाट्य धावन्तं रावणं प्रति।
तिष्ठतिष्ठ रणे दुष्ट! घोररावं समुच्चरन् ॥
लाक्षारसारुणं गात्रं कालान्तक यमोपमम्।
ज्वलदग्निलसन्नेत्रं कोटिसूर्य समप्रभम् ॥
अंगदाद्यै: महावीरैः वेष्टितं रुद्र रूपिणम्।
एवंरूपं हनूमन्तं ध्यात्वा पूजां समाचरेत् ॥

इति ध्यायेत्.

लेखक:

भैरवीप्रियः

22-10-63

P.T.O. ⟶

आदिविधानम्

नदीकूले विष्णुगृहे निर्जनस्थाने पर्वते वने वा जपस्थानमुपविश्य पादौ प्रक्षाल्य नदीतीरे स्नात्वा कुशासने उपविश्य आचम्य मूलेन प्राणान् आयम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं श्री हनुमत् प्रीति कामिनः अमुकमन्त्रेण लक्षजपरूप पुरश्चरणमहं करिष्ये इति संकल्प्य भूतशुद्ध्यादिकं कुर्यात् । अस्य मन्त्रस्यादि कोदरमारुतिः ॥

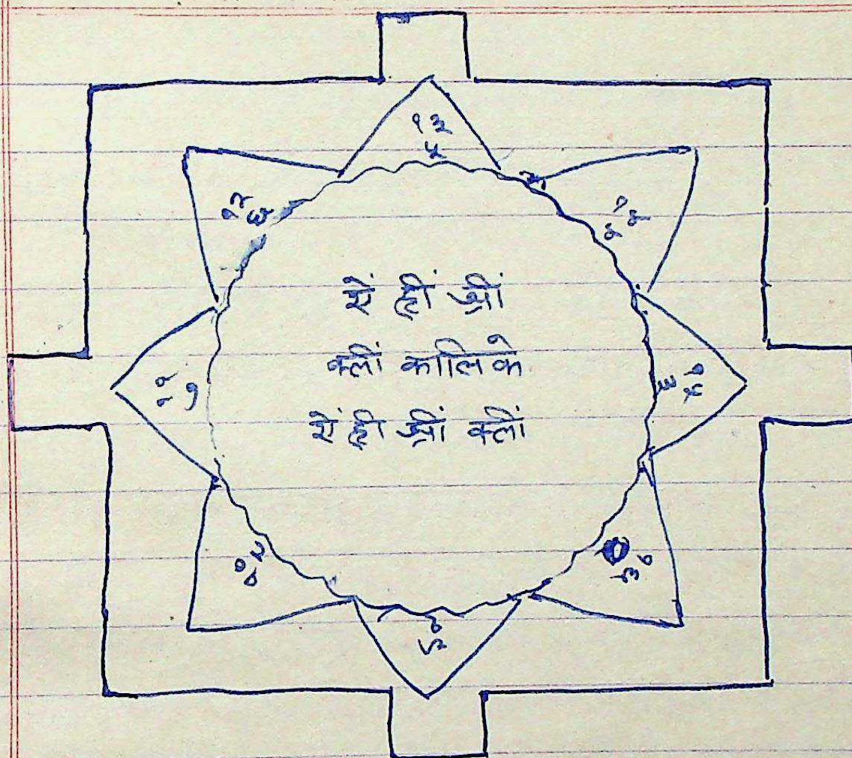
ॐ हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट् स्वाहा ।"

इति अंगुष्ठाभ्यां नमः एवमेवान्तिक करन्यास हृदयादि षडङ्गन्यासं च कृत्वा ध्यायेत् — ध्यानं पूर्वमापि ।

ॐ महाशैलमादिः ।

मौनीश्रीपति

श्मशान काली पूजनयंत्रम्

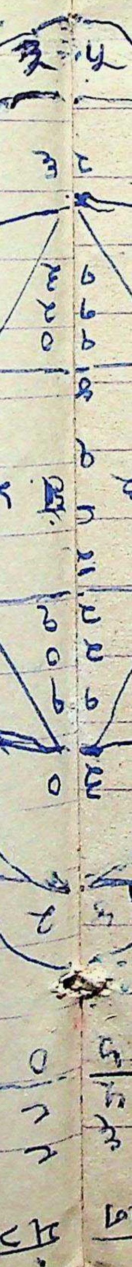


अस्य श्मशान कालीमन्त्रस्य भृगुऋृषिः। त्रिवृच्छंदः। श्मशान काली देवता। ऐं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकम् मम सर्वेष्ट सिद्धये जपे बिनियोगः। ॐ भृगु ऋृषिये नमः शिरसि १॥ त्रिवृच्छंदसे नमः मुखे २॥ श्मशान काली देवतायै नमः हृदि ३॥ ऐं बीजाय नमः गुह्ये ४॥ ह्रीं शक्तिये नमः पादयोः ५॥ क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७॥ इति ऋृषियादि न्यासः॥ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १॥ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २॥ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३॥ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४॥ कालिके कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ६॥ इति करन्यासः ॥ ऐं हृदयाय नमः १॥ ह्रीं शिरसे स्वाहा २॥ श्रीं शिखायै वषट् ३॥ क्लीं कवचाय हुं ४॥ कालिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अस्त्राय फट्॥ ६ इति हृदयादि षडंगन्यासः॥ अथ ध्यानं ॥ अंजनाद्रि निभां देवीं श्मशानालय वासिनीम्। रक्त नेत्रां मुक्तकेशीं शुष्क मांसाति भैरवीम्॥१॥ पिंगाक्षीं वाम हस्तेन मद्यपूर्णां समांसकाम्॥ सद्यः कृत्तं शिरो दक्षहस्तेन दधतीं शिवाम् २॥ स्मित बक्त्रां सदा चाम मांसचर्वण तत्पराम्॥

नानालंकारभूषांगीं नग्नां मत्तां सदाशिवेः।। इति ध्यात्वा।।
पीठ० पूजां कुर्य्यात्।। ततस्ताम्रपात्रे पद्मोष्टदलं वृत्तं तद्बाह्ये
धरणीतले चतुरस्रं यंत्रं लिखित्वा ताम्रपात्रे निधाय घृते
नाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण
प्रोक्ष्य ह्रीं कालिकायोगपीठात्मने नमः।। इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं
दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य
पाद्यादि पुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्या आज्ञां गृहीत्वा आवरण
पूजां कुर्य्यात्। ततोऽष्टदले ॐ ब्रह्म्यै नमः १। ॐ माहेश्वर्यै नमः
२। ॐ कौमार्यै नमः ३। ॐ वैष्णव्यै नमः ४। ॐ वाराह्यै नमः ५।
ॐ इन्द्राण्यै नमः ६।। ॐ चामुंडायै नमः ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः ८
प्राची क्रमेण पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। तद्बाह्ये प्राची
क्रमेण ॐ असितांग भैरवाय नमः १। ॐ रुरु भैरवाय नमः २।
ॐ चंड भैरवाय नमः ३। ॐ क्रोध भैरवाय नमः ४। ॐ उन्मत्त
भैरवाय नमः ५। ॐ कपाल भैरवाय नमः ६। ॐ भीषण
भैरवाय नमः ७। ॐ संहार भैरवाय नमः ८। इति पूजयित्वा
पुष्पांजलिं च दद्यात्। ततो भूपुरे इन्द्रादि दश दिक्पालान्
वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्।
इत्यावरण पूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारांतं संपूज्य जपं
कुर्य्यात्।।

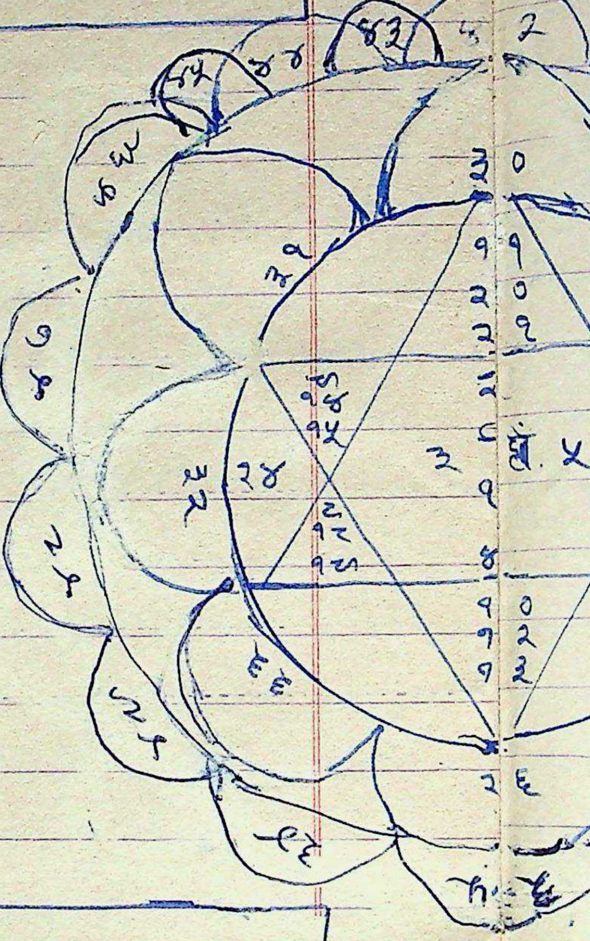
तथा च - एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं श्मशाने तु
विशेषतः ॥ गृहे वापि गृहस्थोऽपि मत्स्यमांसैः सु
भोजनैः ॥१॥ नग्नो भूत्वा महापूजां कुर्या
न्मन्त्री समाहितः ॥ वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं तद्दशांशेन
होमयेत् ॥२॥ एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। सिद्धे
मंत्रे मंत्री पूर्वोक्त प्रयोगान् साधयेत् ॥

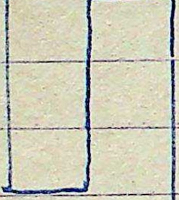
॥ इति श्री कालीपटल समाप्तम् ॥

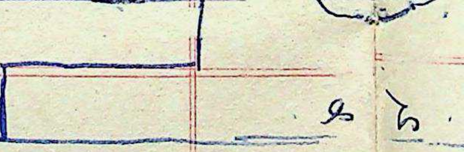


भुवनेश्वरी पूजन मंत्र









वस्तु नाम	ध्रुवांक	वस्तु नाम	ध्रुवांक	वस्तु नाम	ध्रुवांक	संक्रान्ति	ध्रुवांक	वार नक्षत्र	ध्रुवांक	नक्षत्र	ध्रुवांक	तेजी मंदी देखो
स्वर्ण	६६	अफीम	१६२	अरहर	७२	मेष	३७	शुक्र	२४	विसाखा	३२०	
चांदी	७१	तिल	५३	मूंग	४५	वृष	२४	शनि	१४	अनुराधा	४७३	
पीतल	५६	सरसों	२०२	चना	५६	मिथुन	६६	[illegible]	१०	ज्येष्ठा	५५६	
लोहा	५४	राई	७६	ज्वार	१००	कर्क	१०७	भरणी	१०	मूल	२५२	
शीशा	६०	कपूर	१०२	हींग	६२	सिंह	१२५	कृतिका	६६	पू.षा.	१४२	
कांसा	१२७	जव	[illegible]	कत्था	६७	कन्या	१०२	रोहिणी	२०	उ.षा.	४२०	
तांबा	१०	हाथी	६४	रौली	२५	तुला	११०	मृगशिरा	५६	श्रवण	४५०	
मोती	६५	भैंस	६२	हर्रा	७३	वृश्चिक	१४४	आर्द्रा	२६	धनि	२३६	
[illegible]	६४	बैल	२७	कुल:	६२	मकर	१६८	पुष्य	६४	पू.भा.	२७५	यहलाइन उलटपुलट गई है
कपास	१२७	गाय	७७	जीरा	७०	धान	१४४	पुनर्वसु	२१	शत	५७६	
कपड़े	१००	बकरी	६०	कांगनी	२०	कुम्भ	१६०	श्लेषा	१३५	उ.भा.	१२६	
		सांड	६४	रुई	७६							

कपड़											
		सांड	६४	रुई	६६						
घी	५०	ऊँट	२५	सोठी चावल	१६५	मीन	१२०	मघा	१५०	रेवती	२५६
तेल	१०	चावल	१७	सुपारी	२०४	बारशवि	८०	पू.फा.	२२०	तिथि १	१८
नमक	५६	चवला	२६	गिरी	२३	चन्द	५०	उ.फा.	२१२	द्वितीया	२०
शक्कर	१०२	जौ	५७	सोंठ	१००	मंगल	५७	हस्त	२३४	तीज	२२
मिश्री	१०२	गेहूं	१४	मजीठ	१४४	बुध	७२	चित्रा	२१	चौथ	२४
गुड़	७२	उड़द	८०	नारियल	७२१	गुरु	६५	स्वाती	२१०	पंचमी	२६
रांगा	६७	[illegible] कुमकुम	[illegible] २५	छुहारा	१४४	शुक्र	२५	दशमी	१७	चौदस	६५
						सप्तमी	२२	ग्यारस	१५	पूर्णमासी	१६
						अष्टमी	२१	द्वादस	१३	मावस	७
						नौमी	१९	तेरस	११		

जिसदिन कोई बुद्ध किसी वस्तु की तेजी मंदी तो उस दिन संक्रान्ती देखो किस रासी की है। नक्षत्र, वार, तिथि वस्तु इन सब का ध्रुवांक जोड़के ३ से भाग दे दे १ बचे शेष सस्ती २ बचे तो सम ० बचे तो मेंहगी

० बचा तो समझो स्वर्ण की मंहगी चलेगी।

जैसे स्वर्ण का किसी ने पूछा तो स्वर्ण का ध्रुवांक देखा तो ६६ है उस समय की संक्रान्ती देखा मेष है तो मेष का ध्रुवांक देखा उसदिन के वार का ध्रुवांक देखा। शुक्र है उसदिन।

नक्षत्र का ध्रुवांक उसदिन का देखा उसदिन नक्षत्र विसाखा समझो है तो उसदिन की तिथि का ध्रुवांक जाने पड़िवा है तो

६६ है
२७
२४
३२०
१८

३) ३२० (१०५
१५
१५
०

पत्रे में देखो जिस दिन जो जिस वस्तु की मेंहगाई सस्ती पूछे तो सोने की पूछे तो सोने का ध्रुवांक इस चक्र में बना है। संक्रान्ती वार नक्षत्र तिथि उस दिन की पत्रे में देख कर

पल्लवनिर्णय

स्वाहा, नमः, वौषट, वषट, ठः ठः यह पल्लव कहलाते हैं
ॐ कार जो है वो प्रणव है। यह सिर कहलाता है। सिर और
पल्लव से युक्त मंत्र कामधेनु कहलाता है

हैं
हलाते
और

सम्बत् वा सन को जानकारी की रीति

किसी दिन कोई पूछे हमारा जन्म किस सम्बत् का है तो मौजूदा सम्बत् से मौजूदा सन उस समय का संम्बत् से घटा दो। तो अन्तर निकल आयेगा। जैसे पूछने वाले दिन सम्बत २०३१ है सन १९७४ है

२०३१ सम्बत् मौजूदा
१९७४ - सन् है मौजूदा
५७ यह अन्तर सम्बत से सन का निकला

जैसे तुम्हारा जन्म सन १९२३ को है तो सन इन
सन १९२३ से
५७ - अन्तर घटादो
१८६६ सम्बत् निकल आया
समझो सम्बत १८६५ में जन्म हुआ

तो यदि जातक का सम्बत जानना हो तो अन्तर घटादो जैसे सन १९६६ है तो जन्म
घटादो ५७ - अन्तर है
२०२३ सम्बत
निकल आया समझो जातक २०२३ का जन्म है। सन जो जातक का मालुम हो तो अन्तर करके जो भी अन्तर आवे उसे सन में से घटा दो सम्बत् मालुम हो जायेगा॥ यदि जन्म का सा का मालुम हो तो १३५ घटा दो सम्बत निकल आयेगा कि किस सम्बत का जन्म है।

तुम्हें अपना विशेषक करना हो तो संकल्प में गृहगुण

विशेषण विशिष्टायां के बाद अस्मन: मनोभिलषित
कार्य सिद्ध्यर्थं अष्टाशीति सहस्र संख्याकं (अमुक
मंत्रं) माने जो मंत्र जप करो वह पुरा कहो फिर अद्यारभ्य
जितने दिन में पुरा करना हो जैसे ८८ दिन में करना है तो
अष्टाशीति दिवस मध्ये अच्युत गोत्रक कमला
देवी वैशाव नामाहं । या कमला सरकार वैश्णव
नामाहं जो नाम से तुम जप करो कहो फिर जपं
करिष्ये । जब दुसरे काम करो तो करिष्यामि कहो

चमार, जाटा, मेहतर, यह सब अन्त्यज कहाते हैं ।
ब्राह्मण - क्षत्रिय - वैश्य - को छोड़ कर सब शूद्र ऐसे समझें ।

॥ किसी दुसरे के लिये गृह और बाधा निवारण में ॥
जैसे यह नाम है तो
संकल्प में विशिष्टायां के आगे सिकन्दर सिंह
शर्माणः शरीर बाधा ~~हेतवे~~ वारणा हेतवे सतत:
आरोग्य प्राप्तये अरिष्टारिष्ट निवर्तये श्री महा
मृत्युंजय मंत्रस्य सपाद लक्ष संख्याकं परिमित
जप महं करिष्यामि ॥ अपने लिये करिष्ये ।

॥ मृत्युंजय मंत्र ॥

ॐ जूं सह सिकन्दर सिंह शर्माणं पालय पालय सह
जूं ॐ । इस तरह ब्राह्मण पुरुष के लिये । वैश्य स्त्री वास्ते
पालय २
ॐ जूं सह सीता देव्या: गुप्तायै सह जूं ॐ) जैसे स्त्री पुरुष
के लिये तो । ॐ जूं सह दुर्गा सिंह स्य वर्मण: पालय पालय सह जूं ॐ
अन्त्यज शूद्र के वास्ते ॥ ॐ जूं सह शिवचरन स्य अन्त्यज पालय २ सह जूं ॐ
केवल शूद्र वास्ते ॥ ॐ जूं सह केदार दासस्य पालय २ सह जूं ॐ

संकल्प [illegible] की रीति ।।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु अद्यो नमः परमात्मने श्री श्वेत बाराह कल्पे बैवश्वत मन्वन्तरे कलि युगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भरत खंडे भरत खंडान्तर्गत कुमारिका खंडे (अमुक याम्यायने) जो भी हो। (अमुक ऋतौ) अमुक मासे (अमुक पक्षे) (अमुक तिथौ) यदि सुबह पंचमी हो संकल्प के समय छठ आ गई हो तो पंचमी तिथौ न बोलो (इस प्रकार बोलो (अमुक पक्षे पंचम्यां तिथौ तदुपरि षष्ठयां तिथौ (अमुक बासरे) (अमुक नक्षत्रे) यदि नक्षत्र भी संकल्प के समय बदल गया हो तो (अमुक नक्षत्रे गत अमुक नक्षत्रे) सूर्य उस समय जिस रासी में स्थिति हो बोलो (अमुक रासिस्थिते सूर्ये) गुरु जिस रासी पर हो (अमुक रासिस्थिते देव गुरु शेषेशु गृहेषु यथा यथास्थान स्थितेषु एवं गृह गुण विशेषण विशिष्टायां अब नाम लो जिसके लिये तुम्हे जप करना हो जैसे (मुन्नालाल गुप्त प्रीते नामनं गोयल गोत्रकं सरोज बाला गुप्ताये आकर्षणं हेतवे अद्यारम्य माने (आजसे) मास परीयन्तं (अमुक आकर्षण मन्त्रस्य) यानी पूरा मंत्र कहो जितना जपना हो उतना बोलो जैसे सवा जपना है। तो सपाद लक्ष संख्याकं कमला बैराव नाम्नांह जप

करिष्यामि ॥ यदि अपने लिये संकल्प करना हो तो कहो

आत्मन: मनोभिलसित कार्य सिद्ध्यर्थं (अमुक संख्या
कं) अद्य प्रारम्भ (अमुक दिवस मध्ये) माने इतने दिन में
(अच्युत गोत्राहं कमला देवी नामाहं जपं करिष्ये।

अपने लिये करिष्ये
दूसरे के लिये करो तो
करिष्यामि अंत मे कहो।

हजार मंत्र जपना हो। सहस्त्र संख्याकं
दसहजार जप करना हो तो
दस सहस्त्र संख्याकं (अमुक
मंत्र) जैसे सवा लाख जप करना हो
तो सपाद लक्ष संख्याकं)

१० दिन में करना है तो कहो
दस दिवस पर्यन्तं
११ दिन में करना हो तो एकादश
२० दिन में करना हो तो विंशति दिवस
२५ दिन में करना हो तो पंचविंशति
४० दिन में चत्वारिंशति दिवस पर्यन्तं
८८ दिन में अष्टाशीति दिवस पर्यन्तं
१००० दिने शत दिवस पर्यन्तं
एक हजार मंत्र जप करना हो तो
सहस्त्र संख्याकं (अमुक मंत्रं)

योजना मे वैश्य के लिये
पुरुष के वास्ते गुप्तस्य
क्षत्री पुरुष के लिये वर्मण:
ब्राह्मण पुरुष के लिये शर्मण:
शुद्र पुरुष के लिये दासस्य
मेहतर चमार पासी अंत्यज है।
वैश्य स्त्री वास्ते गुप्तायै या
वैश्याया: देव्यै जैसे
कमला देव्यै नामाहं जपं
करिष्यामि। जैसे कमला
देव्यै गुप्तायै। जात जरूर कहो
अपनी।

जैसे किसी का काम करना है तो
अहं कमला देवी अद्य प्रारम्य (अमुक)
दिवस परियन्तम् (अमुक मंत्रस्य)
जितना हजार मंत्र जपना हो (यथा
संख्याकं) परिमितम जप महं करिष्ये
करिष्यामि अपने लिये करिष्ये कहो

क्षत्री स्त्री के वास्ते क्षत्राणीया:
ब्राह्मण स्त्री वास्ते ब्राह्मणिया:
शुद्र स्त्री का काम करना हो तो
अमुक शूद्राया:

पल्लव इनके नामों को कहते हैं (वषट) (वौषट) (फट) (हुं)
(नमः) (स्वाहा) (स्वे) (ठः ठः)

वशीकरण और आकर्षण के हवन प्रयोग में स्वाहा युक्त
मंत्र बोलना चाहिये। ॐ क्लीं सौ वौषट स्वाहा

पुष्टि कार्य में जैसे बीमारी में - यदि हवन करो तो आखीरी में
शान्ति के काम में (वौषट) बोलना चाहिये) फिर स्वाहा बोलकर डालें

मारण में - यदि हवन करो तो (हुं) नाम पल्लव जोड़ दो अंत में
या भय में किसी दुश्मन के { यह क्रिया ब्राह्मण पर न करना चाहिये।
गृह बाधा में हवन करें तो अंत में (वषट)
पल्लव जोड़े फिर स्वाहा कहे ॥ उच्चाटन में हवन करें तो (फट)
उच्चाटन पल्लव जोड़े फिर स्वाहा ॥ शान्ति पौष्टिक या कृपा चाहने
में यदि हवन करो तो (नमः) अंत में जोड़ दो फिर
स्वाहा कह कर आहुति डालो

वशीकरण में मनु महाराज जी का मत है कि। वशीकरण में
अंत में (वषट) उच्चाटन में (फट) स्तम्भन में (हुं) (मारण में

(खे) मुलिमें (स्वाहा) पुरि में (ठ:,ठ:) ~~और~~ सर्व
साधन में नम: पल्लव जोड़े अंत में। तव स्वाहा कहे

तंत्र में (

योजना (वशीकरण की) (ऐं क्लीं सौ राजदुलारि देव्या: ब्राह्मणिया: वषट् मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

चाहे जो मंत्र हो उसका स्वरूप इसी तरह बनेका, मिलकर कार्यो में
॥ यह नवार्ण मंत्र से योजना की गई है॥ जिसे वश करना हो उसका नाम वा जात दोनों बोलो

मंत्रोस्वरूपम्। वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे (अमुक नामं)
वषट् मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा। इसी मंत्र से जप, हवन,
दोनों होंगे। अमुक की जगह नाम जिसका तुम रखना
चाहो रखवा। पर जात ~~[illegible]~~ में से मुन्नालाल गुप्त ~~[illegible]~~ के ~~[illegible]~~ वषट् मे वश्यं कुरु
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे (देवदत्तं) की जगह नाम
और जात फिर फट् उच्चाटनं कुरु २ स्वाहा
~~ॐ~~ क्लीं क्लीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे (अमुकं)
क्लीं क्लीं मोहनं कुरु २ क्लीं २ स्वाहा॥
ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे (अमुकं) ~~[illegible]~~ रं रं खे खे
मारय २ रं रं शीघ्रं भस्मी कुरु २ स्वाहा।

ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे (अमुकं)
ह्रीं वाचंमुख पदं स्तंभय २ ह्रीं जिह्वां कीलय २ ह्रीं
बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे (अमुकं) यं यं शीघ्र
माकर्षया कर्षय स्वाहा ॥

नवार्ण मंत्र का विधान है यह

जप संख्या = मारण में दस लाख (मोहन में बारह लाख)
उच्चाटन में २४ लाख (वशीकरण में १ करोड़)
स्तम्भन मे १६ लाख। विद्वेषण में १३ लाख।

वशीकरण में - राजा के लिये साढ़े ६ लाख। ब्राह्मण के लिये
१३ लाख। शुद्रो के वश मे सवा तीन लाख।।
स्त्रियों के लिये ३ लाख। मारण स्त्री वा नको
ब्राह्मण पा मारण न करे।

कार्यपरत्वेन दिशा का विवरण = मोहन में मारण स्तम्भन
वशीकरण उच्चाटन क्रिया में दक्षिण मुख होकर
बैठे ॥ मोहन में पश्चिम मुख करके क्रिया करे
विद्वेषण में उत्तर मुख करके बैठे।

आसन = मारण में काला वस्त्र पहने काले कम्बल पर बैठ
निर्णय: कर क्रिया करे
मोहन में = पीला वस्त्र पहने पीला आसन बिछावे
उच्चाटन में = लाल वस्त्र पहने लाल कपड़े का आसन बिछावे
वशीकरण में = सफेद वस्त्र सफेद आसन
स्तम्भन में = छींट कई रंग वाली पहने वैसा ही बिछावे
विद्वेषण में = धूम वर्ण का वस्त्र पहने वैसा ही आसन

बैठने की मुद्रा = मारण में वीरासन से बैठे
मोहन में = कमर लचा के बैठे
उच्चाटन में = सुखासन दहिना पांव ऊपर बांया नीचे
वश्ये = दहने पांव पर आधा चूतड़ रक्खे
स्तम्भन में = कमलासन से बैठे
विद्वेषण में = पृष्ठपाद आसन

प्रयोग विधि = जिस दिन कोई प्रयोग करे उसके एक दिन

मारण प्रकरण है यह | पहले शरीर शोधन करे पंचगव्य पीये, गोदान करे 1 दिन व्रत करले। शरीर सोधन करे निरोगी न रहे स्वस्थ रहे। ब्राह्मण के चरण का जल, तालाब का जल आठ कुंये का जल, नौ नदी का जल ६ बावली का जल

पूजा
माने
बकरी
शशि माने
कपूर

बकुल माने

सब तांबे के घड़े में भरे नीम पीपल बरगद पाकर
ढाक ~~के~~ पत्ते ~~को में~~ ले गाय के दुध से पीसे
वह पिसा पत्ता कलश में छोड़ दे फिर जिस दिन
अनुष्ठान करे उस दिन इसी से नहाय, त्रिपुंड भस्म,
या लाल चन्दन, माथे पर लगावे । काले कम्बल
पर काला कपड़ा पहन कर वीरासन से बैठ पर
पहले भूमि पर अष्टदल सिंदुर लाल से बनावे।
पांच कुयें से एक हाथ से जल भर लावे समसान
भूमि का भस्म पीला सिंदुर बकरी का खून
बुढ़िया गाय का गोबर बांस के नीचे की मिट्टी इससे
चौका लगा कर अष्टदल बनावे। अपने दहने
हाथ के ~~अंगूठा से ताजा~~ खून अंगुठे का खून
भृंगराज के पत्ते का रस लाल चन्दन केशर
कपूर केले केले के पत्ते का जल हींग का पानी
एक में मिला लो समसान की लकड़ी लाकर
कलम बनावे नव अंगुल की कलम बनावे
नवार्ण यंत्र बनावे फिर ॐ जयन्ती मंगला
काली वाला श्लोक षट्कोण बना कर चारों

इलायची

नव दुर्गा के नाम (जयन्ती, मंगला काली, भद्रकाली, कपालिनी दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री) (स्वाहा, स्वधा पल्लव है इनसे मतलब नहीं।

तत्पश्चात् फिर इसमें नवदुर्गा की पूजा करो। फिर (सर्वाबाधा) वाला श्लोक से १ माला हवन करले बेर बबूर कीकर की लकड़ी से हवन करे (शाकल्य (लाल चन्दन का बुरादा, बोये धुरेन का खून, सरसों पीली, सिंदूर केले का जल सात कुश के तिनके मेंढ़ी का बाल, इन सबको एक करके बायें हाथ से मां को नहलावे।

लाल फूल चन्दन लाल लाल सूत लाल चावल लाल सिंदूर बरगद का दूध कुंदरु का फल लाल २ इन सब से पूजा करे (धूप देने से ही साधक को सिद्धि होती है।=

धूप का महत्व

गोरोचन कपूर काश्मीरी वाला) इलाइची लौंग, कस्तूरी, नादिरा, लम्ब करश का मांस गाय का घी गाय का दूध - देवदारु, लाल चंदन सफेद चंदन, अगर, तगर, बाल छड़, मोहन गोंध सब को कूट डाले एक में मिला दे। इसी से हवन १०८ बार करे (सर्वाबाधा) वाले श्लोक से और इसी मंत्र से धूप को सात बार अभिमंत्रित करे एकाग्र चित होकर धूप देवे। एक लोहे का दिया

दीप विधान

काले तिल का तेल, या पीली सरसों का तेल, या नीम का तेल दिये में भर कर जलावे। समसान भूमी का कपड़ा या सूत बांये हाथ से ले आवे तीन अंगुल की बत्ती बनावे उस सूत की और दीपक में छोड़ दे। जमीन लीप कर त्रिकोण यंत्र बनाकर बीच में भवाणी मंत्र लिख दे एक लाइन में नव अंगुल की केतकी की कलम से लिखे। मधु लाल चन्दन की स्याही से लिखे। फिर इसी यंत्र के पास वह दीपक दक्षिण की तरफ बत्ती का मुख करके रख दे। कालिका जी का ध्यान करे। लाल चन्दन से ही पूजा करे नैवेद्य मांस चढ़ादे

माला विधान मारण का = केले के सूत में सर्प की हड्डी की गुरिया बना कर माला बनावे। मंत्र यह दस लाख जपे

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे (अमुक) रं रं खे खे मारय २ रं रं शीघ्रं भस्मी कुरु २ स्वाहा

जाप का विवरण = वैश्य के लिये ५ लाख ब्राह्मण के लिये १० लाख, शूद्र के लिये ढाई लाख स्त्री के लिये ५ लाख मंत्र जपे मर्सक स्त्री पर मारण न करो

चिंचिड़ी माने इमली की लकड़ी

जितनी संख्या जपे उसका दशांश रोज हवन करदे। मां को कई जोड़ा पान यंत्र पूजा में चढ़ावे। और जब तक मंत्र जपे साधक चबाता जाय

पुड़ी गेहुं की गुरा गाय भैंस का घी बकरी का दुध चावल लौंग कपुर पीली सरसो हींग यह सब से हवन होगा। इमली की लकड़ी ~~के~~ टुकडे करे चार२ अंगुल के। त्रिकोण कुंड खोदे हवन के वास्ते और उसी टुकड़ों में हवन करे।

भोजन — मारण, मोहन, वशी करण में एक बार १ बजे करे नमक न खाय। उरद की दाल गाय का घी शहद चावल दुध से खीर बनावे वही भोग लगा कर खावे। भोग खाने में नहि चुके।

यह विधान शाक्त और शैव्य लोग कर सकते हैं =

गृहों की दस दशा होती है

दीप्त दशा।	अपनी उच्च राशी में दीप्त दशा मानी जाती है।
दीन दशा।	नीच राशी में गृह बैठा हो तो दीन हो जाता है
मुदित दशा।	मित्र के घर में मुदित रहता है।
स्वस्थ दशा।	अपनी राशी में यानी अपने अंक के साथ स्वस्थ
सुप्त दशा।	अपने शत्रु के घर में सुप्त यानी सोया गृह है।
पीड़ित दशा।	अन्य पाप गृहों से जीता हुआ गृह पीड़ित है।
मुषित दशा।	नीचाभिलाषी यानी मारक दुख देने वाला। यानी अस्त गृह ~~मुषित~~ होता है।
परहीन दशा।	जो गृह वह परहीन दशा में होता है।
सुवीर्य दशा।	उच्चाभिलाषी उन्नित पद गृह सुवीर्य है।
अधिवीर्य	शुभ वर्ग में

दीप्त दशा का गृह कार्य सिद्ध करता है।
दीन दशा में दुःखों का आगमन होता है।
स्वस्थ दशा में कीर्ती लक्ष्मी प्राप्त होवे।
मुदित दशा में आनन्द प्रदान करता है।
सुप्तावस्था में शत्रु का भय होता है। दुख होता है
पीड़ित अवस्था में धन हानि
मुषित दशा में धन हानि कार्य हानि
हीन दशा में धन नाश कार्य नाश
सुवीर्य दशा में अग्नि धन लाभ पशु लाभ हो।
अधिवीर्य दशा में पद प्राप्त मित्रों का मिलन होवे।

उच्च राशीये हैं।

जैसे मेष का सूर्य उच्च का है
वृष का चन्द्र उच्च का है
मिथुन का राहू उच्च का है
कर्क का गुरू उच्च का
कन्या का बुध उच्च का
तुल का शनि उच्च का
धन का केतु उच्च का
मकर का मंगल उच्च का
मीन का शुक्र उच्च का

नीच राशीये हैं।

मेष का शनि नीच है
तुला का सूर्य नीच है
वृश्चिक का चन्द्र नीच है
कर्क का मंगल नीच
कन्या का शुक्र नीच
मिथुन का केतु नीच
धन का राहु नीच
मकर का गुरु नीच
मीन का बुध नीच

यदि प्रश्न कर्ता पूछे हमारा काम कब होगा। तो उस समय की लगन बना ले फिर देखे। लगन को लगन का स्वामी। और कार्य भाव को कार्य भाव का स्वामी देखता हो तो शीघ्र कार्य हो। यदि कार्य भाव का स्वामी लगन में हो और वह लगन के स्वामी को देखता हो तो शीघ्र लाभ हो। यदि लगन का स्वामी अन्य घरों में बैठा हो तो कार्य जल्दी न होगा। यदि लगन स्वामी या कार्य स्वामी को पापग्रह देखे या शत्रु देखे उसको तो काम बिलकुल न बने। यदि लगनेश कार्येश एक ही घर में बैठे हों तो भी काम शीघ्र बनेगा। यदि लगनेश कार्येश कार्य स्थान को न देखें तो काम न बने। कह दे।

यदि लगन स्वामी पापग्रह हो तो (कलह रोग धन) तीनों का नाश हो। यदि शुभग्रह हो तो पवित्र बुद्धि द्रव्य की प्राप्ति और सुख होवे

उत्तर यात्रा में

मुझे यात्रा हल्द्वानी की ओर कर्क का चन्द्र हो या जब वृश्चिक का चन्द्र हो या मीन का हो चन्द्र पत्र में उस दिन जाना चाहिये

पश्चिम में यदि आगरा की तरफ जाय तो मिथुन तुला कुम्भ का जब चन्द्र पत्र में हो

साबर तस्कर गृह चेटक

उद्दु मुद्दु जल्लज लाल पकड़ चोटी धर पछाड़ मेज कुद्दालाव मुद्धा याकहु हारो याकहु हारो

विधान- इस मंत्र को नदी के किनारे या किसी कुंये पर ४८४ दफे पढ़े और सो रहे सात दिन तक तो ६ दिन में ही सारा भेद खुल जायेगा जो कोई चुराले गया होगा और जहां माल धरा होगा सब स्वप्न द्वारा मालुम हो जायेगा।

अन्य: ॐ नमः किकिष्किंधा पर्वत पर कदली बन तिस्के फल तोड़नवाला चोर तेरे कुंजन को देनो पकड़ दे इतनी आज्ञा फुरो

विधान- जिन पर संदेह हो उसका नाम लिखकर आटे में गोली बनावे प्रति गोली इक्कीस मंत्र पढ़कर जल में डालने से चोर का नाम तैरने लगता है।

अन्य: (ॐ इन्द्राग्नि वंध बंध ॐ स्वाहा)

विधान- रवि या शनि को लोगों का नाम भोज पत्र पर लिख के प्रतिनाम १०८ दफे मंत्र से अभिमंत्रित करके अग्नि में डाल जलेगा नहीं चोर का नाम। और सब

कागज पर
जल जायेंगे। यदि इसी मंत्र को लिख कर जिसपर शक
हाथ धरावे
हो उसका ~~माँहे नाम लिख~~ दे। और सफेद मुर्गे के गले
में बांध देवे और उस मुर्गे को टोकरे में बन्द करदे
और जिन २ पर शक हो उस टोकरे पर हाथ धरा
वे जिसने लिया होगा मुर्गा बांग देने लगेगा।

मन्त्रः रास्ती मुजु व्वेर जाये खुदाय कबूम दीद मगल वंद
कशुद मुजरात ॥

विधान – लोगों का नाम लिखके चमार को सुतारी में रखके
जुती को उसपर टांग दे उल्टी करके दो ऊंगलियों
पर उठावे चोर का नाम धर के मंत्र पढ़े तो चोर का
नाम धरते ही जुती चक्कर देने लगेगी। यह ज़मुमुत है।

मन्त्रः ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी चक्र धारिणि [illegible] बेगि काटि
भ्रामि भ्रामि चोर गृह्णि स्वाहा। ~~या यह मंत्र पढ़ो~~

मन्त्रः सावर। मंत्र प्रयोग चावल चबाने वाला।
ॐ नमो नारसिंह बीर ज्युं ज्युं तु चाले पवन चालै
पानी चालै चोर का चित चालै चोर के मुख मैं लोही
चाले काया थांमे माया परे करे जो चोर के मुख
में लोही न चलावे तो गोरख नाथ की आज्ञा मेटै नौनाथ
चौरासी सिद्ध की आज्ञा मेटे

विधान = सवा पाव चावल तीन दफे पानी से धोवे फिर
गौ के मुत्र में डाल कर भिगोवे जब फूल जाय तो
निकाल कर सुखा कर धर ले। फिर जब चोर का
पता लगाना हो तो शनीचर को प्रातः धरती को लीप
के कपड़ा साफ बिछा कर चावलों को उसके
ऊपर धरे और चावलों पर नृसिंह मंत्र १०८ बार
पढ़के फूक मारता जाय नोक दार साबुत
चावल हो घुना या टूटा न हो। उसे दूध से धोके
चावल तराजू से तोल २ कर १-१ तोला चबवावे
तो चोर के मुख से लोहू गिरे।

गुरु गोरख नाथ जी का साबर

हाकन्त युगराज कोरन्त कोटय जिस कायशा युगराज तुमको धाया हाक मार गाजन्त आया घोरन्त आया सिर के फल लेकर आया, और की चौकी बैठावन्त आया और के किवाड़ तोड़न्त आया आप के किवाड़ भेड़न्त आया, बांध २ किसको बांध, भूत को बांध, प्रेत को बांध जिन्द को बांध, मसान को बांध, सहीस को बांध, चुड़ैल को बांध दैत्य को बांध दानव को बांध, उड़न्त गड़न्त को बांध, किये कराये को बांध, गैल को बांध गरार को बांध, देहली को बांध द्वारे को बांध बावन बीरन को बांध ६४ योगिन को बांध. पृथ्वी कलुवान को बांध आकाश को परी को बांध शाकिन डाकिन को बांध, नज़र को बांध, ~~दृष्टि~~ दृष्टि को बांध, आचार को बांध, पल्ले को बांध बांध बांध बांध रे गढ़ गजनी के मुहम्मद पीर तेरे संग में ७२ सौ बीर जो बिसर जाय तो तेरे तीसों रोज़ा हलाल जायें ३० मार पलट पछार मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा: मेरी वाचा से न जाय तो धोबी की नांद चमार को कुंड में पड़ ।

॥ पशुरोग उपाय ॥

पशु रोगी हो जाते हों तो यह मन्त्र कोरे सकोरे में खड़िया से लिखदे, गुरुपुष्य हो या हस्त रवि हो वर्ना किसी अच्छे नक्षत्र में लिखकर गोशाला में पूर्व या उत्तर की तरफ लटका दो।

मंत्र

अर्जुनः फाल्गुनो, विष्णुः किरीटी, श्वेत वाहनः विभत्सु विजयी पार्थ, सव्यसाची, धननजय, कपिध्वजो, गुडाकेशो गांडवी कृष्णा, सारथिः।

॥ सुखसे प्रसव होने का उपाय ॥

हिमवत उत्तरे पार्श्वे सर्व रीता मय यक्षिणी। तस्य नूपुर शब्देन विशल्या भव गर्भिणी भवेत् ॥ इसमंत्र को १०८ बार लटजीरा पढ़कर माथे में बांध दे

पिपल यक्षणी मंत्र प्रयोग: दत्तात्रेयतंत्रे ॥

॥ धनदा यक्षणी साधन ॥

मंत्र:(ॐ ऐं क्लीं धनं कुरु कुरु स्वाहा) मतांतरे
(ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं कुरु कुरु स्वाहा)

प्रयोग : पीपल के वृक्ष पर बैठ कर एकाग्र चित्त से ४० हजार जपे ॥

विधानम् =

मतांतरे = ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं नम:) इसे पीपल वृक्ष पर बैठ कर १० हजार जपे, दधि, दुग्ध, बर्फी पालकू रोज नैवेद्य रखावे खीर भोजन एक टाइम करे नित्य ३ कन्याओं को भोजन देवे। जब आकर किसी रूप में नैवेद्य लेले तो जब वर देने को समर्थ हो तो जो चाहे मांगले। नित्य कुबेर जी का पंचोपचार से पूजन करे

आम्र पुत्रदा = ॐ ह्रां ह्रीं हूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा) इसे आम के पेड़ पर
आम्र यक्षणी = बैठ कर ४० हजार जपे मौन रहे व्रत करे खीर खाय, नैवेद्य
मंत्र प्रयोग: रोज रखेव

बिल्ववृक्ष मंत्र प्रयोग: ॐ क्लीं ह्रीं ऐं श्रीं श्रीं महायक्षिण्ये सर्वैश्वर्य प्रदात्र्यै नम: श्रीं क्लीं ऐं श्रीं स्वाहा) इस मंत्र को दिन में बेल के वृक्ष के नीचे बैठ कर (पहले लै करे / फिर एक मास तक नित्य मूल मंत्र जपे बेल के वृक्ष पर बैठ के नित्य तीस माला रोज जपे। दिन में जो जप होगा

बेल के वृक्ष के नीचे बैठ कर वह यह मंत्र है। इसे ५ हजार पहले जपले। (ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

विधान = जब गुरु शुक्र उदय रहें पत्रा में देखलो, और अपना चन्द्रबल देखलो। यानी अपनी रासी से पत्रा में देखो चन्द्र कौन रासी पर प्रयोग कर्ता का है जैसे अपनी मिथुन रासी है तो मिथुन का चन्द्र हो या मिथुन से तीसरी लगन का चन्द्र हो या छठी लगन का, या ७वीं का, या १०वीं लगन का, या ११वीं का हो (यदि चन्द्र पूर्णमासी का हो, तो कोरा यदि ८वीं ५वीं दूसरी रासी पर भी हो तो, भी फल दायक होगा।। श्रावण कृष्णपक्ष की पड़िवा से शुरु करे। पहले मृत्युंजय मंत्र जो ऊपर लिखा है ५ हजार दिन में बेल वृक्ष के नीचे बैठ कर जपले एक एक हजार रोज जपले। चाहे दो दिन में ही जपले शुद्ध उच्चारण से। मंत्र जप, बृत रहे, रवीर एक टाइम खावे, और फिर यह मूल मंत्र तीन हजार रोज ३० दिन तक बेल वृक्ष पर बैठ के जपे। १२ बजे रात को। शुरु कर मद्य, मांस, नैवेद्य, निन्य और सकोरे में रखलिया करे। पता नहीं किस दिन किस रूप में कौन से काल में आ जावेगी

जिस दिन यक्षणी बलिग्रहण करे और वर देने में समर्थ होतो इन वरों में से जो चाहे मांग ले। चाहे किसी स्त्री अथवा पुरुष को पलंग सहित उठा लाने को मांग ले। चाहे आयु विद्या, यश, बल, धन, भोग, या कान में सब भूत भविष्य वर्तमान बताने को मांग ले। या नृत्य रोज दिखाना मांग ले। राजा को वश में करना मांग ले, या जो मन में हो मांग ले। यदि प्रसन्न हो गई तो मांगे हुये वर शीघ्र देती रहेगी।

॥ द्विक्षा प्रकरण आगे है।

पक्ष निर्णय - शुक्ल पक्ष में दिक्षा शुभ है। कृष्णपक्ष में पंचमी तक दिक्षा शुभ है। सूर्य गृहण में अति उत्तम है।

दिक्षा स्थान - गोशाला - गुरु के घर - देव मन्दिर - बन में - बगीचे में - नदी तीरे - आंवला - या बेल वृक्ष के नीचे - पर्वत पर - गुफा में - गंगा तट पर ली हुई दिक्षा कोटि गुना फल देती है।

मंत्र लेने में बार निर्णय = तिथि, नक्षत्र, योग, करण, लगन निर्णय,

गृह	रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
	वित्त लाभ	शान्ति लाभ	आयु क्षय	सौंदर्य लाभ	ज्ञान वृद्धि	सौभाग्य	यश	×	×

अश्वनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृग	आर्द्रा	पुन	पुष्य	अश्लेषा	मघा
सुख	मरण	दुःख	विद्या	सुख	बन्धु नाश	धन	शत्रु नाश	मृत्यु	दुःख नाश

पूर्वा.फा.	उत्तरा.फा.	हस्त में
सौंदर्य	ज्ञान	धन प्राप्ती

प्रीति, आयुष्मान, सौभाग्य, शोभन, धृति, वृद्धि, ध्रुव, सुकर्मा, साध्य, शुभ हर्षण, वरियान, शिव, सिद्धि, ब्रह्म इन्द्र, इन योगों में दिक्षा शुभ है। बाकी में अशुभ होती है।

बव, बालव, कौलव, तैतिल बनिज इन करणों में शुभ है। दिक्षा।

वृष - सिंह - कन्या - धन - मीन - इन लगनों में दिक्षा ले। चन्द्र बल - तारा बल - भी देखलो - गुरु बल भी देखो।

मेष - वृश्चिक - सिंह - कुम्भ स्थिर लगन है। इन लगनों में विष्णु मन्त्र लेना चाहिये। मिथुन - कन्या - धन - मीन लगन में शक्ति का मंत्र लेना चाहिये। मेष - कर्क - तुला - मकर इन लगनों में शिव मन्त्र ले। लगन से प्रथम में उस दिन चौथे ७वें १० वें नवें पांचवें स्थान पर शुभ गृह हो। ३ - ६ - ११ वें स्थान पर पाप गृह हो।

॥ मंत्र लेने में मास निर्णय ॥

चैत्र में दिक्षा लेने से पुरुषार्थ सिद्ध होता है। बैसाख मे रत्न लाभ। जेष्ठ मैं मरण। असाढ़ मैं बन्धु नाश। सावन में दीर्घायु। भादों में सन्तान नाश। क्वार में रत्न संचय कातिक अगहन में मंत्रसिद्धि हो। पौष में शत्रु पीड़ा। माघ में बुद्धी मिले। फागुन में लेने से सकल कामना पूर्ण होती है

नारदपंचरात मे लिखा है।

सप्तम अध्याय मैं मंत्र तीन प्रकार के होते हैं। (सौरा: ~~सुरैला~~ पु देवता: (२) सौम्या: स्त्री देवता) (३ नपुंसक) जिस मंत्र मे (हुं फट हो वह पुरुष मन्त्र है। जिस मंत्र के अंत में वंषट या स्वाहा हो वह स्त्री रूप है) जिस मंत्र के अंत मे (हुं नम: हो वह नपुंषक मंत्र है। मंत्रो मे कितने ही दोष हैं दुष्ट मंत्रो का त्याग कर दे। यह मंत्रो का सृजन महेश्वर से शुरु हुआ है। शंकर जी के तांडव नृत्य के समय डमरु से चौदह सूत्रों का प्रागट्य हुआ। जैसे (अ-इ उ.ण ऋ लृ क १ ओ ङ. इत्यादि २ इन्ही सूत्रों के आधार पर पाणिनी मुनि ने व्याकरण शास्त्र का विस्तार किया। इन्ही सूत्रों से मन्त्रो का उद्धार हुआ। यह मंत्र स्वत: सिद्ध होकर साधकों के हृदय में एक उपासना के रुप में प्रगट हुआ। मंत्र के लेते समय देश काल समय परिस्थिति का निर्णय कर लेना चाहिये।

कुलाकुल चक्र

जल वायु मित्र हैं

वायु	अग्नि	पृथ्वी	जल	आकाश
अ, आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	लृ ॡ
ए क	ऐ छ	ओ ग	औ घ	अं ङ
च ट	ख ठ	ज ड		अः ण
त प	था फ	द ब	झ ढ	न म
य ष	र क्ष	ल श	ध भ	श ज्ञ
			व स	ह

पृथ्वी और जल मित्र हैं। अग्नि वायु मित्र हैं। पृथ्वी वायु शत्रु है। पृथ्वी अग्नि शत्रु हैं। जल और अग्नि शत्रु हैं।

साधक के नाम का पहला नामाक्षर और मन्त्र का पहला अक्षर एक कोष्ठ में आवे तो स्वकुल जानना चाहिये यह शुभ निर्णय है।

आकाश सब का मित्र है। रिपु होने पर मन्त्र न गृहण करे। स्व कुल होने पर मन्त्र गृहण करे।

सिद्ध	साध्य	सुसिद्ध	शत्रु
१ अ क घ ह	२ इ ङ प	३ आ ख ढ	४ ऊ च फ
५ ओ ड ब	६ लृ झ म	७ औ ठ ज्ञ	८ ॡ ञ थ
९ ई ध न	१० ऋ ञ भ	११ ऐ ट य	१२ ॠ छ ब
१३ अः त स	१४ ऐ ठ ल	१५ अं ण श	१६ ए ट र
बान्धव	सेवक	पोषक	घातक

यह समको जिसवाले में सिद्ध लिखा है इसके अक्षर पर साधक और गुरु का हो तो बान्धव भाव समझो साध्य वाले खाने में गुरु का साधक का नाम पड़े तो

सिद्ध मन्त्र बान्धव होता है। साध्य मन्त्र सेवक होता है। सुसिद्ध मन्त्र पोषक होता है शत्रु मन्त्र घातक होता है। मन्त्र अक्षरों से मतलब है इस चक्र का

राशी चक्र

वृष उ ऊ ऋ	मेष के अ आ इ ई यह अक्षर हों	मीन य र ल व	

११वें से धन आवे १२वें से खर्च होवे।

अपनी राशी के अनुकूल मन्त्र ग्रहण करने से मंगल होता है। विशानों को उचित है नाम का पहला अक्षर और मन्त्र का पहला अक्षर जो हो उस की राशी देखो, जैसे क अक्षर नाम का है तो मिथुन राशी नाम अक्षर की हुई। औ ऐं अक्षर मन्त्र का है तो ऐं अक्षर से वृष राशी हुई तो अब अपनी राशी से गिनो मन्त्र राशी तक १२ वीं राशी पड़ी यदि गणना करने से छठी आठवीं बारहवीं राशी पड़े तो उस राशी के स्थित मन्त्र त्याग करने योग्य हैं। जन्म राशी के स्थित मंत्र से सिद्धि। दूसरे धार से धन। तीसरे से भाई बढ़ें। चौथे भाई प्रेम/पुत्र स्थान यानी पांचवे से पुत्र हो। छठे से शत्रु बढ़े सातवें

अस्थान से से मध्यम फल। ८वें से मृत्यु ९वें से धर्म। १०वें से कर्म वृद्धि होवे।

तन भाव में मन्त्र राशी गणना करके आवे तो मंत्र सिद्धि होती है। यदि धन भाव में मंत्र स्थिति हो तो धन वृद्धि होवे जैसे जन्म राशी या नाम राशी मिथुन है। और मंत्र के पहले अक्षर की राशी वृष हो तो, समझो धन भाव में मंत्र स्थित है। तो इस राशी स्थित मंत्र से धन वृद्धि होगी। इसी तरह भातृ भाव में स्थिति हो तो भाई की वृद्धि होवेगी। मातृ स्थान से माता का सुख। यदि मन्त्र राशी ~~पंचवें~~ ५ वें स्थान पर यानी पुत्र स्थान पर स्थित हो तो पुत्र लाभ हो। यदि छठी शत्रु स्थान पर मन्त्र स्थिति हो तो शत्रु बढ़े। आठवें पर मन्त्र स्थिति हो तो मृत्यु होवे नवम स्थान पर स्थिति हो तो धर्म की वृद्धि हो। दशम पर कार्य सिद्धि होवे। ११ वें स्थान पर स्थिति हो तो आमदनी की वृद्धि होवे १२ वें पर खर्च हो खर्च होगा।

आज पं. जी ने बताया। ता. ६-८-६४ को
यात्रा चर या द्विस्वभाव लगन में करनी चाहिये

प्रशन का गोचर बना कर यात्रा के विषय में जानना हो तो देखो (चर या द्विस्वभाव ~~का~~ लगन का स्वामी (मेष, कर्क, तुला, मकर राशी ~~का स्वामी~~ लगन में है या नहीं यात्रा के समय चन्द्र बल भी देखलो लगन में किस स्थान पर है फिर उसका फल देखलो। यह चर रासी की लगन हुई।

या मिथुन, कन्या, धन, मीन यह द्विस्वभाव ~~की~~ लगन हुई। देखो यात्रा के समय यह लगन है की नहीं। चौथा, छठा, ८वां बारहवें, स्थान में कोई गृह न हो तो बहुत अच्छा होगा। यदि यह योगन बने तो दिशा लगन देख लो। जैसे मेष, सिंह, धन लगन में चन्द्र पूर्व में बली होते हैं। तो सिंह और धन लगन में यात्रा न करो मेष लगन चर लगन है इसमें यात्रा करो। इसी तरह। वृष, कन्या, मकर लगन दक्षिण में बली होती है तो दक्षिण जाना हो तो वृष छोड़ दो मकर या कन्या लगन द्विस्वभाव लगन है इसमें यात्रा करो।

मिथुन तुला, कुम्भ पश्चिम में बली लगन होती है तो मिथुन तुला में यात्रा करो। कर्क वृश्चिक मीन लगन उत्तर में बली होती है, तो मीन कर्क लगन में उत्तर यात्रा करो।

॥ सन्मुख चन्द्र की पहचान ॥

किस दिशा में चन्द्र बली होता है
यदि यात्रा करने वाले की मेष, सिंह, धन राशी हो और वह पूर्व यात्रा में जा रहा हो तो सन्मुख चन्द्र उसका समझो। यदि किसी की वृष, कन्या, मकर राशी हो वो दक्षिण जा रहा हो तो सन्मुख चन्द्र जानो। यदि किसी की मिथुन तुला कुम्भ राशी हो वो पश्चिम जा रहा हो तो चन्द्र सन्मुख समझो। कर्क, वृश्चिक, मीन राशी वाला उत्तर जाये तो चन्द्र सन्मुख समझो। यात्रा लगन हो या दिशा लगन हो या प्रश्न लगन हो लगन सदा पूर्व मानी जाती है ध्यान रहे। और यह भी ध्यान रहे पूर्व यात्रा करने वाला मेष लगन में जाये परन्तु सोम, शनि, दिन को न जाय। यदि यात्रा के गोचर बनाने में यदि गुरु बुद्ध लगन में बैठे हों तो बलिष्ठ समझो। मंगल दक्षिण की यात्रा में बलिष्ठ होते हैं। शनि पश्चिम की यात्रा में बली होते है। शुक्र चन्द्र उत्तर में बलवान होते हैं। यह गृह लगनेश हों या सप्तमेश या नौमेश हो यदि यात्रा लगन की कुंडली में पड़ जायें तो भी शुभ रहेंगे।

सर्प विष नाशकयन्त्रम्

|||	=	|=|	=
||||			|||	=
≡	२	+	≡
|||	=			≡|

इसे दिवाली में जगाले १०८ लिखकर गोली आटे में बना के गंगाजी में मछली को खवादे गुगुल धूप देता रहे यंत्र लिखते समय

सर्प कीलन मंत्र = बजरी बजरी बजर किवाड़ बजरी कीलूं आस पास मरे सांप होय खाक मेरा कीला पत्थर कीले पत्थर फूटे न मेरा कीला छूटे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचाः ॥

विधान इस मंत्र से सांप के एक कांकरी मारे तो सांप किल जाय

सांप खोलने का मंत्र = कीलन मई कुकीलीन वाचा मया कुवाच, जाहु सर्प घर आपने -चुग फिर चारों मास ॥ और यह भी खोलने का मंत्र है। पहरे भगुवे कपड़े कर मरदाना भेष, बंधी बंधी पन छूट गई फिरिया चारों देश, भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचाः। इसे पढ़ कर कांकरी मारे सांप चला जाय।

(सर्पों के भगाने का मंत्र = (ॐ प्लः सर्पकुलाय स्वाहा अशेष कुल सर्प कुलाय स्वाहा)

विधानम् = इस मंत्र से मिट्टी सात बार अभिमन्त्रित करके रखले ~~सर्पों के~~ घर में डालें जहां किसी के घर में सर्प आते हैं तो सर्प भाग जायेंगे।

बावलकुत्ते के काटने का मंत्र = (ॐ कामरूप देश कामाक्षा देवी जहां बसे इसमायल जोगी। इसमायल जोगी का भामरा कुत्ता सोना का डाट रूपा का कुंड़ा बन्दर नाचे रीछ बजावे सीता बैठी औषध बांटे कूकर का विष भागे शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥ इस मंत्र से मोर पंख से झाड़दे, तो विष कुत्ते के काटे का उतरे ॥

दूसरा प्रयोग कुत्ते का = ॐ नमो आदेश गुरु को आदेश कामरू देश का काबरी कुत्ता हु कनबुके सुषप सुसे शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा ॥

विधान मोर पंख से १०८ बार झाड़ दे और रोज तीन तोले चावल भिगोवे रविवार को चावल पीस के दो गोली बनावे पीढ़े लीपकर गोबर से रोगी को सूर्य की तरफ मुख करके बिठावे। जहां काटा हो वहां गोली फेरे

मंत्र पढ़ तो कुत्ते के बाल दंश के गोली में निकलेंगे उसे हटा दे दूसरी गोली फेरे उसी जगह तो फिर बाल निकलेंगे इसी प्रकार तीन इतवार (दिन तक) से झाड़े। वर्ष भर दर्पण न देखे उरद तेल खटाई, अचार न खाय न पानी में मुख देखे।

॥ यंत्र प्रकरण प्रारम्भः ॥

तत्रादौ विंशांक यंत्र विधानम् ॥ विश्व लोक तंत्रे-पार्वत्युवाच ॥ नमस्ते देव देवेश सर्व शास्त्र विशारद॥ विंशांकस्य विधिं ब्रूहि भक्तानां हितकारक ॥ १ ॥ श्री महादेव उवाच ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि सुंदरी यंत्र मुत्तमम् ॥ विंशांकस्य महादिव्यं ब्रह्म विष्णु शिवात्मकम् ॥ २ ॥ अद्य प्रभृति कस्यापि न चोक्तो यंत्रराजकः ॥ तव स्नेहान्मयाऽऽख्यातो गोप्यः सर्वत्र सर्वदा ॥ ३ ॥ (आगे देखो)

सुन्दरी यंत्र मान पन्द्रहियां यंत्र। अष्टोत्तर शत मान १०८ बार यंत्र लिखा जायगा।

एतां राजवती विद्यां पिता पुत्रेऽपि नार्पयेत् तस्मा
द्गोप्यं बरारोहे मम वाक्यं न संशया: ॥४॥ मोहनं स्तम्भना
कर्षवशीकरण मुत्तमम ॥ विद्वेषोच्चाटन करं मारणं
प्राणदायकम् ॥५॥ सर्वार्थ जनकं चैव बैरिचित्तस्य
शोषणम् ॥ समस्त यंत्र फलदं महा रक्षा करं सदा ॥६॥
महाभाग्ये कलभ्यं तु महादैश्वर्य दायकम् ॥ सर्व कल्याण
निलयं दुर्लभं भुवनत्रये ॥७॥ इन्द्राद्याकर्षणं देवि योषि
दाकर्षणं परम् ॥ आकर्षणाकरं देवि गंधर्वोरगरक्षसाम
॥८॥ करुणामृत कल्लोलं वाक्वित्व प्रकाशकम् ॥ भूगता
नां निधीनां च सद्यआकृष्टि कारकम् ॥९॥ काल संहार
पापघ्नं महा मोक्षप्रदायकम ॥ वश्य कामेन देवेशि सदो
पास्यं प्रयत्नत: ॥१०॥ मातंगा वशगास्तस्य सर्वे तस्य वशं
गता: ॥ देव कन्या आकृष्टि करं कल्पद्रुम मिवा परम् ॥११॥
योगीशै: पूजितं नित्यं ज्ञान वैराग्य भाजनम् ॥ धन धान्य
प्रदं लोके सुत राज वशं करम् ॥१२॥ रसायन करं
स्वर्णसिद्धि दायक मुत्तमम् ॥ जगतां सर्व पापघ्नं सर्व
रोग निवारणम् ॥१३॥ गत्युच्चाटनास्त्र वा वह्नि स्तंभ भूत
वशं करम् ॥ अमराणां मृत्युकर मुच्चाटनम् मरुतामपि
॥१४॥

॥ विशांक यन्त्र प्रकरणम् ॥

परसैन्य स्तंभनं तद्विवाद विजयावहम् ॥ दुर्भिक्षे वृष्टि जनकं कृषिवृद्धि करं परम् ॥ १५॥ रत्न वृद्धि करं सर्व मनोरथ समृद्धिदम् ॥ पुत्र पौत्र प्रदं देह बल वृद्धि प्रदायकम् ॥ १६॥ शत्रवस्तस्य नश्यंति येनेदं साध्यते भुवि ॥ व्याधयो विलयं यांति विनौषधि निषेवणे ॥ १७॥ राज्यदं भ्रष्ट राज्यस्य निर्धनस्य धनप्रदम् ॥ मुक्तिदं सन्मुमुक्षूणां भगतीनां गीत प्रदम् ॥ १८॥ अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा ॥ प्राप्तिः प्राकाम्य मीशित्वं वशित्वं प्राप्यतेऽचिरात् ॥ १९॥ ॥ गृहेभ्यो न भयं तस्य राज चोर भयं नहि ॥ न शस्त्रादि भयं तस्य न भयं देव दानवात् ॥ २०॥ चमत्कार करी विद्या धन धान्य समृद्धिदा ॥ पुत्र पौत्र प्रदा विद्या चांते मुक्ति प्रदायिनी ॥ २१॥ सर्वं यंत्र राजानां शिरोमुकुट वासितम् ॥ स्थित्वा पालयते लोकान् सृष्ट्या सूत जगत्त्रयम् ॥ २२॥ संहृत्या संहरेदेतद्यंत्रं त्रैलोक्य सुंदरि ॥ यथा ज्ञाने ज्ञान तत्व ज्ञानं परिसमाप्यते ॥ २३॥ ततोस्मिन् यंत्र राजे तु नान्यदन्वेषितं भवेत् ॥ बहुना किमिहोक्तेन सर्व सिद्धि प्रदायकम् ॥ २४॥ तस्योद्धारं प्रवक्ष्यामि समाहित मनाः शृणु ॥ त्वया कुत्रापि नो वाच्यं गोप्याद्गोप्यतरं महत् ॥ ॥ २५॥

६	४	३	१
	८	५	९
२			

८	२	१०
७	९	४
३	११	६

६	४	३
१	०	८
१२	९	२

६	८	२	४
४२	२	८	६
८	६	४	२
२	४	६	८

पत्री

हृदये मम सर्वस्वं मद्भाग्यं मम प्राण वत् प्राणादपि
प्रियतमं न प्रकाश्यं त्वया क्वचित् ॥२६॥ किं यज्ञै
योगैः किं मखैस्तीर्थैः किं तपोभिः प्रयासकैः॥
किं दानैः किं जपैः स्तोत्रैः किं पूजायाग विस्तरैः
॥२७॥ किमन्यैरसदालापैः किं वा नैर्दैव संस्तवैः॥
किं तस्य योग सिद्ध्या वा काय क्लेशादि मिश्च किम्
॥२८॥ नास्य ध्यानं न वा पूजा न न्यासो नास्य
भावना॥ जपादस्य भवेत्सिद्धो यंत्रराजस्त्रि
वर्गकः ॥२९॥ पुर्व पश्चिम भागे च कृत्वा रेखा
चतुष्टयम् ॥ उत्तरे दक्षिणे रेखां चतुष्कोणे तु
कारयेत् ॥३०॥ वसु नंद हुताशन नेत्र मुनि
प्रमथाधिप वेदरसै क्रमतः ॥ रचितं किल विंशति
यंत्र मिदं धन धान्य यशोदय सिद्धिकरम् ॥
॥३१॥ नव कोष्ठांकितं यंत्रं स्वर्ग पाताल
सिद्धिदम् ॥ एकाधि कोण विंशत्या षष्टि रंकाः
प्रकीर्तिताः ॥३२॥ आदौ कुर्यात् पुरश्चर्यां
साधकः सिद्धि हेतवे ॥ पुरश्चरण हीनस्य
यंत्र सिद्धिर्न जायते ॥३३॥ लेखने यंत्र

॥ लिखते समय विघ्न यह २ होते हैं ॥

तालशब्द: राजस्य भूरि विघ्ना भवंति हि ॥ क्वचिच्चटचटाशब्द: क्वचिद् भवेत् ॥ ३४ ॥ गानं गंधर्व पत्नीनां नृत्य मप्सरसां मपि ॥ मातु: पितुर्वा: पुत्रस्य दर्शनं श्रीगुरोरपि ॥ ३५ ॥ नाना सर्प मृग व्याल सिंह व्याघ्रादि दर्शनम् ॥ गात्रस्फुटनमाध्मानं गात्र गौरव मेव च ॥ ३६ ॥ संदितं रोदनं दु:खितानां च महावातो महग्रय: ॥ पर्वतोत्पतनं वृक्षभंगो विद्युल्लतागम: ॥ ३७ ॥ क्वचिन्मेघायते भूमि: समुद्र: प्लावयेन्महीम् ॥ क्वचिद्विमानं पतति क्वचिदा वर्तते पुन: ॥ ३८ ॥ क्वचिच्च विकृताकारा यान्ति वै भूत नायका: एवं नाना विधा विघ्ना जायंते जगदीश्वरि ॥ ॥ ३९ ॥ निवार्य दुस्तरांस्तांस्तु समाधाय मन: स्थिरम् ॥ विघ्नान्न गणयेत्तावीसिद्धिं नैव प्रकाशयेत ॥ ४० ॥ गात्र रोगान्न गणयेत्पुनर्जन्म न चिंतयेत् ॥ एवं कृत पुरश्चर्य: साक्षाद्ब्रह्ममयो भवेत् ॥ ४१ ॥ किं तस्य योग सिद्धया वा काय क्लेशादिभिश्च किम् ॥ यस्य प्रसन्नो भगवान यंत्र राजो जनार्दन: ॥ ४२ ॥ तस्य किं दुर्लभं लोके सर्व भू पाताल मंडले ॥ विषं निर्विषतां याति पानीयम् मृतं भवेत् ॥ ४३ ॥ पर सैन्य स्तम्भन



स्यात् परकाय प्रवेशनम् ॥ यंत्र राजे वशी भूते किं न सिद्ध्यति
भूतले ॥ ४४ ॥ खेचरी मेलनं तस्य भूचरी मेलनं भवेत् ॥ श्मशाने
ऽपि मृतो याति मोक्ष मार्गं सनातनम् ॥ ४५ ॥ प्रथास्य साधनं
वक्ष्ये तदिहैक मनाः शृणु ॥ यंत्र राजेन सिद्ध्यंति नात्र कार्या
विचारणा ॥ ४६ ॥ (प्रथास्य प्रयोगः = तत्रादौ चन्द्रतारादि बला
न्विते सुमुहूर्ते सिद्ध तीर्थे पर्वते वने वा जपस्थानं प्रकल्प्य
नद्यादौ स्नात्वा नित्य नैमित्तिकं विधाय एकाकी कुशासने
स्थित्वा प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य विश्व रूपं यंत्रराजं
स्व हृदये विचिंतयेत् तथा - च माया बीजांतरी भूत मज्ञानेन्धन
दाहकम् ॥ भावनावशमापन्नः साक्षाद्यंत्रमयो भवेत् ॥ १ ॥
इति संचिंत्य एकचित्तः स्थिरासनो मौनी - ॐ गुं गुरवे नमः
ॐ गं गणपतये नमः ॥ २ ॥ इति नत्वा प्रजापतिं प्रार्थयेत्
॥ तथा च - ॐ प्रजानाथ नमस्तेऽस्तु प्रजा पालन तत्पर ॥
प्रसन्नो भव मे देव यंत्र सिद्धिं प्रयच्छ मे ॥ १ ॥ ये
केचित् प्रेत कूष्मांडा भैरवा भूत नायकाः ॥ ते सर्वे
विलयं यांतु प्रजानाथ नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ प्रयच्छ सिद्धि
मतुलां यंत्र राजात्सु दुर्लभाम् ॥ त्वत् प्रसादादहं नाथ

कृत्कृत्यो व्रजेपरम् ॥ ३॥ इति गिरीशं संप्रार्थ्य प्रसन्न
चित्तो मौनी यंत्रं लिखेत् ॥ तथाच - चंदनागुरु
कस्तूरी रक्त चंदन कर्पूर कुंकुम देव दारु कुष्ठैरष्ट
गंधाभि र्धैर्जातीलेखन्या भूर्ज पत्रे प्रसिद्ध यंत्रे वा
(ॐ ह्रीं ॐ) इत्युच्चारणपूर्वकं नव कोष्ठांकितं कृत्वा
प्रथममष्टौ नव तृतियंपुनः त्रिसप्तैकादशं पुनः दश
चतुर्थाः इत्यंकान् 'ॐ ह्रीं ॐ' इत्युच्चारणपूर्वकं
लिखेत् ॥ एवमेव विधानाष्टोत्तरशतं यंत्राणि लिखि
त्वा नाना पुष्पैः संपूज्य कृष्णागुरुधूपं च दत्वा
पुष्प वासित तैलेन दीपं दद्यात् ॥ एवं यंत्रं संपूज्य
पुनरपि दीपं प्रज्वाल्य पश्चिमाभिमुखं संस्थाप्य -
ॐ भो भो जलेश वसन सर्व कार्य प्रसाधक ॥
निर्विघ्नं कुरु मे कार्यं हर विघ्नान्नमोस्तुते ॥ १ ॥
इति वरुणं संप्रार्थ्य इमं दीपं वरुण तुभ्यं अहं प्रददे ॥
इति दीपं दत्वा नाना पुष्पैः संपूज्य यंत्राग्रे मूल
मंत्रं जपेत् ॥ तथाच मंत्रो यथा - (ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मम
सर्व वांछितं देहि देहि स्वाहा ॥ इति सप्तदशाक्षरो
मंत्रः ॥ (एक पेज आगे छोड़ कर आगे का प्रसंग पढ़ो

सप्तदशाक्षरो

~~इति सप्ताक्षरो मंत्र~~

इति सप्तदशाक्षरो मंत्र:॥ अस्य विशांकस्य यंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि। अनुष्टुप्छंद:। विंशांका भवानी देवता। ॐ बीजम्। ह्रीं शक्ति:। श्रीं कीलक चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:॥ ॐ ब्रह्मर्षये नम: शिरसि १। अनुष्टुप्छंदसे नम: मुखे २। विंशांका भवानी देवतायै नम: हृदि ३। ॐ बीजाय नम: गुह्ये ४। ह्रीं शक्तये नम: पादयो: ५। श्रीं कीलकाय नम: नाभौ ६। विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे ७॥ इति विन्यस्य सहस्त्र संख्यकं मंत्रं जपेत्॥ तद्दशांशेन क्षीर खण्डाज्य मधुना पंचामृतेनाक्तं पंच खाद्यं हुत्वा। तद्दशांशेन तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजनानि कुर्यात्॥ अस्य ~~पुरश्च~~ पुरश्चरणं अष्टाशीति दिनं यावत्॥ संख्या समाप्ति दिवसे पृथक पृथग्यंत्रं गोधूमान्नेन वटिं कृत्वा जले क्षिपेत्॥ मत्स्यस्य वटिका भक्षणा द्वरुण स्तुष्यति रात्रौ वरं दद्यति॥ एवं कृते यंत्रम् सिद्धं भवति॥ ~~एतस्मिन्~~ एतस्मिन्सिद्धे यंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत्॥

।तथाच-सिद्ध तीर्थे गुरौ रम्ये सुसमे भूतले पुनः
नित्यं नैमित्तिकं कृत्वा सर्व संग विवर्जिता: ॥४६
कुशासने समासीन एक चित्तः स्थिरासनः ॥ध्यानादि
संयतो मौनी नमस्कृत्य गुरुं हृदि ॥४८॥ गणेशानं
नमस्कृत्य प्रार्थयित्वा प्रजापतिम् ॥ प्रसन्नचित्तो
विलिखेल्लेखन्या जाति जातया ॥४९॥ ज्ञाद्यौ भूर्जे
सिते पत्रे विलिखेदष्टगंधकै: ॥प्रणवं पुर्वमुच्चार्य
माया वीजं तु मध्यतः ॥५०॥ विलिख्य यंत्र राजं
तं पुनरं कांकितं चरेत् ॥धूपं दत्वा महेशानि कृष्णा
गुरु-समुद्भवम् ॥५१॥ पुष्पवासित तैलेन दीपं
दद्यात्प्रयत्नतः ॥पश्चिमाभिमुखं दीपं जलशाय
निवेदयेत् ॥५२॥ नाना पुष्पैः प्रपूज्याथ यंत्र
मष्टोत्तरं शतम् ॥जप्यं सहस्त्रमेकं च हवनं
तद्दशांशतः॥५३॥ क्षीर खण्डाज्य मधुना तथा
पंचामृतेन च ॥ पंचखाद्येन जुहुयादर्ध रात्रे तु
+ पार्वति ॥५४॥ सम्पूर्ण तर्पणं चात्र कृत्वा रात्रौ
वरप्रदम् ॥ नास्य ध्यानं न वा पूजा न न्यासो
नास्य भावना ॥५५॥ जपादस्य भवेत् सिद्धो

यंत्र राजस्त्रिवर्गदः ॥ तावल्लिखेद्यंत्रराजं ~~यावासंख~~ यावत्संख्या समाप्यते ॥ ५६ ॥ अष्टाशीति दिने देवीं पुजयित्वा विसर्जयेत् ॥ पुनर्गोधूम चूर्णेन ~~वेष्टयेत~~ वेष्टयित्वा जले क्षिपेत् ॥ ५७ ॥ मत्स्यैस्तु भक्षाद्स्य वरुणस्तेन तुष्यति ॥ मौनं च ब्रह्मचर्यं च भूशय्यां तावदाचरेत् ॥ ५८ ॥ गोधूम चूर्ण घटितं तैल पक्वम् प्रभक्षयेत् ॥ न घृतं भक्षयेत् तावद्यावद्यंत्र समाप्यते ॥ ५९ ॥ एवं कृत पुरश्चर्यः साक्षाद्ब्रह्ममयो भवेत् ॥ वशीभूते यंत्र राजे प्रयोगे कुशलो भवेत्

अथ प्रयोगो यथा - आसने तु पवित्रे च नित्यं संध्या भयेषु च ॥ पंच शतम् च यंत्राणि कृत्वा वारि विसर्जयेत् ॥ ६१ ॥ आति मत्स्यं समादाय रक्षणीयं स्वनामतः ॥ सर्व सिद्धिंकरः साक्षाद्राजते नात्र संशयः ॥ ६२ ॥ ~~अन्य~~ ~~पेन्मंत्रराजं तमष्टोत्तरशतं~~ तुलिखित्वा यंत्रराजं तु नूतने कुलाल खर्परे ॥ आक्रम्य वाम पादेन कृत्वा तं चाप्यधोमुखम् ॥ ६३ ॥ प्रजपेन्मंत्र राजं तमष्टोत्तर शतं सुधीः ॥

॥६३॥ तत्र मंत्रः - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अमुकमाकर्षय २
स्वाहा ॥ चक्रवर्तिनमप्याशु मुहूर्तेन स्वमालयम्
॥६४॥ आनयेत्प्रहरार्धेन भूचरान्यक्षराक्षसान् ॥
यामेनैकेन सुव्रते ॥६६॥ देवकन्या यक्षकन्या
अप्सरो मंडलानि च ॥ ध्रुवमाकर्षये द्देवि यक्ष
राक्षस पन्नगान् ~~विद्विषां पालान्~~ ॥६७॥ यावद्दूरं
लिखेद्यंत्रे तावदाकर्षणं भवेत् ॥ नगर ग्राम भवापी
कूप पर्वत सागरान् ॥६८॥ वनानि देव देवेशि
सद्य आकर्षयन्नरः ॥ किमन्यज्जगदाधारे लोक
त्रयमिदं पुनः ॥६९॥ विपरीतं कर्तुकामो दिनेनैकेन
साधयेत् ॥ धन धान्य गजाश्वांश्च सेनाद्याकर्षणं
भवेत् ॥७०॥ आकर्षणे वशीकार एक एव
विधिर्मतः ॥ असाधितमपि ह्येतल्लिखेत्तु नित्यदा
निशि ॥७१॥ अष्टोत्तर शतं देवि वशये दखिलं
जगत् ॥ वश्यकामस्तु देवेशि क्षीरेण सह भक्षयेत्
॥७२॥ यस्य नाम्ना यंत्रराजं स वश्यो जायते
क्षणात् ॥ नृपो नृपेन्द्रो गंधर्वो देवो देवांगनामपि
वा ॥७३॥ वशीभूतो वशंत्याशु साधकस्य हि
किंकरः ॥

बहुना किमिहोक्तेन मां विशां वा वशं नयेत् ॥७४॥
अन्यत् - लिखित्वा यंत्र राजं तु शत्रुनाम् ततो लिखेत्
॥ मनुना वेष्टितं देवि शत्रुनाम जपेत्सुधीः ॥७५॥
अग्नौ प्रतापिते रोगो दाहो लूतादि संभवः ॥ दग्धे
यंत्रे महेशानि सद्यो मृत्युमवाप्नुयात् ॥७६॥
इन्द्रोपि किमुतान्यो वा मल मूत्र धरो नरः ॥७७॥
अन्यत् - उच्चाटनं महादेवि भूपाल्वा विहितानघे ॥
उच्चाटने मरुवक्त्रो विद्वेषे राक्षसाननः ॥७८॥
प्रागाननोऽपि क्रुद्धोस्या दन्यष्टेशान दिङ्मुखः ॥
धत्तूररससंमिश्रमषीभिः क्रोधमुद्वहन् ॥७९॥
वात्यायां निक्षिपेद्यंत्रं श्मशाने गहने वने ॥
विभीततरुशाखायामथवा बंधयेद्देवि ॥८०॥
सद्य उच्चाटयेत्स्थानादिन्द्रणापि सरक्षितम् ॥
८१॥ अन्यत - (स्तम्भन विद्वेषण का पेज फटगया)
शान्ति कर्म क्षमाधारे प्रवक्ष्ये जगदीश्वरि ॥
शांति कामो लिखित्वाऽमुं यंत्र राजं त्रिवर्गदम् ॥
॥८३॥ तत्पल्लवयुतं मंत्रं प्रजपेत्रिसहस्त्रकम् ॥
एवं कृते रोग शान्तिः कृत्याद्रोहादि शांति कम् ॥८४॥

मन: शांति र्मोहति : काम क्रोधादि शान्तिकम् ॥ कारा
गारादि मोक्षश्च दुर्भिक्षादि निवारणम् ॥ ९७ ॥ भवेद्देव
न संदेहस्त्रैलोक्य शांति कामना: ॥ प्रोक्तं प्रयोग
षट्कं ते सुन्दरि प्राणवल्लभे ॥ ९८ ॥ कल्पना देव
जायंते सिद्धयो नात्र संशय: । त्यक्त्वा सर्वफलासंगं
लभेन्मुक्तिं चतुर्विधाम् ॥ ९७ ॥ नास्य मोहं प्रजनये
द्विभूति: सर्व सम्पदाम् ॥ अणिमाद्य सिद्धीनां नास्य
मोह: प्रजायते ॥ ९८ ॥ न तस्य तृट् काममोहक्रोधाहं
कार [illegible] संभव: ॥ देवरपि स सेव्य: स्यात्किमुता
न्यैर्नराधिपै: ॥ ९९ ॥ इत्यादसाधितोऽप्येव
ले स्वनाच्छिव मूर्जितम् ॥ अनेकजन्म पुण्येन यंत्र
मेतच्च वीचीस्मते ॥ १०० ॥ सम्प्राप्य साधयेद्यत्नाज्जीवन
मुक्तिमभीप्सुक: ॥ चिन्तामणिर्यथा भूमौ कल्प
वृक्षो यथा दिवि ॥ १०१ ॥ रसातले निधिर्यद्वत्तथा
यंत्रमपीश्वरि ॥ अनेन यंत्र राजेन यद्दसाध्यं
सुरेश्वरि ॥ १०२ ॥ तन्नास्ति जगतीशानि सर्वभू
पाताल मंडले ॥ मनसा भावयेन्मंत्री

मंत्रराजं त्रिवर्गदम् ॥१०३॥ भावना देव सिद्धिः
स्यान्नात्र विचारणा ॥ इति ते गदितो देवि जीवन
मुक्ति फलक्रम: ॥१०४॥ कामनां प्राप्य निष्कामो
मोक्ष लक्ष्मीं सगच्छति ॥१०५॥ इति
विश्व लोक तंत्रे नव कोष्ठांकित विंशांक
यंत्रविधानम् समाप्तम् ॥

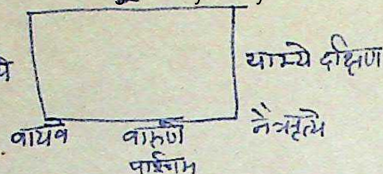
॥ अथ पंचदशी विधान प्रारम्भः ॥

कैलाश शिखरासीनं गौरी पृच्छति शंकरम् ॥
पंचदश विधिं कृत्वा भक्तानां हित कारकम् ॥१॥
श्री पार्वत्युवाच ॥ स्वामिन्भो देव देवेश लोकनाथ
जगत्प्रभो ॥ यत्किंचित्प्रार्थ्यते सद्यस्तत्सर्वं वद
शंकर ॥२॥ कलौ नरा भविष्यंति मंदभाग्या दरि
द्रिणः ॥ तेषां भोगादि संसिद्ध्यै विधान वदस्व तत् ॥
॥३॥ श्री महादेव उवाच ॥ साधु पृष्टं महादेवि हिताय
जगतां त्वया ॥ प्रायः प्रश्नो हि साधुनां नराणां सुखदो
भवेत् ॥४॥ शृणु भद्रे शुभां वार्ता कौतुकीं विधि
संभवाम् ॥ योगा नाना विधाः सन्ति तन मध्ये

यंत्र संभव: ॥ पू॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि सुन्दरी यंत्र
मुत्तमम् ॥ यस्य विज्ञान मात्रेण त्रैलोक्ये विजयी
भवेत् ॥६॥ धर्मेण लभते देवि न क्रयेण कदाचन ॥
दक्षिणा वर्त शंखश्च तथा रुद्राक्ष एव च ॥७॥ राम
लक्ष्मण निष्ठा तु तथैवं च सुयशो भवेत् ॥ तादृग्विध
मिदं यंत्रं चतुरेखात्मकं शुभम् ॥ ८॥ यस्य तुष्टा भवेद्देवि
वरा लक्ष्मीर्वरात्मिका ॥ तेनैवलभ्यते देवि सत्यं
सत्यं वचो मम ॥ ९॥ गुह्याद्गुह्यतरं देवि न देयं
यस्य कस्यचित् ॥ तस्य संग्रह मात्रेण सर्व सिद्धि
र्वरानने - ॥१०॥ न मंत्रो न तपो मंत्रो न च यज्ञो न
पूजनम् ॥ तस्मात्सिद्धिकरं ज्ञेयं लिखित्वा शुचिमानसः
॥११॥ सर्वाभिष्ट फलं कुर्यात्सूर्यधाम लिखेत्सुधीः
नवग्रहात्मकं यंत्रं योगिनी नव नाथयोः ॥१२॥ नव
खण्डग्रह ज्ञेयं विषमांकं शिवोदितम् ॥ नव खण्ड
मयी पृथ्वी प्रोच्यते मुनि पुंगवैः ॥ तस्माच्च नव
कोष्ठेषु यंत्रं चैव प्रजायते ॥१३॥ मया संकीलि
ताश्चान्ये यंत्र मंत्रा न सिद्धाः ॥ इदं संगोपितं
सुभ्र यंत्रं मे करुणात्मना ॥१४॥

मैतत्तुल्यं जगत्सम्ब यंत्र मंत्र: स्वसिद्धिद: ॥
स्वगुह्य मिव संगोप्यं कथनीयं न कस्य चित्
॥१५॥ तवाति स्नेह बाहुल्यात्कथ्यते वाग्रत: ॥
नामक्राय त्वयादेयं कृतघ्नाय कदाचन ॥१६॥
श्री पारवत्युवाच ॥ यथा कथयसे देव कौरव्यैदहं
तथा शिव ॥ आज्ञामज्ञानति मिराच्छिद्र करुणाकर
सत्पते ॥१७॥ श्री महादेव उवाच ॥ सर्व सिद्धिकरं
चैव यंत्रोद्धारं शृणु प्रिये ॥ यंत्र वर्य मिदं भद्रे
पूर्व पुण्येनलभ्यते ॥१८॥ तुर्य रेखा: प्रकर्तव्या
सितिर्यगूर्ध्वं च संख्या ॥ नवधा काम संकेतो नव
कोष्ठात्मके प्रिये ॥१९॥ तत्रांक गति योगेन ह्यमारभ्य
पार्वति ॥ गति मार्ग क्रमेणैव नव यन्त्राणि कारयेत्
॥२०॥ एकाधि रन्ध्र पर्यंतं तत्रां कांस्तु प्रवेशयेत्॥
एतस्य सकलं वाक्यं शृणु यत्नेन साम्प्रतम्॥२१
अन्य मापि सूर्येन्दु भौमे बुधं देवपूज्यै शुक्र: शनौ
राहु शिखि क्रमेण ॥ प्रश्ने योगे मंत्रिगतैश्च वामै:
पुनश्च रोगे गत प्रश्न भौमे (१) ॥२२॥ श्री पार्वति
उवाच ॥

त्वदीयममृतंवाक्यं श्रुतं देवेशशर्मदम् ।। यंत्रस्य देवतां
ब्रूहि कथं कोऽवतारो भवेत् ।। २३ ।। श्री महादेव उवाच ।।
पुरा रामायणे रामो रावणं दशकंधरम् ।। हंतुं जगाम जलधे
स्तीरे तिष्ठत्सवानरः ।। २४ ।। जलधेस्तरणे यत्नं चिंतयामास
सर्वदृक् ।। तदा न कोऽपि चाधातो यत्नो मनसि पार्वति ।। २५
भूयः समाधिना चित्तं संनियम्य रघूत्तमः ।। ददर्शौ चिरसंभृतं
तस्माद्यंत्रमेकं शृणुष्व तत् ।। २६ ।। यन्मया गोपितं कांते यंत्रं
पंचदशाख्यकम् ।। सर्वापत्तिरयकं सम्यक् सर्वसिद्धिविधायकं
म ।। २७ ।। यावंतोऽकाश्च लोकेऽस्मिन् यंत्रेषु परमेश्वरि ।।
तावंतोऽस्मिन् महायंत्रे सर्व एव वसंति हि ।। २८ ।। संज्ञापितं
स विज्ञाय यंत्रं ध्यानेन राघवः ।। यत्साधनादहं जातो
विश्वसंहरणक्षमः ।। २९ ।। वायुपुत्रं तदा रामः प्रेषयामास
सत्वरम् ।। समांते स समागत्य मनोजव उदारधीः ।। ३० ।।
प्रार्थयामास रामस्य पाथोधितरणाय वै ।। तदा लिख्यमया
यंत्रं दत्तं वै वायुसूनवे ।। ३१ ।। सत्वरं स ददौ यंत्रं
रामाय नररूपिणे ।। रामस्तदनुभावेन सिंधौ सेतुं
बबंध ह ।। ३२ ।। सेतुबंधे शिवं तत्र स्थापयामास राघवः



वर्तते स शिवोऽप्यापि तत्र सर्वार्थनाशनः ॥३३॥
यंत्रं भूमौ विलिख्याथ वायुसूनुकरे ददौ ॥ स
यत्नात्स्थाप्य जलधौ तारया मास पावनः ॥३४॥
निस्तीर्य सेतुनातेन सागरं मकरालयम् ॥ परं
पारं जगामाथ लंकेशमहनत्सुधी: ॥३५॥ एतस्मा
द्धनुमान्देवो जातो यंत्रस्य पार्वति ॥ रामेणापि
वरो दत्तो यंत्रेशस्त्वं भविष्यसि ॥३६॥ तद्दा
ह्येतस्य यन्त्रस्य ख्यातिर्लोके मनोरमे ॥ विधिं
केऽपि न जानंति श्रृणु तस्माच्छिवप्रिये ॥३७॥
आदौ कुर्यात्पुरश्चर्यां साधकः सिद्धिहेतवे ॥
पुरश्चरणहीनस्य यंत्र सिद्धिर्न जायते ॥३८॥
जीवहीनो यथा देही सर्वकर्मसु न क्षमः ॥
पुरश्चरणहीनो हि तथा यंत्रं प्रकीर्तितः ॥३९॥
पुरश्चर्याविधिः प्रोक्तस्ते पुरैव सुमध्यमे ॥
प्रयोगांस्तु श्रृणुष्वाथ यंत्र विद्याविधानतः
॥४०॥ अथास्य प्रयोगः - हस्तार्के पुष्यार्के
मूलार्के श्रवणयुक्ते स्वकीय वारे समुहूर्ते

एक महापुरुष का कथन है पहले
(१-५-९)(२-३-४)(६-७-८)
इस क्रमसे लिखना चाहिये

२	१	६
३	५	७
४	९	८

पूर्व

ई			आ
२	१	६
उ	३	५	७	द
४	९	८
वा			नैऋ

पश्चिम

शैवे मानईशान

विविक्त देशे सिद्ध पीठादि भूमिं प्रकल्प्य कुशासनोपरि रक्तासनमास्तीर्य रक्तवस्त्र रक्तमालां च परिधाय प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य भूतशुद्धयादिकं च कृत्वाऽऽचम्य प्राणानायम्य देश कालौ संकीर्त्य मम पंचदशांक यंत्र लेखनार्थं सर्व विघ्ननिवारणार्थं च भूत लिपि मंत्र जपं करिष्ये" इति संकल्प्याष्टोत्तरशत
१०८ वारं भूत लिपिं जपेत् ॥ तत्र मंत्रः ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ॥ इति भूत लिपिं जपित्वा पश्चादु-
गूलर वृक्ष दुंबर वृक्षस्य पर्णागुल लेखन्या वा ज्ञान वृक्षस्य जास वंदस्य जाति संज्ञकस्य पलाशस्य वा लेखन्याष्टांगुल प्रमाणया क्षीर वृक्षपट्टोपरि कुंकुमेन नवकोष्ठांकितं
इसी क्रमसे भरो कृत्वा एकं पूरयेत् ।(तथा च- पूर्वे १ नैऋत्ये २ सौम्ये ३ वायव्ये ४ मध्ये ५ आग्नेये ६ याम्ये ७ शैवे ८ वारुणे ९ इति क्रमेण एकमारभ्य पूरयेत् ॥ ततः पूजनको
यह मंत्र बोलते जाओ (ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा" इति भद्रेश्वर मंत्रेण वाहनादि षोडशो पचारैः संपूज्य तद ग्रेऽष्टोत्तर शत

१०८ बार मूलमंत्रजपोपूजन यंत्र का करके। फिर विनियोग करे

वारं भद्रेश्वर मंत्रं जपेत। (तथाच - अस्य भद्रेश्वर मंत्रस्य स्वर्णा कर्षण भैरवऋषि:। विराट्छंद: भद्रेश्वरो देवता। ह्रीं बीजम्। भद्रं शक्ति: पूरयेति कीलकम्। भद्रेश्वर प्रीतये जपेविनियोग:)। ॐ

न्यास (ॐ स्वर्णा कर्षण भैरवाये नम: शिरसि १। विराट् छंदसे नम: मुखे २। भद्रेश्वर देवताये नम: हृदि ३। ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये ४। भद्रं शक्ये नम: पादयो: ५। पूरयेति कीलकाय नम: नाभौ ६। विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे ७। इति ऋषियादिन्यास:॥ (ॐ भद्रेश्व अंगुष्ठाभ्यां नम: १। भद्रं तर्जनीभ्यां नम: २। पूरय मध्यमाभ्यां नम: ३। भद्रेश्वर अनामिकाभ्यां नम: ।४ भद्रं कनिष्ठिकाभ्यां नम: ५। पूरय करतल कर पृष्ठाभ्यां नम: ६। इति करन्यास:॥ ॐ भद्रेश्व हृदयाय नम: १। भद्रं शिरसे स्वाहा २। पूरय शिखाय वषट् ३। भद्रेश्वर कवाचाय हुं ४। भद्रं नेत्रात्रयाय वौषट् ५। पूरय अस्त्राय फट् ६॥ इति हृदयादि षडगन्यास:॥ एवं न्यासं कृत्वा भद्रेश्वरं ध्यात्वा

एक अंक से नवों अंक तक क्रमशः नवदुर्गा पुजन करें फिर एकसे नवों अंक तक इन्द्रादीकों की।

१०८ बार जप फिर करें

"ॐ महेश्वर मह्यं पूरय पूरय स्वाहा" इति मंत्रमष्टोत्तर शत वारं जपेत्॥) इति जपं कृत्वा एकाद्यंकक्रमेण नवदुर्गा, नवग्रहान, इन्द्रादीन् वज्रादींश्च संपूज्येत्॥तद्यथा च प्रथमांके (आवाहन) ॐ शैलपुत्र्यै नमः १। द्वितीयांके ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः २। तृतीयांके ॐ चन्द्रघण्टायै नमः ३। चतुर्थांके ॐ कूष्माण्डायै नमः ४। पंचमांके ॐ स्कन्दमात्रे नमः ५। षष्ठांके ॐ कात्यायन्यै नमः ६। ॐ सप्तमांके ॐ कालरात्र्यै नमः ७। अष्टमांके ॐ महागौर्यै नमः ८। नवमांके ॐ सिद्धदात्र्यै नमः ९॥ (इसके बाद) ॐ आदित्याय नमः १। ॐ चन्द्रमसे नमः २। ॐ भौमाय नमः ३। ॐ बुधाय नमः ४। ॐ जीवाय नमः ५। ॐ शुक्राय नमः ६। ॐ शनिश्चराय नमः ७। ॐ राहवे नमः ८। ॐ केतवे नमः ९। (इसके बाद) ॐ इन्द्राय नमः १। ॐ अग्नये नमः २। ॐ यमाय नमः ३। ॐ नैऋत्ये नमः ४। ॐ वरुणाय नमः ५। ॐ वायवे नमः ६। ॐ कुबेराय नमः ७। ॐ ईशानाय नमः ८। ॐ ब्रह्मणे नमः ९। ॐ अनन्ताय नमः १०। (इसके बाद) ॐ वज्राय नमः १। ॐ शक्त्यै नमः २। ॐ दण्डाय नमः ३।

ॐ खड्गाय नमः ४। ॐ पाशाय नमः ५। ॐ अंकुशाय
नमः ६। ॐ गदायै नमः ७। ॐ त्रिशूलाय नमः ८।
ॐ पद्माय नमः ९। ॐ चक्राय नमः १०॥ इति पूजयेत्
ॐ महेश्वराय नमः॥ इति महेश्वरं संपूज्य कृष्णागुरु ॥
धूपं दत्त्वा सुगंध तैलेन घृतेन वा दीपं प्रज्वाल्य

(गुरमा) — गुडान्नेन नैवेद्यं समर्प्य नमस्कारं कृत्वा।
विलिखेत् ॥ पुनः द्वितियतदेव लेखनीयं पुन
रपि महेश्वर मंत्रमष्टोत्तर शतं जपेत् ॥ पुनरपि

नियमसे लिखे — नियमेन लेखनीयमेवं पंचदशसहस्त्रा ~~लिखेत्~~ ॥
सिद्दिर्भवति ~~दशांश करवीर पुष्प होम~~:॥ ~~एतस्मिन~~

भोजपत्र में लिख के पूजन करके १५ हजार जपे। — एतस्मिन्सिद्धे यंत्रे कागदे भुर्जपत्रे वा लिखित्वा
तदग्रे महेश्वरमूलमंत्रं पचदशसहस्त्रं जपेत् ॥

कनेर) | तत् दशांशेन करवीर पुष्प होमः॥ तत् दशांशेन तर्पण
मार्जन ब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् ॥ पश्चाद्यंत्रं

त्रिलोह के बेन ढोलनामें भर के कंठमें पहने — त्रिलोह मृदंगे क्षिप्त्वा कंठे वा दक्षिणे करे
धारयित्वा ततः प्रयोगान् मनोऽभिप्सितान्
कुर्यात् ॥ तथाच - शिव रहस्ये - हस्तार्के
हर जाति के लिये लिखती हूं फिर बा। से लिखे मन्त्र १५ हजार

गुरुवार शुक्रवार को ब्राह्मण [illegible] लिखे। मंगल को क्षत्री लिखे। बुध को शूद्र लिखे। सोमबार से ब्राम्हण लिखे। मलेक्ष शनिसे लिखे। राजा इतवार से लिखे। रविपुष्य हो।
सूर्य जब हस्त या पुष्य मे। मूल नक्षत्र में हो, और बार ऊपर लिखे हैं जिसे जब करना होगा।
॥ शिवरहस्य में लिखा है।
पुष्यार्के या मूलार्के जब हो चंपा की कलम से लिखे या चम्पा की क़लम

से — पुष्यमूले तु शुचिर्भूत्वा समाहितः ॥ चंपकस्य च लेखन्या शुद्ध यंत्रं लिखेत्सुधी: ॥१॥ पंच दशह सहस्राणि क्षीर वृक्षस्य पट्टके ॥ ततः सिद्धं भवेद्यंत्रं धारयेत्साधकोत्तमः ॥

॥२॥ कंठे वा दक्षिणे बाहौ प्रयोगानाचरेत्ततः ॥ ततो यथोक्तं लभते फलं यंत्रस्य निश्चितम् ॥ ३॥ पुरश्चर्यां बिना [illegible]

(बिना पुरश्चर्ण के सिद्धि नहीं होती) यो धयः कश्चित्सिद्धिमिच्छति ॥ स चक्षुषा विना रूपं दर्पणे द्रष्टुमिच्छति ॥ पुरश्चरण संपन्नः प्रयोगानथ कारयेत् ॥४॥ अथ प्रयोगः ॥ (तत्रादौ वर्णभेदेन वारभेदः - गुरौ शुक्रे तु विप्राणं (कुजार्को क्षात्रस्य) च ॥ (बुधो हि शूद्र वर्णस्य) (सोमो वैश्यस्य कीर्तितः) ॥५॥ (म्लेच्छस्य शनिवारः स्याल्लिखित्वा) दीयते यदि ॥ तदा शुभ फलं तस्य जायते नात्र संशयः ॥६॥ (राजा हि रविवारे स्याद्धस्त पुष्य समान्विते ॥ श्रवणे मूल संयुक्ते व्यतीपातादि वर्जितो ॥७॥ अथ कार्य परत्वेन दीपमाह - राजवश्ये धनाप्तौ च स्थापयेदुत्तरामुखम् ॥ उच्चाटने च मरणे दीपं दक्षिण सम्मुखम् ॥८॥ कर्तव्यं विधिवत्पुंसां प्रयोगाणां च सिद्धये ॥ धनाप्तौ वश्य कार्ये च गोघृतं दीपके न्यसेत् ॥

(श्रवणमूल व्यतिपात इत्यादिन पड़े तो शुभ दिन न दे।)

प्रयोग के बार और यन्त्र देने के बार हैं।	गुरु वार शुक्र वार को ब्राम्हण पर प्रयोग करे। मंगल को क्षत्री पर करे। सोम्बार को वैश्य पर करे। बुधवार को शुद्र पर करे। शनि वार को म्लेक्ष पर करे। रवि पुष्य को राजा पर प्रयोग करे। श्रवण मूल व्यतिपात योग वर्जित है।
	~~सार्वपं सजिका भवम् ...~~
कार्यानुकूल दीप मुख -	धन प्राप्ती के लिये राजा वशी करण के लिये गो घृत रहे उत्तर मुख बत्ती रहे दीप की॥ उच्चाटन मारण में दक्षिण मुख बत्ती रहे। उच्चाटन मारण में घी सरसों के तेल का दीप जलावे
आकर्षणगुलकी कलम निर्णय	आकर्षण ~~मोहन~~ वशी में ~~स्वर्ण~~ चांदी की कलम से लिखे मोहन में स्वर्ण की कलम रहे या काक पक्ष की रहे। शान्ती के लिये पीपल की कलम से स्तम्भन में हल्दी की कलम से उच्चाटन विद्वेषण में लोह की कलम रहे।
चन्दन	लाल चन्दन कपुर से वशी में कस्तुरी से स्वर्णाकर्षण में हल्दी से स्तम्भन में केसर से देव दर्शन वास्ते धतूरे के रस से मारण में विद्वेषण में - ' चन्दन से शान्ती में

ब्राह्मण को भोजपत्र पर सर्व लिख कर देवे, क्षत्री को ताड़ के पत्र पर लिख कर दे। वैश्य को कागज पर लिख कर देदे।

उच्चाटन मारण मे राई का तेल जलावे

धी राई

उच्चाटने मारणे च सार्षपं राजिकाभवम् ॥९॥
अथ वर्णभेदेन पत्रभेदः — ब्राह्मणो विलिखेद्भूर्जे ताडपत्रे तु भूमिभू ॥ वैश्यस्तु विलिखेद्देवि कागदे सर्वसिद्धये ॥१०॥ शूद्रो हि विलिखेद्देवि भूमिभागे प्रयत्नतः यवनस्यापि कथितः कागदस्तु मयातव ॥११॥ अथ कार्यपरत्वेन लेखनीमाह — अश्वत्थया लिखेच्छान्तौ वैदूर्ये

जातिभवा मॉन चमेली

जातिभवा मता ॥ स्वर्णया विलिखेद्यत्नान्मोहनार्थं स्वसिद्धये ॥१२॥ रौप्या विलिखेद्यत्नात्सर्वाकर्षणसिद्धये ॥ काकपक्षस्य लेखन्या मोहनार्थं लिखेद्विधौ ॥१३॥ स्तम्भनार्थं तु विलिखेल्लेखन्या तु हरिद्रया ॥ विपाशया तु लेखन्या ताम्रया वा विधीयते ॥१४॥ उच्चाटने द्वेषणे च लौहया संलिखेत्सदा ॥ लेखन्या लक्षणं देवि प्रोक्तमष्टांगुलं यतः ॥ पंचतत्व क्रमेणैव पंच कार्याणि साधयेत ॥१५॥ अथ कारत्वेन गंधमाह — कारके नैव विलिखेद्वशीकरण सिद्धये ॥ कस्तूर्या विलिखेद्देवि स्वर्णाकर्षण सिद्धये ॥१६॥

प्रेतांगारण
मोनमंड
के कोयले
की स्याहीसे
मोतकरसन
मोते
बहेड़ा छिल
की स्याही
बनावे

हरिद्रया तु विलिखेत्सर्वस्तंभन कर्माणि ॥ केसरेण
लिखे द्वौवि देवता दर्शनाय वै ॥१७॥ धतूरस्य
रसेनैव मारणार्थं लिखेत् वै ॥ प्रेतांगारेण
विलिखेच्छत्रोरुच्चाटने सदा ॥१८॥ विद्वेषणे तु
विलिखेद् मोतक रसेन वै ॥ चंदनेन लिखेच्छांतौ
विशेष: कथ्यते श्रुणु ॥१९॥ अथ कार्यपरत्वेनांक
माह एकेनांकेन यंत्रस्य भरणं साधक परम् ॥
ददाति हनुमानद्धा दर्शनं सुखदायकम् ॥२०॥
युग्मेनांकेन भो देवि राजा वश्यो भवेद् ध्रुवाम्
॥ तृतियांकेन भरणे यंत्रं व्यापार लाभदम् ॥२१॥
वेदांकेन भरेद्यस्तु शून्यं तच्छत्रु मंदिरम् ॥
पंचांक भरणं प्रोक्तं शत्रु उच्चाटन कारकम् ॥२२॥
बसुनंद रसै श्चैक नेत्र वेदाग्नि बाणकै: ॥ मन्त्र्यवांमयाँ
क्रमाद्धाम मारणे दुर्जने कृते ॥२३॥ इन्दुश्च भौमे
वुध जीवौ [illegible] शुक्रा: शनिश्च राहु: शिखि रविसूर्यके
च ॥ एतास्तु गत्या क्रमतो लिखित्वा यंत्रे नृपालं
वशगं करोति ॥२४॥ भौमेन्दु राहुन गुरु

सौम्यं केतुश्चार्कश्च शुक्र गुरु शनिं क्रमेण ॥ विलिख्य
यंत्रे युवीतश्च वंध्या अश्वेर्गगै यमित्र गतैस्तु पार्श्वे:
॥२५॥ लिखित्वा यन्त्र वर्य तं कण्ठे कट्यां च धारयेत्
॥ वंध्या वै लभते पुत्रं मृत वत्सा चिरायुषम् ॥२६॥
वेदाग्नि वसु मिश्चैव चन्द्र बाण ग्रहैस्तथा ॥ नेत्र भूमी
रसैश्चैव यंत्रं निगड भंजनम् ॥२७॥ बाणं षण
मुनि नेत्रैश्च ग्रहैस्तत्र युगैस्तथा ॥ वह्नि वसु स्वरूपैश्च
लिकष्टेन धनं लभेत् ॥२८॥ अंगश्च सप्त द्विनेत्रौ
व्धि मिश्च वैश्वानरै नागै सुधांशु बाणौ: ॥ यन्मात्रिगे
भूपति खेलधामैराकर्षणं मित्र रिपु प्रभूणाम् ॥२९॥
सेन्दु गौ
मार्तण्ड ...
शनिश्च राहु शि रवि चन्द्र गौ च गुरुश्च शुक्रौ रवि
चन्द्र भौमा: ॥ अश्वे [illegible]ते मात्र गतैस्तपार्श्वे कृत्वा
टनं - सर्व जनादि का नाम् ॥३०॥ अथ कार्य परत्वेन
संख्या माह ॥ दश वारं तु विनस्य लोक संमोहनं भवेत् ॥
विंशत्या वर्त्य चैतद्धि सर्वाकर्षणकृद्भवेत् ॥३१॥ त्रिंश
द्वारं तु कृत वेदं पृथिव्यां जयमाप्नुयात् ॥ चत्वारिंशत
समारभ्य शतांतं परमेश्वरि ॥३२॥ यः करोति महेशानि
पुरश्चर्या युतो नरः ॥३३॥ अयुतं विलिख्य द्वि वंदि
मोचन कर्मणि ॥

अयुतद्वितयं कृत्वा गतराज्यमवाप्नुयात् ॥३४॥
अयुतत्रितयं कृत्वा विजयी भुवि जायते ॥ शापा
नुग्रहसमर्थः स भवेद्वेदायुत शिवे ॥३५॥ बाणायुत
प्रयोगेण वाक्सिद्धिर्भवति ध्रुवम् ॥ रसायुतं
लिखित्वा च जलमध्ये विनिक्षिपेत् ॥३६॥
जलक्षेपणमार्गेण पूर्वाशां तु वशं नयेत ॥ सप्ता
युतं लिखेद्देवि साक्षाल्लक्ष्मीपतिर्भवेत् ॥३७॥
अष्टायुतं लिखेद्देवि सिद्धिकर्मसमाप्नुयात् ॥ नंदा
युतं लिखेद्देवि नवनाथसमो भवेत् ॥३८॥ लक्ष
मेकं लिखेद्यो हि शिवतुल्यो भवेत्स तु ॥ प्रत्यहं
विलिखेद्देवि हि शतं वा तत्तदर्धमकम् ॥३९॥ एवं
क्रमेण कथिता पुरश्चर्या प्रिये मया ॥ एवं यः कुरुते
मर्त्यस्तस्य सिद्धिर्भविष्यति ॥४०॥ इति संक्षेपतः
प्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥४१॥ अथ कार्यपरत्वेन
दूसरी विधि सिद्धि करने की क्रिया प्रयोगमाह- अथातः संप्रवक्ष्यामि विधिं यन्त्रस्य
सिद्धिदम् ॥ लक्षं यंत्रसमालिख्य सिद्धपीठे
शुभे दिने ॥४॥ भूमिमध्ये शुद्धचित्तो
भूमिशायी जितेन्द्रियः ॥ हवनादि प्रकर्तव्यं

सर्षप
सरसों

सर्षपैघृततंडुलैः ॥४३॥ शर्करामिश्रितैश्चैव ~~वाचासिद्धि~~
वाक्सिद्धिः सं प्रजायते॥ देवरूपो भवेन्मर्त्यः सर्व
कामार्थ सिद्धिदः ॥४४॥ दुःखदारिद्र्यरहितः सर्व
पापैः प्रमुच्यते॥ सर्वं चराचरं पश्येच्छतजीवी भवे
न्नरः ॥४५॥ भूर्जपत्रे लिखेद्यंत्रं रोचनागुरुकुंकुमैः
॥ समर्च्य पुष्पधूपादि जलमध्ये विनिक्षिपेत ॥४६॥
रात्र्यंते लभते स्वप्ने वरं देवी समीरितम् ॥ जीवन
मुक्तश्च भोगी च सर्वान्कामानवाप्नुयात॥४७॥ देव
दत्तं महावीर्यं पंचदशीय यन्त्रकम् ॥ वीरप्रीतकरं
चैव लक्षजाप्ये कृते सति ॥४८॥ सदुग्ध माषं सतिलं
शर्करा घृत संयुतम् ॥ कृष्णपक्षे तु चाष्टम्यां बलिं
दत्वा सुवारके ॥४९॥ वशो भवंति ते वीराः प्राणेशप॥
सर्व कर्माणि सिद्धानि भवंति नात्र संशयः॥५०॥ एक
यंत्र समालेख्य यस्य कस्यापि कर्मणः ॥ क्षणमात्रा
द्भवेत्सिद्धिः सत्यं सत्यं न संशयः॥५१ पुनस्तान्निमि
तं - लेख्यं वह्निबीजेन होमयेत् ॥ वेश्या जान पदा
ग्राम्या दृष्टि मात्रेण किंकराः॥५२॥
पुनस्तत्वान्मितं लेख्यं गर्ते शुद्धभुवि क्षिपेत॥

जीसि
पट्टिके

वीजंजपंस्तु तत्सर्वं पूरयेद्द्धुद्धेमृत्सनया ॥५३॥
तदा सर्वं महीराज्य कर्ता हर्ता स्वयं प्रभुः ॥ऽष्टौमहा
सिद्धयश्च तस्य हस्ततले स्थिताः ॥५४॥ वंधये दृक्षहस्ते
तुलिखे द्गजीसपट्टके ॥ ततस्तं वामहस्तेन तु येवीजं
च संस्मरन् ॥५५॥ पाशैश्च निगडैः सर्वैः सद्य
स्वविमुच्यते ॥५६॥ऽथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं
च महाद्भुतं ॥ रवौवारेऽर्कदुग्धेन स्मशानभस्मना
लिखेत् ॥५७॥ यस्य वर्णस्य नामानि चितामध्ये
विनिक्षिपेत् ॥ विक्षिप्तो जायते [illegible] मर्त्यश्चा
ष्टोत्तरशतं जपेत् ॥५८॥ पंचदशं विलोमं च संध्या
कालेविशेषतः ॥ यंत्रं च लिखितं सम्यग्बाहौ कंठे
च धारयेत् ॥५९॥ राजापि वशमाप्नोति चान्य
लोकस्य काकथा ॥६०॥ चन्द्रवारे गृहीत्वा तु
नागकेशररोचनम् ॥ सर्षपाणां तु तैलेन लिखे
द्यंत्रं महोत्तमम् ॥६१॥ वर्तिका क्रियते यस्य
चालयेन्मंत्रभावतः ॥ नृकपाले कज्जलं तं स्वजनं
मोहनं भवेत् ॥६२॥ गुरुवारे हरिद्राभ्यां सर्पिस्तगर
रोचनैः ॥ यंत्रराजं समालिख्य तस्यनाम चमध्यतः
॥६३॥

वर्तिका
जोत बत्ती

निखने

ग्रासने ~~निखेन~~ चैव सर्वकामार्पणं भवेत् ॥६४॥
अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं महाद्भुतम् ॥ भृगु वारे
सकर्पूरं वचा कुष्ठेन संलिखेत् ॥६५॥ लिखितं यंत्रराजं
तु भुर्ज पत्रे सुशोभनम् ॥ दृष्ट्वा स्त्री वशमाप्नोति
प्राणैरपि धनैरपि ॥६६॥ शनि वारे चिताकाष्ठा
त्पंचदशे विलोमके ॥ लिखिते रिपुनाम्ना तु श्मशाने
निखेन भुवि ॥ कुक्कुटस्याक्षि रेकेन म्रियते नात्र
संशयः ॥६७॥ अथातः - संप्रवक्ष्यामि यंत्रराजविधिं
तव ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपितं न प्रकाशयेत्
॥६८॥ वटवृक्ष तले यंत्रं भूमि मध्ये ततो लिखेत् ॥
वट शाखा लेखन्या कृष्ण पक्षे चतुर्दशी ॥७०॥
तत्रारंभं प्रकुर्वीत नरोऽत्यंतं समाहितः ॥ कृते युते
धर्म काम मोक्षार्थान्प्राप्नुयाद्ध्रुवम् ॥७१॥ दाडिमी
वृक्ष लेखन्या ~~कृष्ण पक्षे~~ ~~चतुर्दशी~~ भूमौ यंत्र
सहस्रकम् ॥ लिखितं बंध मोक्षादि करं स्वामि
वशं करम् ॥७२॥ ब्रह्मवृक्षस्य लेखन्या यंत्रं ~~पंच~~
पंच शतं लिखेत् ॥ भूमि मध्ये तु दारिद्र्य नाशनं भवति
ध्रुवम् ॥७३॥

निखने भुवि
माने खोदके
गाढ़ दे

मनःशिला च गोमुत्रं कर्पूरं तगरं तथा ॥ भूर्जे
लिखेत्सहस्त्रं [illegible]अश्वत्थ वृक्ष मूलतः ॥७४॥
यं यं चिंतयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥
प्राप्नोति विपुलान्भोगानिंद्रतुल्यो नरो भवेत् ॥
७५॥ मनःशिला बिल्व रसे हरितालेन यंत्रकम्
॥ बिल्व शाखासु लेखन्या सहस्त्र त्रितयं लिखेत्
॥७६॥ एकांते च शुभ स्थाने भूमि मध्ये तथैव च ॥
वाक्सिद्धिर्जायते तस्य नान्यथा शंकरोदितम् ॥७७
अर्कपत्र रसेनैव अर्क पत्रे समालिखेत ॥ अष्टो
त्तर सहस्त्रं तु रिपु नाम समन्वितम् ॥७८॥
किंकिरी वृक्ष बंधेन ज्वारादि देह शलकः ॥
जायते नात्र संदेहो यदि शक्र समो रिपुः ॥७९॥
हरिद्रालिखितं यंत्रं जलेनैव तु घर्षयेत् ॥ अष्टो
त्तर शतं चैव मध्य पाषाण स्तंभनम् ॥८०॥
रिपुद्वारे खने भूमौ सिंहो कंठे तु यंत्रकम् ॥
कलहो जायते नित्यं भ्रातृ पुत्रादि बंधनात् ॥८१
अपामार्ग रसेनैव लिखेद्यंत्रं तु भूर्जके ॥

तिथि
७-५-१
४-३

तीन [illegible]

एकाह्निकस्तृतीयाख्यश्चतुर्थज्वर नाशनम् ॥ ८२॥ भृंग
राजरसे नैव लिखेद्यंत्रं सु भूर्जके। धारयेद्धृदये बाहौ
विवादे विजयी भवेत ॥ ८३॥ अथ विशमांक पंचदशी
विधानम् - दक्षिणा मूर्तिरुवाच - शृणुष्वावहिता
भूत्वा गिरिजे प्राणवल्लभे ॥ एकत्र्यं परमार्थेन
तथापि कथयाम्यहम् ॥ ८४॥ विषमान्येकयंत्राणि
कथ्यंते परमं शृणु ॥ नव कोष्ठात्मके यंत्रे द्वितीये
सप्तमे तथा ॥ ८५॥ रस संज्ञोऽथ नवमे पंचमे प्रथमे
चतुर्थे च तृतीये च वसु संज्ञे लिखेद् बुधः ॥ ८६॥
तिथ्यं संख्या जायते षट् कर्माण्यत्र साधयेत् ॥ सु
दिने त्वष्ट गंधेन होम पूजा पुरः सरम् ॥ ८७॥ प्रारंभे
नियताहारः कार्य गौरव लाघवात् ॥ लिखेत्सहस्र
दशकं न्यूनेत्वर्धार्ध मानकम् ॥ ८८॥ त्रिसप्त दिन
मध्ये तु कार्य सिद्धिर्न संशयः ॥ षष्ठाद्याह्यमाद्यापि
चतुर्थाद्या लिखेत् सुधीः ॥ त्रिगुणं त्रिविभक्तं च नव
कोष्ठेषु संलिखेत् ॥ ९०॥ भूर्जे वा स्वर्ण मुद्रायां
लिखित्वा देह संगतम् ॥ एतद्दर्शन मात्रेण नश्यंति
यम किंकराः ॥ ९१॥

बहुना किमिहोक्तेन प्रत्ययो ह्यस्य सूचकः।।
लिखेत्सहस्त्रसंख्याकं जलेन तु विलेपयेत।।
बंदि मोक्षस्तदा देवि नात्र कार्या विचारणा
।।७२।।

नवग्रह शान्ति में क्रम समझो

यह ग्रह शांति यन्त्र है।

रा 8	सूर्य 1	शुक्र 6
मं 3	5 गुरु	शनि 7
4 बुध	9 के	चं 2

यदि सूर्य की दशा जातक की खराब चल रही हो तो कोष्ठ में जहां (1) संख्या लिखी है वहां (ह्रीं) बीज लिखदो और सूर्य का मंत्र पढ़कर आवाहन पूजन करो

यदि चन्द्र की दशा खराब चल रही हो तो जहां 2 अंक कोष्ठ में है वहां (ह्रीं) बीज लिखदो और चन्द्र का मंत्र पढ़ कर आवाहन पूजन करदो। यदि मंगल खराब चल

रहे हों तो जहां ३ अंक हो वहां (ह्रीं) बीज लिख दो
और मंगल का मंत्र पढ़कर आवाहन करो पूजन करो
अब तो समझ में आ गया होगा इसी तरह नवों कोष्ठ
में नवो ग्रह हैं। याद के लिये कोष्ठों में, हर ग्रहों के नाम
जिसका जो अंक था भर दिया। अब हर ग्रह का मंत्र
लिख दिया। ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्याय नमः नमः

ॐ आदित्याय नमः) ॐ आदित्याय आवाहयामि स्थापयामि न
ॐ चन्द्रमसे नमः)
ॐ भौमाय नमः) पिप्पलपत्रे वा सप्तपत्रेपत्रे
ॐ बुधाय नमः) लिखित्वा पिप्पल मूले स्थापनीयम्॥
ॐ जीवाय नमः) एवमष्टाविंशति दिन पर्यंतं कृते
ॐ शुक्राय नमः) ग्रहाः प्रसन्ना भवंति पीडां न
ॐ शनिश्चराय नमः) कुर्वंति ॥ ५४॥ अथ यंत्राणां वर्ण
ॐ राहवे नमः) भेदः - प्राच्यामारभ्य च पुनः
ॐ केतवे नमः) पश्चिमायां समाप्यते ॥ सलिलयंत्रं
तु विज्ञेयं विपरीतं तु तैजसम् ॥ ५५॥ दक्षिणस्यां
समारभ्य सौम्यायां च समाप्यते ॥ वायवीयं भवद्यंत्रं
विपरीतं तु पार्थिवम् ॥ ५६॥

८	१	६
३	५	७
४	९	२

मेष वृश्चिक

[illegible]	[illegible]	४
१	५	९
६	७	२

मिथुन

६	७	२
१	५	९
८	३	४

तुला

२	९	४
७	५	३
६	१	८

धन

अनुलोम विलोमाभ्यां चत्वारोऽपि द्विधा द्विधा ।। अष्ट भेदा भवंति स्म चतुर्वर्णा द्विभेदतः ।। आद्यं यंत्रं शिवमयं ह्यस्यास्ति महिमाऽद्भुतः ।।७०।। इति पंचदशी विधानं समाप्तम् ।। २।।

नृसिंह मंत्र प्रयोगः (शारदातालिके मंत्रो यथा

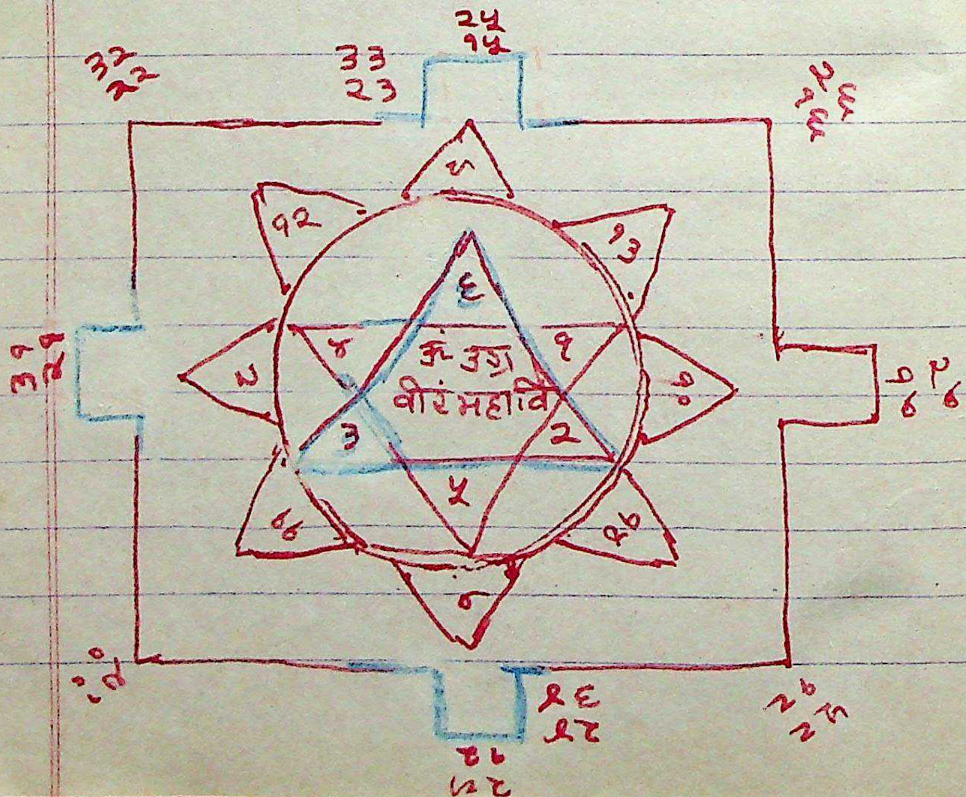
ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलंतं सर्वतो मुखम् ।। नृसिंहं भीषणं
भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ।।१।। "इति श्लोक रूप मंत्रः ।।
अस्य नृसिंह मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप छन्दः। सुरा
सुरनमस्कृत नृसिंहो देवता। सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः
ॐ ब्रह्म र्षये - नमः शिरसि ।।१।। अनुष्टुप छन्दसे नमः
मुखे ।।२।। श्री नृसिंह देवतायै नमः हृदि ।।३।। विनियोगाय
नमः सर्वाङ्गे ।।४।। इति ऋष्यादि न्यासः ।। ॐ उग्रवीरं
अंगुष्ठाभ्यां नमः ।।१।। महाविष्णुं तर्जनीभ्यां नमः ।।
।।२।। ज्वलंतं सर्वतो मुखं मध्यमाभ्यां नमः ।।३।। नृसिंह
भीषणम् अनामिकाभ्यां नमः ।।४।। भद्रं मृत्युं मृत्युं
कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।।५।। नमाम्यहं करतल कर
पृष्ठाभ्यां नमः ।।६।। इति करन्यासः ।। ॐ उग्रं वीरं
हृदयाय नमः ।।१।। महाविष्णुं शिरसे स्वाहा ।।२।।
ज्वलंतं सर्वतो मुखं शिखायै वषट् ।।३।। नृसिंह
भीषणं कवचाय हुं ।।४।। भद्रं मृत्युमृत्युं नेत्रत्रयाय
वौषट् ।।५।। नमाम्यहं अस्त्राय फट् ।।६।। इति ।।
हृदयादि षडंग न्यासः ।। ॐ उं नमः शिरसि ।।१।। ॐ
ग्रं नमः ललाटे ।।२।।

ॐ वों नमः नेत्रयोः ॥३॥ ॐ रं नमः मुखे ॥४॥
ॐ मं नमः दक्षिण बाहु मूले ॥५॥ ॐ हां नमः दक्षिण
कूर्परे ॥६॥ ॐ विं नमः दक्षिण मणि बन्धे ॥७॥ ॐ
ष्णुं नमः दक्ष हस्तांगुलि मूले ॥८॥ ॐ वं नमः दक्ष
हस्तांगुल्यग्रे ॥९॥ ॐ लं नमः वाम बाहु मूले ॥१०॥
ॐ तं नमः वाम कूर्परे ॥११॥ ॐ सं नमः वाम मणि
बन्धे ॥१२॥ ॐ वं नमः ॐ वे नमः वाम हस्तांगुलि
मूले ॥१३॥ ॐ तों नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥१४॥
ॐ मुं नमः दक्ष पाद मूले ॥१५॥ ॐ खं नमः दक्ष
जानुनि ॥१६॥ ॐ नं नमः दक्ष गुल्फे ॥१७॥ ॐ
खि नमः दक्ष पादांगुलिमूले ॥१८॥ ॐ हं नमः
दक्ष पादांगुल्यग्रे ॥१९॥ ॐ मीं नमः वामपाद
मूले ॥२०॥ ॐ षं नमः वाम जानुनि ॥२१॥
ॐ णं नमः वाम गुल्फे ॥२२॥ ॐ मं नमः वाम
पादांगुलि मूले ॥२३॥ ॐ द्रं नमः वाम पादांगु
ल्यग्रे ॥२४॥ ॐ मृं नमः कण्ठे ॥२५॥ ॐ
त्युं नमः कुक्षौ ॥२६॥ ॐ मृं नमः हृदये ॥२७

ॐ त्युं नमः गले ॥२८॥ ॐ नं नमः दक्षिणपार्श्वे ॥२९
ॐ मों नमः वामपार्श्वे ॥३०॥ ॐ ष्यं नमः लिंगे ॥३१॥ ॐ हं
नमः ककुदि ॥३२॥ इति मंत्रवर्ण न्यासः ॥ एवं न्यास
विधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ माणिक्याद्रिस
मप्रभं निजरुचा संत्रस्तरक्षोगणं जानुन्यस्तकरांबुजं
त्रिनयनं रत्नोल्लसद्भूषणम् ॥ बाहुभ्यां धृतशंखचक्रमनि
शं - दंष्ट्राग्रवक्त्रोल्लसज्ज्वालाजिह्वमुदग्रकेशनिचयं
वन्दे नृसिंहं विभुम् ॥१॥ इति ध्यात्वा सर्वतोभद्र
मंडले में " मंडूकादिपरतत्त्वांत पीठ देवताभ्यो नमः"
इति पीठ देवताः संपूज्य पीठे शक्तीः पूजयेत् ॥
तत्र क्रमः ॥ पूर्वादि क्रमेण ॐ विमलायै नमः ॥१॥
ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥२॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥
॥३॥ ॐ क्रियायै नमः ॥४॥ ॐ योगायै नमः ॥५॥
ॐ प्रह्व्यै नमः ॥६॥ ॐ सत्यायै नमः ॥७॥ ॐ
ईशानायै नमः ॥८॥ ॐ अनुग्रहायै नमः ॥९॥ इति
नवपीठशक्तिः संपूज्य स्वरादि निर्मित यंत्र
मध्ये तारशापूर्वकम् "ॐ नमो भगवते नृसिंहाय

दैत्य शत्रुसर्वात्म संयोग पद्मपीठाय नमः " इति
मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठ मध्ये संस्थाप्य
प्राण प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य
आवाहनादि पुष्पांतैः रूप चारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा
आवरण पूजां कुर्य्यात् ।। तत्र क्रमः ।। षट्कोण
केसरेषु आग्नेयकोणे

।। नृसिंह पूजन यंत्रम् ।।



आग्निकोणे ॐ उग्रवीरं हृदयाय नमः ॥१॥ नैऋत्ये ॐ महा
विष्णुं शिरसे स्वाहा ॥२॥ वायव्ये ॐ ज्वलंतं सर्वतोमुखं
शिखायै वषट् ॥३॥ ऐशान्ये ॐ नृसिंह भीषणं कवचाय
हुं ॥४॥ पूज्य पूजकयोर्मध्ये भद्रं मृत्यु मृत्युं [illegible]
नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ देवता पाश्चिमे ॐ नमाम्यहं
अस्त्राय फट् ॥६॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततोष्टदले
पूज्य पूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राची क्रमेण
प्राच्यां ॐ गरुण पक्षिराजाय नमः गरुण श्री पादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ इति सर्वत्र ॥ दक्षिणे
ॐ शंकराय नमः शंकर श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः ॥२॥ पश्चिमे ॐ शेषाय नमः शेष श्री पादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥ उत्तरे ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्म
श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥४॥ आग्निकोणे ॐ
श्रियै नमः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥५॥
नैऋत्ये ॐ ह्रियै नमः ह्री श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः ॥६॥ वायव्ये ॐ धृत्यै नमः धृति श्री पादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥७॥ ऐशान्ये ॐ पुष्टयै नमः पुष्टि श्री
पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥८॥

इत्यष्टौ पूजयेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ ततो
भूपुरे पूर्वादि क्रमेण ॥ ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्र
श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥१॥ ॐ रं अग्नये नमः
श्री अग्नि पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥
ॐ मं यमाय नमः यम श्री पादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥३॥ ॐ क्षं नैरृत्ये नमः निरृति
श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥४॥ ॐ वं
वरुणाय नमः वरुण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि
नमः ॥५॥ ॐ यं वायवे नमः वायु श्री पादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥६॥ ॐ कुं कुबेराय नमः
कुबेर श्री० पा० त० ॥७॥ ॐ हं ईशानाय नमः
ईशान श्री० पा० त० ॥८॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं
ब्रह्मणे नमः ब्रह्म श्री० पा० त० ॥९॥ वरुणनिरृतयो
र्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अनंत श्री० पा० त० ॥
॥१०॥ इति दश दिक्पालान् पूजयेत् ॥ तद्बाह्ये पूर्वादि
क्रमेण ॥ ॐ वं वज्राय नमः ॥१॥ ॐ शं शक्तये नमः
॥२॥ ॐ दं दंडाय नमः ॥३॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥ ४॥

ॐ पं पाशाय नमः ॥५॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥६॥ ॐ गं
गदायै नमः ॥७॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥८॥ ॐ पं पद्माय
नमः ॥९॥ ~~ॐ अं अंकुशाय नमः~~ ॐ चं चक्राय नमः ॥
॥१०॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इत्यावरण पूजां कृत्वा
धूपादि नीराजनांतम संपूज्य जपं कुर्यात् ॥ अस्य
पुरश्चरणं द्वात्रिंशल्लक्षजपः। तत्सहस्त्र होमः॥
तद्दशांशेन तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन च कुर्यात्।
एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे च मंत्रे मंत्री
प्रयोगान् साधयेत्। तथा च वर्णलक्षं जपेन्मंत्रं
तत्सहस्त्रं घृतप्लुतैः॥ पायसान्नैः प्रजुहुयाद्विधिवत्पू
जितेऽनले ॥१॥ एवं कृते भवेन्मंत्री सिद्ध मंत्रः
प्रतापवान् ॥ इत्थं जपादिभिः सिद्धे मनौ काम्यानि
साधयेत् ॥२॥ ॐ कोटि रविप्रभं नरहरिं कोटिरहा
रोज्ज्वलं दंष्ट्राभीम मुखे लसज्जाख मुखे दीर्घैर्नै
कैर्भुजैः॥ निर्भिन्नासुर नाथ मग्नि शशभृत्सूर्यात्मने
त्रत्रयं विद्युत्पुंजजटा कलाप भयदं वह्निं वमंतं
भजे ॥३॥ सौम्ये सौम्यं स्मरेत्कार्ये क्रूरे क्रूरमिमं
भजेत् ॥ श्री पुष्टेर्जुहुयान्मंत्री विल्व काष्ठेर्धितेऽ
नले ॥४॥

सहस्त्रं श्रियमाप्नोति पत्रैर्वा बिल्वसंभवैः ॥ प्रसूनैर्वा
फलैस्तद्वद् दूर्वाहोमाद् रोगताम् ॥५॥ मंत्रजप्तां वचां श्वेतां
भक्षयेत्प्रातरन्वहम् ॥ वाक् सिद्धिं लभते मंत्री वाचस्पति
रिवापरः ॥६॥ व्याघ्र चौर मृगादिभ्यो महारण्ये भया
कुलान् ॥ रक्षेन्मनुष्यं जप्त्वा भयेष्वन्येषु मंत्रिणः ॥७॥
अनेन मंत्रितं भस्म विषग्रह महाभयान् ॥ नाशयेद्
चिरादेव मंत्रस्यास्य प्रभावतः ॥८॥ घोराभिचार
सोन्मादे महोत्पाते महाभये ॥ जपेन्मंत्रं स्मरन्देवं
दुःखान्मुक्तो भवेन्नरः ॥९॥ सिंह रूपं महाभीमं
महा दंष्ट्रादि भीषणम् ॥ स्मृत्वात्मानं रिपुं
पश्चाद्ध्यायेन्मृगशिशुं रिपुम् ॥१०॥ गृहीत्वा गल
देशे तं पुनर्दिक्षु क्षिपेद् द्रुतम् ॥ पुत्रमित्र कलत्राद्यैः
उच्चाटो जायते रिपोः ॥११॥ पूर्वमृत्युपदे साध्यनाम
कृत्वा स्वयं हरेः ॥ निशितैर्नखदंष्ट्राद्यैः खंड्य
खंडयमानं रिपुं स्मरन् ॥१२॥ नित्यमष्टोत्तरशतं
जपेन्मंत्रमतंद्रितः ॥ जयते मंडलादीनां कुशानुर्वैवस्वत
प्रियः ॥१३॥ यंत्रं करोति विधिवच्छत्रु सेनानिवारणे ॥

बिभीतकाष्ठैर्ज्वलिते पावके रिपुमर्द्दनम् ॥१४॥ विचिंत्य
देवं नृहरिं संपूज्य कुसुमादिभिः ॥ समूलचूलैर्जुहुयाच्छ
र्दैर्दशशतं पृथक् ॥१५॥ रिपुखादाग्निवजपान्निर्मदाग्निव
तान्निक्षिपेत् ॥हुत्वा सप्त दिनं सेनामिष्टां मंत्री महीपतेः॥१६
प्रस्थापयेच्छुभे लग्ने परराष्ट्रजयेच्छया ॥ तस्याः पुरस्तान्नृ
हरिं निघ्नंतं रिपुमण्डलम् ॥१७॥ ध्यात्वा प्रयोगं कुर्वीत
यावदायाति सा पुनः ॥ विजित्य निखिलाञ्छत्रून् सह
वीरश्रिया सुखम् ॥१८॥ आगत्य विजयी राजा ग्रामक्षेत्र
धनादिभिः॥ प्रीणयेन्मंत्रिणं सम्यग् विभवैः प्रीतमानसः
॥१९॥ मंत्री यदि न संतुष्येदनर्थः स्यान्महीपतेः ॥ राजा
विजयमाप्नोति युद्धेषु विधिना मुना ॥ इति नृसिंहस्य
द्वात्रिंशदक्षरमंत्र प्रयोगः ॥१॥ इति विष्णुपटलः समाप्तः॥

प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग:

देशकालौ संकीर्त्य ममामुक देवता नूतन यंत्रे मूर्तौ वा प्राण प्रतिष्ठां करिष्ये इति संकल्प्य प्रतिष्ठां कुर्य्यात् ऽस्य प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्म विष्णु महेश्वरा ऋषय:। ऋग्यजु:सामानि छंदांसि। क्रियामय वपु: प्राणाख्या देवता। ऽऽं बीजम्। ह्रीं शक्ति:। क्रौं कीलकम्। ऽस्मिन्नूतन यंत्रे मूर्तौ वा प्राण प्रतिष्ठापने विनियोग:॥ इति जलं क्षिपेत॥ तत: करेणा च्छाद्य ॐ ऽऽं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं स: सोऽहं ऽस्यामुक देवता सपरिवार यंत्रस्य प्राणाऽइह प्राणा:। पुन: ॐ ऽऽं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं स: सोऽहं ऽस्यामुक देवता सपरिवार यंत्रस्य जीवइह स्थित:। पुन: ॐ ऽऽं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं स: सोऽहं ऽस्यामुक देवता सपरिवार यंत्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि। पुन: ॐ ऽऽं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं स:। सोऽहं ऽस्यामुक देवता सपरिवार यंत्रस्य वाङ् मनस्त्वक्चक्षु: श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणि पाद पायुपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा। इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वा० विधेम सन्निति
त्रिवारं पठेत् ॥ मनोज्योतिर्जुषता० सुप्रतिष्ठा
इत्युक्त्वा संस्कार सिद्धये पंचदश प्रणवावृत्तीः कृत्वा
अनेन अमुक देवता सपरिवार यंत्रस्य गर्भाधानादि
पंचदश संस्कारान्संपादयामि इति वदेत (ऐसा कहे)
ततः (फिर) ॐ यंत्रराजाय विद्महे महायंत्राय धी
महि तन्नो यंत्रः प्रचोदयात् ॥ इति अष्टोत्तर
शतेनाभिमंत्र्य मूल देवतां ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं
प्रकल्प्यावाहयेत् ॥ अर्घ पाद्यादि पूजनम् ॥ अक्षता
नादाय- देवेश भक्ति सुलभ परिवार समन्वित ॥
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह ॥१॥ आगच्छ
भगवन् देवस्थाने चात्र स्थितो भव ॥ यावत्पूजां करिष्यामि
तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥२॥ मूलं पठित्वा - ॐ भूर्भुवःस्वः
श्री अमुक देव ~~इह सन्निधेहि~~ । (~~ऐसा कहकर अक्षत~~
~~डाले~~) इहागच्छ इह तिष्ठ (ऐसा बोलके अक्षत डाले
(आवाहनी मुद्रा बनावे) तवेयं महिमा मूर्तिस्तस्यां
त्वं ~~सर्व~~ सर्वग प्रभो ॥ भक्तिस्नेह समाकृष्ट दीप
वत्स्थापयाम्यहम् ॥१॥

मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देव इहतिष्ठ (ऐसा कह कर अक्षत डालदे) अनन्या तव देवेश मूर्ति शक्तिरियं प्रभो॥ सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्त्यानुग्रहतत्पर:॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्री अमुक देवते इह सन्निधेहि। (अक्षत छोड़े) आज्ञया तव देवेश कृपांभोधे गुणांबुधे॥ आत्मानं दैकतृप्तं त्वां निरुणाध्मि पितर्गुरो॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवते इह सान्निरुध्य (अक्षत छोड़े) इति सन्निरोधनम्॥४॥ अज्ञानाद् दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च॥ यद् पूर्णं भवेत्कृत्यं तदप्यभि मुखो भव॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देव इह सम्मुखो भव॥ (अक्षत छोड़े) अमक्क वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्र दूरातिगच्छते॥ स्वतेजः पञ्जरेणाशु वेष्टितो भव सर्वतः॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देव अवगुण्ठितो भव। (अक्षत छोड़े) इत्यवगुण्ठनम्॥६॥ यस्य दर्शन मिच्छंति देवाः स्वाभिष्ट सिद्धये॥ तस्मै ते परमेशाय स्वागतं च मे॥ ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवते

समर्पयामि॥
सुस्वागतम्॥७॥ देव देव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते
॥ आसनं दिव्यमीशाना द्दास्येऽहं परमेश्वर ॥१॥
मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः
आसनं समर्पयामि ॥८॥ इत्यासनं दत्वा करौ बद्ध्वा
प्रार्थयेत् ॥ स्वागतं देव देवेश मद्भाग्यात् त्वमिहागतः
॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥१॥ मूलं
पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः प्रार्थनां
समर्पयामि नमस्करोमि ॥८॥ यद्भक्ति लेश संपर्कात्परमा
नंदविग्रह। तस्मैते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय
कल्पये ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय
नमः पाद्यं समर्पयामि। इति सामान्यार्घोदकेन शंखो
दकेन वा पाद्यं दद्यात् ॥ इति पाद्यं ॥९॥ मूलं
पठित्वा तापत्रियहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् ॥
तापत्रियं विनिर्मुक्तस्तवार्घं कल्पयाम्यहम् ॥१॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः इदमर्घ्यं
समर्पयामि ॥ (अर्घ्य दे) ॥१०॥ सर्व कालव्य हीनाय
परिपूर्ण सुखात्मने ॥ मधुपर्कमिदं देव कल्पयामि
प्रसीद मे ॥१॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः मधुपर्कं समर्पयामि
॥११॥ वेदानामपि वेदाय देवानां देवात्मने।
आचमनं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धि हेतवे ॥१॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः आचमनं
समर्पयामि ॥१२॥ ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन
लोकनाथ महाशय। सर्वलोकेशु शुद्धात्मन्ददामि
स्नेह मुत्तमम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः
इति सुगंधतैलं समर्पयामि ॥१३॥ ॐ गंगा सरस्वती
रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः। स्नापितोऽसि मया देव
तथा शांतिं कुरुष्व मे ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक
देवाय नमः जल स्नानं समर्पयामि ॥१४॥ कामधेनु
समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ॥ पावनं यज्ञ हेतुश्च
पयः स्नानार्थ मर्पितं ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक
देवाय नमः पय स्नानम् समर्पयामि ॥१५॥ पयसस्तु
समुद्भूतम मधुराम्लं शशिप्रभम् ॥ दध्या नीतं मया
देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
अमुक देवाय नमः दधिस्नानम् समर्पयामि ॥१६॥

नवनीत समुत्पन्नं सर्व संतोषकारकम् ॥ घृतं तुभ्यं प्रदा
स्यामिस्नानार्थं प्रतिगृह्यतां ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक
देवायनमः घृत स्नानं समर्पयामि ॥ १७ ॥ तरु पुष्प
समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ॥ तेजः पुष्टि करं दिव्यं स्ना
नार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय
नमः मधुस्नानं समर्पयामि ॥ १८ ॥ इक्षुसार समुद्भूता
शर्करा पुष्टि कारका मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं
प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः
शर्करोदकस्नानं समर्पयामि ॥१९॥ पयो दधि
घृतं चैव मधु च शर्करा युतम् पंचामृतं मयानीतं
स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक
देवायनमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि ॥२०॥ मलयाचल
संभूतं चन्दनागरुसंभवम् ॥ चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं
प्रतिगृह्यताम् । ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः गन्धो
दकस्नानं समर्पयामि ॥२१॥ इति स्नापयित्वा पूर्वोक्त
शुद्धोदकस्नानं कारयेत । एवं स्नानं समर्प्य आचमनं
दद्यात् ॥ ततः सर्व भूषादिके सौम्ये लोक लज्जा
निवारणे मयैवोपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्
॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि॥
॥२२॥ नव भिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्॥
उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
अमुकदेवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि॥२३॥
ॐ स्वभाव सुंदरांगाय नानाशक्त्याश्रितः शिव॥
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चित॥१॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः आभूषणं
समर्पयामि इत्युक्त्वा दक्ष हस्तांगुष्ठ स्पृष्टानामि
कात्मिकया भक्त्या भूषणानि दद्यात्॥२४॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्॥
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥१॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवताय नमः गंधं समर्प
यामि॥२५॥ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः
सुशोभिताः मया निवेदिता भक्त्या गृहाण
परमेश्वर॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवताय नमः
अक्षतान्य समर्पयामि॥२६॥ माल्यादीनि सुगंधी
नि मालत्यादीनि वै प्रभो॥ मया नीतानि पुष्पाणि

गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवताय
नमः पुष्पं समर्पयामि ॥२७॥ एवं पुष्पांते पूजयित्वा
देवाज्ञया प्रयोगोक्तावरण पूजां कुर्यात् ॥ ततः क्रमः
ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवताय नमः पुष्पांजलिमादाय।
संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ॥ अनुज्ञां देहि मे
देव परिवारार्चनाय च ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं
देवोपरि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥
इत्याज्ञां गृहीत्वा पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनु
सारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राची क्रमेण प्रयोगो
क्तावरण पूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः। श्री पदं पूर्वमुच्चार्य
पादुकापद मुद्धरेत् ॥ पूजयामि नमः पश्चात् पूजये
दंग देवताः ॥ इत्युच्चरन् आवरण देवताः पूजयेत् ॥
तत्सर्वं तत्तत्प्रयोगे ज्ञेयम् ॥ अथ धूपादि पूजनम्
फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य नमः इति गंध पुष्पा
भ्यां संपूज्य पुरतो निधाय (रं) इति वह्नि बीजेन
उपरि अग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशांगं
दत्त्वा घंटा वादयन्। वनस्पतिरसोद्भूतो
गंधाढ्यो गंध उत्तमः। आघ्रेयः सर्व देवानां

धूपोयं प्रति गृह्यताम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवःस्वः सांगाय सपरिवाराय अमुक देवाय नमः धूपं समर्पयामि (देवता के बांये तरफ धूप का पात्र रक्खे) धूप मुद्रा दिखावे ॥२८॥ ततो दीप पात्रं गोघृतेनापूर्य मंत्राक्षर तंतुभिर्वर्ति निःक्षेप्य प्रणवेन प्रज्वाल्य घंटा वादयन् नेत्रादि पाद पर्यन्तं दीपं प्रदर्शयन् ॥ ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतास्तिमिरापः ॥ सबाह्या भ्यंत रज्योति र्दीपोऽयं प्रति गृह्यताम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवःस्वः सांगाय सपरिवाराय अमुक देवाय नमः दीपं समर्पयामि। इति पठित्वा देवस्य दक्षिण भागे निधाय ततः शंख जलमुत्सृज्य मध्यमां गुष्ठलग्नां दीपं मुद्रां प्रदर्शयेत् ॥२९॥ ततो देवस्याग्रे देव दक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये षड्रसोपेतं विविध प्रकारं वा नैवेद्यं निधाय ॐ ह्रीं नमः इति मंत्रेण, अर्घ्यजलेन संप्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुख दक्षिण हस्तोपरि तादृशं वामं निधाय

~~नैवेद्यं निधाय~~ नैवेद्येनाच्छाद्य (ॐ यं) इति वायु
बीजेन षोडशधा संजप्य वायुनातद्गत दोषान् संशोष्य
दक्षिण करतले तत्पृष्ठलग्नं वाम करतलं कृत्वा
नैवेद्यं प्रदर्श्य -(ॐ रं) इति वह्नि बीजेन षोडशवारं
संजप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा वाम करतले
(ॐ वं) इत्यमृत बीजं विचिंत्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकर
तलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य -(ॐ वं) इति सुधा बीजं
षोडशवारं संजप्यतदुत्थामृतधारया प्लावितं विभा
व्य - मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभि
मंत्र्य गंध पुष्पाभ्यां संपूज्य देवस्योद्भूतं तेजः
स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्य पात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिण ~~करे~~
करेण जलं गृहीत्वा ॥ ॐ सत्पात्र सिद्धं सुहविर्वि
धानेनेकभक्षणम् ॥ निवेदयामि देवेश सानुगाय
गृहाण तत् । ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय
अमुक देवाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि । इति
भूतले देवदक्षिणे जलं क्षिप्त्वा वाम हस्तेन
प्रनामा मूलयोरंगुष्ठयोगे ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य
देवं भुक्तवंतं विभाव्य जलं दद्यात् ॥ इति नैवेद्यं ॥

॥२०॥ नमस्ते देव देवेश सर्व तृप्ति करं वरम् ॥ परमा
नन्द पूर्ण त्वं गृहाण जल मुत्तमम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
सांगाय सपरिवाराय अमुक देवाय नमः जलं समर्पयामि
इति मंत्रेण स्वर्णादि पात्रस्थं कर्पूरादि सुवासितं
जलं निवेद्य देवेन तज्जलं प्राशित मिति भावयन्
अन्तः पटं दद्यात् ॥२१॥ अथ अन्तः पटम् ॥ ब्रह्मेशाद्यैः
परित ऋषिभिः सुपविष्टैः समेतैर्लक्ष्म्या शिंजद्
लय करया सादरं वीज्यमानः ॥ नर्म क्रीडाप्रहसन
परान्पांक्तिभोक्तॄन् हसन्स भुंक्ते पात्रे कनक घटिते
षड्रसान देवदेवः ॥१॥ शाली भक्तं सुपक्वं शिशिर कर
सितं पायसा पूप सूपं लेह्यं पेयं च चोष्यं सितम
मृत फलं पूरि कासंसरवाद्यम् ॥ आज्यं प्राज्यं
सभोज्यं नयन रुचि करं राजि केला मरीच स्वादीयः
शाकराजी परिकर ममृताहार जोषं जुषस्व ॥ इति
अन्तः पटं दत्वाचमनं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥२१॥
उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः ॥
शुद्धि माप्नोति तस्मै ते पुनराचमनियकम् ॥१॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः आचमनं समर्पयामि ॥
॥३२॥ इत्याचमनं दत्वा मूलेन गंडूषार्थं जलं दद्यात् ।
पुंगीफलं महा दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ॥ एला चूर्णा
दि संयुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक
देवाय नमः तांबूलं समर्पयामि । इति तांबूलं ॥ ३३॥ इदं फलं
मया देव स्थापितं पुरस्तव ॥ तेन मे सफलावाप्तिर्भवे
ज्जन्मनि जन्मनि ॥ ४॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः
फलं समर्पयामि ॥ ३४॥ बुद्धि सवासनाक्लृप्ता दर्पणं
मंगलानि च ॥ मनो वृत्तिर्विचित्रा ते नृत्य रूपेण कल्पिता
१॥ ध्वानं संगीत रूपेण शब्दा वाद्य प्रभेदतः ॥ छत्राणि
नव वस्त्राणि कल्पितानि मया प्रभो ॥ २॥ सुषुम्ना ध्वज
रूपेण प्राणाद्या श्चामरा मताः ॥ अहंकारो गजत्वेन वेगः
क्लृप्तो रथात्मना ॥ ४॥ इन्द्रियाणि च रूपाणि शब्दादिरथ
वर्त्मना ॥ मनः प्रगृह्य रूपेण बुद्धिः सारथि रूपतः ॥ ४॥
सर्व मन्यत्तथा क्लृप्तं तवोपकरणात्मना ॥ एवं सार्द्ध
चतुः श्लोकान् पठित्वा छत्रादि समर्पयेत् ॥ इति छत्रा
द्यर्पणम् ॥ ३५॥ हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेम बीजं
विभावसोः ॥

अनन्त पुण्य फलदमत: शांतिं प्रयच्छ मे ॥ ॐ
भूर्भुव: स्व: अमुक देवाय नम: दक्षिणां समर्पयामि
॥ ३६ ॥ शालि गोधूम पिष्टेन त्रिकोणाकारं प्रयोगे कं
वा अमुक संख्या परिमित दीपं निर्माय सुवर्णादि
स्थाली मध्ये संस्थाप्य घृतेना पूर्य कर्पूरादि वर्ती
निक्षिप्य (ह्रीं) इति माया बीजेन प्रज्वाल्य मूले
नार्तिक्यं संपूज्य ॐ भूर्भुव: स्व: अमुक देवाय
नम: देवो परि नेत्रादि पाद पर्यन्तं नववारं
त्रिवारं वा भ्रामयेत् घंटां च नादयेत् ॥ तत्र मंत्र: ।
अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकी कृत्य निरंतरम् ॥
त्रिधा देवोपरि भ्राम्य कुलदीपं निवेदयेत् ॥ १ ॥
चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च ॥
त्वमेव सर्व ज्योतिस्त्व मार्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुव: स्व: अमुक देवाय नम: नीराजनं समर्पयामि
॥ इत्युच्चरन् देव दक्षिणत: निधाय शंख जल मुत्सृ
जेत् । इति नीराजनम् ॥ ३७ ॥ कदली गर्भ संभूतं
कर्पूरं च प्रदीपितम् ॥ आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य
मे वरदो भव ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुव: स्व: अमुक देवाय नम:

कर्पूरार्तिक्यं प्रदर्शयामि ॥३८॥ यानि कानि च पापानि
जन्मांतर कृतानि वै ॥ तानि सर्वाणि नश्यंतु प्रदक्षिणपदेपदे
॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः प्रदक्षिणां ॥३०॥
प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात् ॥ ~~ॐ भूर्भुवः~~
~~स्वः अमुक देवाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि~~ इति वदन्
साष्टांगं प्रणमेत् ॥४०॥ नाना सुगंध पुष्पाणि यथा कालो
द्भवानि च ॥ पुष्पांजलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि ॥
॥४१॥ (अब प्रार्थना करो) तद्यथा ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि
यन्मया क्रियते शिव ॥ मम कृत्यमिदं सर्वमिति देव
क्षमस्व मे ॥१॥ अपराध सहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं
मया । दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥
अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहतां
लोके केवलं स्वामिनं विना ॥३॥ भूमौ स्खलित
पादानां भूमि रेवावलंबनम् ॥ त्वयि जातापराधानां
त्वमेव शरणं शिव ॥४॥ बद्धांजलि पूर्वकम् ~~स्त~~
संप्रार्थ्य ततः यदुक्तं यद्य भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्
॥ निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण भानुकंपय ॥

देवस्य दक्षिणे करे पूजार्पणजलं दत्वा मालायाः संस्कारान् कुर्यात् ॥ तत्रादौ कुशोदक सहितैः पंचगव्यैर्मालां प्रक्षाल्य अश्वत्थ पत्र नव कराचिते कमले स्थापयित्वा ॐ ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं (यह अक्षर कहकर) ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवाय नमः मालायां विन्यस्य पुनः पंचगव्येन प्रोक्ष्य ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥१॥ (ऐसा कहकर ठंडा जल छोड़दे) पुनः ॐ वाम देवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कल विकरणाय नमो बल विकरणाय नमः इस मंत्र से चन्दागुरु कर्पूरादि सुगंध द्रव्यै र्घर्षयेत् ॥२॥ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्र रूपेभ्यः (यह कहकर धूपदिखावे)

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात ॥ इति मंत्रेण मालायां चंदनं लेपयेत् ॥४॥ ॐ ईशानः सर्व विद्या नामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिवोम् ॥ ॥ इति मंत्रेण ॥ मेरुसहितं प्रत्येक मणिं सकृत्सकृद्भिम मंत्रयेत् ॥५॥ ततः अस्या मालायाः इति शब्दं संयोज्य पूर्ववत् प्राण प्रतिष्ठा मंत्र प्रयोगेण मालायाः प्राण प्रतिष्ठां कृत्वाध्यायेत् ॥ ॐ ह्रीं माले माले महामाये सर्व शक्ति स्वरूपिणी ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदाभव ॥१॥ इति मालां संप्रार्थ्य ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ इति मंत्रेण दक्षिण हस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्ट देवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलि मध्य पर्वाणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रे भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं स्मरन् प्रातः कालमारभ्य मध्यं दिनं यावत् यथा शक्ति मूल मंत्रं जपेत । नित्यमेव समानो जपः कार्यो न तु न्यूनाधिकः ।

ततो जपांते ॐ त्वं माले सर्व देवानां
प्रीतिदा शुभदा मम। शुभं कुरुष्व मे भद्रे
यशो वीर्यं च सर्वदा॥ तेन सत्येन सिद्धिं
मे देहि मातर्नमोऽस्तु ते। ॐ ह्रीं सिद्धयै नमः
इति मालां शिरसि निधाय गोमुखी रहस्ये
स्थापयेत् नाशुचिः स्पर्शयेत् नान्यं दृश्यात्
अशुचिस्थाने न निधापयेत् स्वयोनिवत्
गुप्तं कुर्य्यात्। ततः कवचस्तोत्र सहस्त्र
नामादिकं पठित्वा पुनर्मूल मंत्रोक्त
ऋषियादिन्यासं हृदयादि षडंगन्यासं च
कृत्वा पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पांजलिं
च दत्त्वा जपं देवार्पितं कुर्य्यात्। तथा च
अर्घोदकेन चुलुकमादाय ॐ गुह्यातिगुह्य
गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्॥ सिद्धिर्भ
वतु मे देव त्वत्प्रसादान्न्वयि स्थितिः॥१
ॐ इतः पूर्व प्राण बुद्धि देह धर्म्माधिकारतो
जाग्रत्स्वप्न सुषुप्ति तुर्यावस्थासु मनसा वाचा

कर्म्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेणशिश्ना यत्स्मृतं
मदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा।
मां मदीयं च सकल अमुक देवाय समर्पयामि
नमः। ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु। इति देव दक्षिण
करे जलसमर्पणं कृत्वा कृतांजलि पूर्वकं क्षमापनं
पठेत्। अथ क्षमापनम्। आवाहनं न जानामि न
जानामि विसर्जनम्॥ पूजा मार्गं न जानामि त्वं
गतिः परमेश्वर॥१॥ मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति
हीनं सुरेश्वर॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं
तदस्तु मे॥२॥ यदक्षर पद भ्रष्टं मात्रा हीनं च यद्भवेत्
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥३॥
कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम॥
अन्तश्चरसि भूतानामिष्टस्त्वं परमेश्वर॥४॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम॥
तस्मात्कारुण्य भावेन क्षमस्व परमेश्वर॥५॥
मातृ योनि सहस्त्रेषु सहस्त्रेषु व्रजाम्यहम्॥ तेषु
तेष्व चल भक्तिरच्युतेऽस्तु सदा त्वयि॥६॥

गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ गता-
गता सुख सम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥ ८
देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत् ॥
देवं जपत सर्वत्र यो देवः सोऽहमेव हि ॥ ९ ॥
क्षमस्व देवदेवेश क्षम्यतां भुवनेश्वर ॥ तव
पदांम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ १० ॥
। इति कृतांजलिः प्रार्थयित्वा शंखमुद्धृत्य देवो
परि भ्रामयित्वा साधु वासाधु वा कर्म यद्यदा
चरितं मया तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं
मम ॥ ११ ॥ (इतना कहकर दहिने हाथ से जलदेवता के
सिर पर डाले) शंखं यथास्थानं निवेश्य ततो
गतसारं नैवेद्यं देवस्योच्छिष्टं किंचिदुद्धृत्य
तत्तदुच्छिष्टभोजिने विनिवेदयेत् । तत्र
तत्राधा विष्णोरुच्छिष्टं विष्वक्सेनाय
॥ १ ॥ शिवस्योच्छिष्टं चंडेश्वराय २ ~~सूर्योच्छि~~
~~सूर्योच्छिष्टं~~ सूर्यस्योच्छिष्टं चंडांशवे ॥ ३
गणेशोच्छिष्टं वक्रतुंडाय ४ शक्त्युच्छिष्टं
मुच्छिष्टं चाण्डाल्यै इत्युच्छिष्ट शोधिकारिणे

ऐशान्यां दिशि दद्यात् तच्छेषनैवेद्यं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयंभुक्त्वा विसर्जनं कुर्य्यात् । तथा च गच्छ गच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर । पूजाराधन काले च पुनरा[illegible] गमनाय च ॥ (इतना कहकर अक्षत छोड़दो) विसर्जनं कृत्वा देवं स्वहृदये स्थापयेत् । तथा च तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवा सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि ॥१॥ इति हृदय कमले हस्तं दत्वा देवं संस्थाप्य मानसोपचारैः संपूज्य स्वात्मानं देव रूपं भावयन् यथा सुखं बिहरेत् । एवमेव विधिना जपं समाप्य जपान्ते तद्दशांशतो नित्य होमं वा कुर्य्यात् ॥

अथ राम मंत्र प्रयोगः ॥

मंत्रो यथा "रां रामाय नमः" इति षडाक्षरमंत्रः ॥ अस्य विधानम् । अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । गायत्री छन्दः श्री रामो देवता । रां बीजम् नमः शक्तिः । चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोगः । ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि १

गायत्री छन्दसे नमः मुखे। २ श्री राम देवतायै नमः
हृदि। ३ रां बीजाय नमः गुह्ये। ४ नमः शक्तये नमः
पादयोः ५ विनियोगाय नमः सर्वांगे ६ इति ऋष्या
दिन्यासः॥ ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॐ रीं तर्जनी
भ्यां नमः। २ ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः। ३ ॐ रैं अनामि
काभ्यां नमः: ~~सर्वांगे~~ । ४ ~~इति~~ ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां
नमः ५ ॐ रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति
करन्यासः॥ ॐ रां हृदयाय नमः १ ॐ रीं शिरसे
स्वाहा २ ॐ रूं शिखायै वषट् ३ ॐ रैं कवचाय हुं
~~४ ॐ रैं नेत्रत्रयाय~~ ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५
ॐ र: अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादि षडंगन्यास
॥ ॐ रां नमः ब्रह्मरंध्रे १ ॐ रां नमः भ्रुवोर्मध्ये
२ ॐ मां नमः हृदि ३ ॐ यं नमः नाभौ ४ ॐ नं
नमः लिंगे ५ ॐ मं नमः पादयो ६ इति मंत्र
वर्ण न्यासः॥ इति न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत्
नीलांभोधरकांति कांत मनिशं वीरासनाध्यासिनं
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं हस्ताम्बुजं जानुनि॥

सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राघवं पश्यंती मुकुटांगदादिविविधाकल्पोज्ज्वलांगंभजे ॥१॥ इति ध्यायेत् । ततः सर्वतोभद्रमंडले "ॐ मंमंडूकादिपरतत्वांतपीठ देवताभ्यो नमः" ॥ इति पीठ देवताः संपूज्य नवपीठ शक्तिः पूजयेत् । तद्यथा पूर्वादि क्रमेण । ॐ विमलायै नमः १ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २ ॐ ज्ञानायै नमः ३ ॐ क्रियायै नमः ४ ॐ योगायै नमः ५ ॐ प्रह्व्यै नमः ६ ॐ सत्यायै नमः ७ ॐ ईशानायै नमः ८ मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादि निर्मितं यंत्रंमूर्तिं वा अग्न्युत्तारणपूर्वकम् "ॐ नमो भगवते रामाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोग पद्मपीठात्मने नमः" इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठ मध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा वाहनादि पुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तत्र क्रमः । पुष्पांजलिमादाय ॐ संविन्मयः परोदेव परामृतरसप्रिय ॥

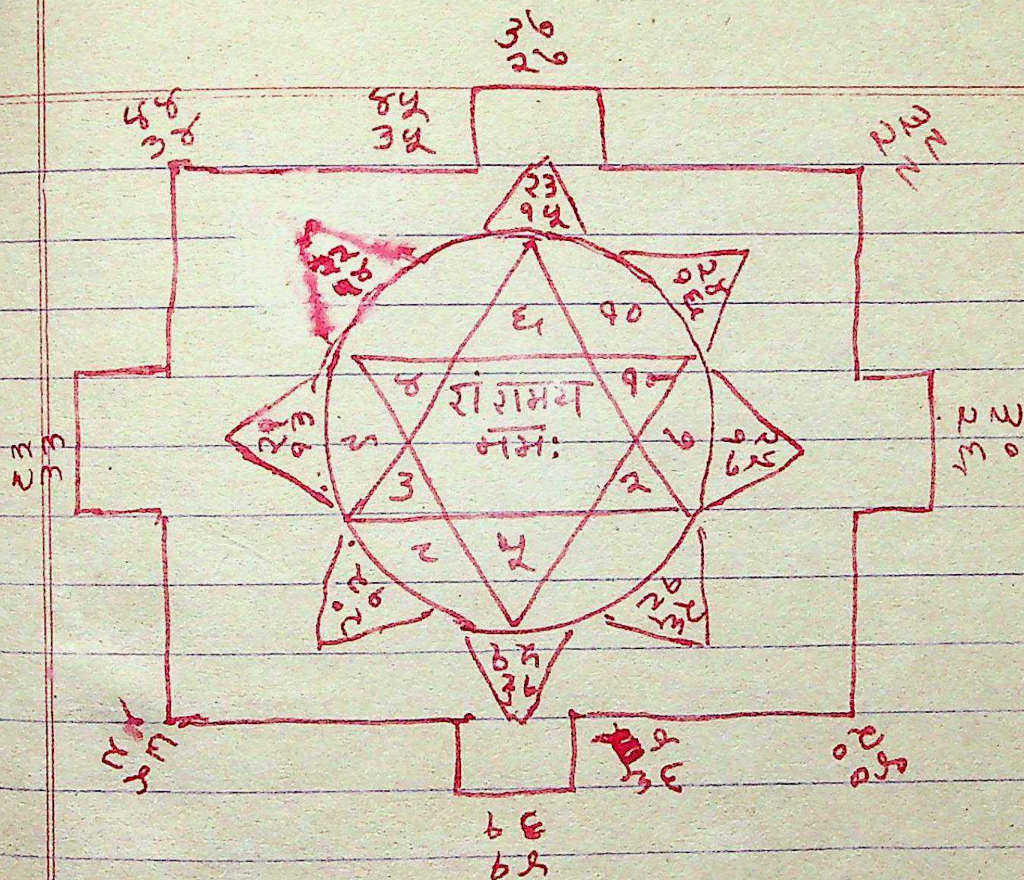
अनुज्ञां देहि मे राम परिवारार्चनाय ते ॥ (इतना कह कर पुष्पांजलि दे) इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरण पूजा मारभेत। देव वाम पार्श्वे श्री सीतायै नमः। सीता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (इसी तरह सब जगह कहो) अग्नि कोण में ॐ शार्ङ्गाय नमः शार्ङ्ग श्री पा० त० न०॥ (पा से पादुकां त से तर्पयामि न से नमः) दक्षिणपार्श्वे ॐ शराय नमः शराय श्री पा० त० न०) वाम पार्श्वे ॐ चापय नमः चाप श्री पा० त० न०

४ इति पूजयेत् ॥ (फिर फूल प्रदान करे) मूलमुच्चार्य ॐ अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ (ऐसा कह कर फिर फूल चढ़ा दे) पूजितास्तर्पिताः संतु (ऐसा कहे) इति प्रथमावरणम् ॥ ततः षट्कोण केसरेषु अग्नि कोणे। ॐ रां हृदयाय नमः १ निर्ऋते ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २ वायव्ये ॐ रूं शिखायै वषट् ३ ऐशान्ये ॐ रैं कवचाय हुं ४ पूज्य पूजकयोर्मध्ये

ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट् पू देवपश्चिमे ॐ रः अस्त्राय
फट् द इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्।
इति द्वितीयावरणम् ॥२॥ तद्बहिरष्टदले पूज्य पूजक
योर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ हनुमते
नमः हनुमच्छ्री पा० त० न० ।१ ॐ सुग्रीवाय नमः सुग्रीव
श्री पा० त० न० ।२ ॐ भरताय नमः। भरत श्री पा० त० न०
ॐ विभीषणाय नमः। विभीषण श्री पा० त० न० ।४ ॐ
लक्ष्मणाय नमः लक्ष्मण श्री पा० त० न० ।५ ॐ अंगदा
य नमः अंगद श्री पा० त० न० ।६ ॐ शत्रुघ्नाय नमः।
शत्रुघ्न श्री पा० त० न० ।७ ॐ जाम्बवते नमः। जाम्बवच्छ्री
पा० त० न० ।८ ॐ इति पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्।
इति तृतियावरणम् ३ ततोऽष्टदलाग्रेषु। ॐ सृष्टाय
नमः सृष्ट श्री पा० त० न० १ ॐ जयन्ताय नमः।
जयन्त श्री पा० त० न० ।२ ॐ विजयाय नमः विजय
श्री पा० त० न० ३ ॐ सुराष्ट्राय नमः सुराष्ट्राय श्री
पा० त० न० ।४ ॐ राष्ट्रवर्धनाय नमः। राष्ट्रवर्धन
श्री पा० त० न० ५ ॐ अकोपाय नमः अकोप श्री
पा० त० न० ।६ ॐ धर्मपालाय नमः धर्मपाल श्री

पा० तं० नं० १७ ॐ सुमन्तायनमः सुमन्तश्री
पा० तं० नं० १८ इत्यष्टौ पुजयित्वा पुष्पांजलिं
च दद्यात् ॥४॥ ततोभू पुरे इन्द्रादि
दशदिक्पालान् तद्वहिर्वज्राद्य स्त्राणि च
पुजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात् ।इत्यावरणपूजां
च कृत्वा धुपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं
कुर्यात । अस्य पुरश्चरणं षड् लक्षजपः।
दशांश होम दशांश तर्पण मार्जन ब्राह्मण
भोजन करावे ऐसा करने से मंत्र सिद्ध होता है
(शारदातिलके) मे वर्ण लक्षं जपेन्मंत्रं तद्दशांशं
सरोरुहैः। जुहुयादर्चिते वह्नौ ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः
॥१॥(इसतरह सिद्ध होता है) जाती प्रसूनैर्जुहुया
छंदनामः समीक्षितैः॥२॥ राज वश्याय कमलैर्धन
धान्यादि संपदे ॥ नीलोत्पलानां होमेन वश्ये
दखिलं जगत ॥३॥ बिल्व प्रमाणै जुहुया[illegible]
दिंदिरावाप्तये नरः॥ दुर्वा होमेन दीर्घायुर्भवेन
मंत्री निरामयः॥४॥ रक्तोत्पल हुतान्मंत्रीधन
माप्नोति वांछितम्॥

॥ षडाक्षरी राममंत्र प्रयोगावरणयंत्रं ॥



मेधाकामेन होतव्यं पालाशकुसुमैर्नवैः ॥५॥
तज्जप्तमंभः प्रपिबेत्कविर्भवति वत्सरात् ॥ तन्मंत्रितान्नं
मुंजीत महदारोग्यमाप्नुयात् ॥६॥ अयं मंत्रः षड्विधः।
तथा-च स्व काम शक्ति वाग लक्ष्मी ताराद्यैः पंचवर्णकः
षडक्षरः षड्विधः स्याच्चतुर्वर्ग फलप्रदः ॥१॥ ब्रह्मा
संमोहनः शक्ति दक्षिणामूर्तिरव्ययः ॥ अगस्तिः श्री

शिवः प्रोक्तो मुनयोऽत्र क्रमादिमे ॥२॥ अथवा
काम बीजादेर्विश्वामित्रो मुनिर्मतोः ॥ छंदो
गायत्रसंज्ञं च श्री रामश्चैव देवता ॥३॥ ध्यान
पूजादिकं सर्वं पूर्ववत्कार्यम् ॥ इति षाड्विध
मंत्र स्वरूपम् ॥ अथ दशाक्षर राम मंत्र प्रयोगः
(शारदायाम्) मंत्रो यथा "हुं जानकी वल्लभाय
स्वाहा" इति दशाक्षरो मंत्रः। अस्य मंत्रस्य
वसिष्ठ ऋषिः विराट् छंदः। सीता पाणि
परिग्रहे श्री रामो देवता हुं बीजम्। स्वाहा
शक्तिः। चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धये जपे
विनियोगः। ॐ वशिष्ठ ऋषये नमः शिरसि
१। विराट् छंदसे नमः मुखे २ सीता पाणि
परिग्रहे श्री रामो देवतायै हृदि ३ हुं बीजाय
नमः गुह्ये ४ स्वाह शक्त्यै नमः पादयोः ५
विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ इति ऋष्यादि
न्यासः॥ ॐ क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। १ ॐ क्लीं
तर्जनीभ्यां नमः। २ ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ३
ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४ ॐ क्लीं
कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॐ क्लीं

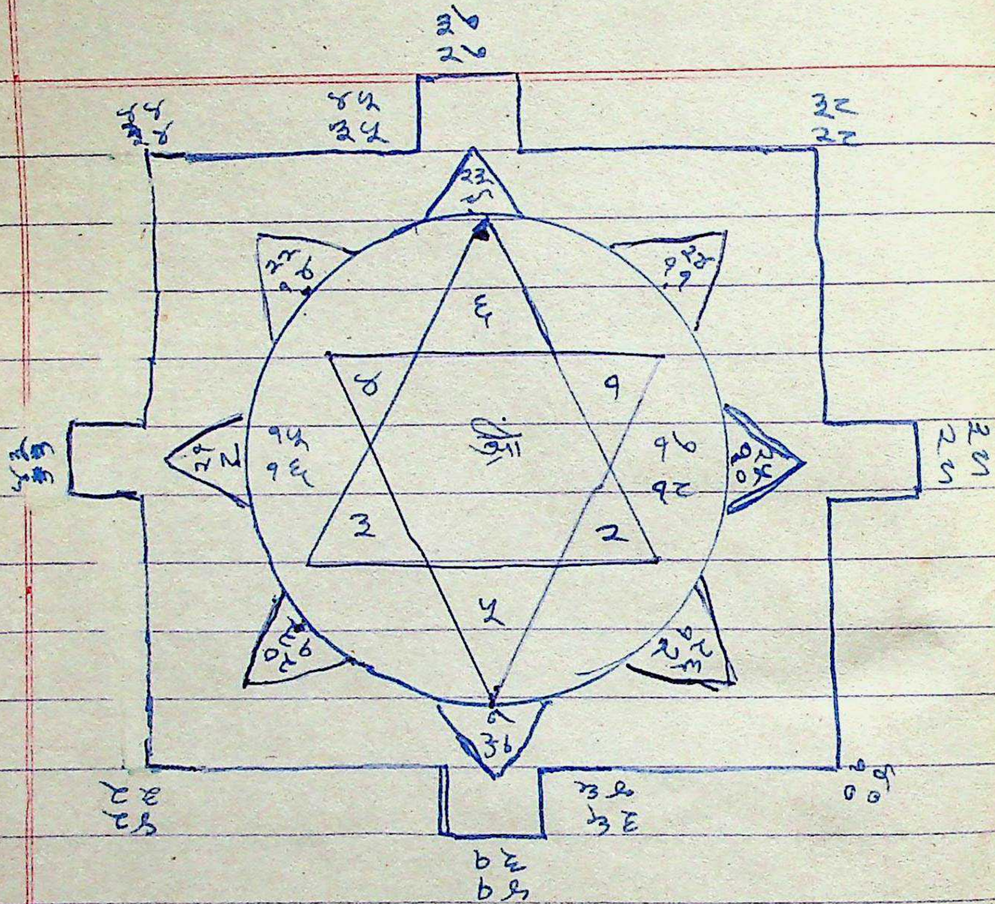
करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ एवं हृदयादिषडंगन्यासं कुर्यात् ॥ ॐ हुं नमः शिरसि १ ॐ जां नमः ललाटे २ ॐ नं नमः भ्रूमध्ये ३ ॐ कीं नमः तालुनि ४ ॐ बं नमः कंठे ५ ॐ ल्लं नमः हृदि ६ ॐ भं नमः बाह्वोः ७ ॐ यं नमः नाभौ ८ ॐ स्वां नमः जान्वोः ९ ॐ हां नमः पादयो १० इति मंत्रवर्णन्यासः ॥ एवं न्यास विधिं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अयोध्या नगरे रम्ये रत्न सौंदर्य मंडपे मंदार पुष्पैराबद्ध वितान तोरणांकिते ॥१॥ सिंहासन समारूढं पुष्पकोपरि राघवम् ॥ रक्षोभिर्हरिभिर्देवैर्दिव्य यागनते शुभे ॥२॥ संस्तूयमानं मुनिभिः सर्वतः परि सेवतम् ॥ सीतालंकृत वामांगं लक्ष्मणेनोप शोभितम् ॥३॥ श्यामं प्रसन्नवदनं सर्वाभरण भूषितम् ॥ एवं ध्यात्वा मंत्रं जपेत् । अस्य पुरश्चरणं दशलक्ष जपः

=

कृष्णामंत्र

क्लीं कृष्णाय गोविंदाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा ॥

लक्ष्म्येकाक्षर बीज मंत्रपूजन यंत्रम्



॥ कर्ण पिशाचिनी ॥

मंत्र — कालिके २ गृहण गृहण पिण्डं पिशाचि स्वाहा ॥

ध्यान — ध्यायेत पिशाचीं शूलहस्तां श्यामां सुदीर्घां युवतीं त्रिनेत्राम् । क्रुद्धां विवर्णां तनु वृत्तमध्यां गुञ्जाफलैः कल्पित हारयष्टिम् ॥

२१ दिन

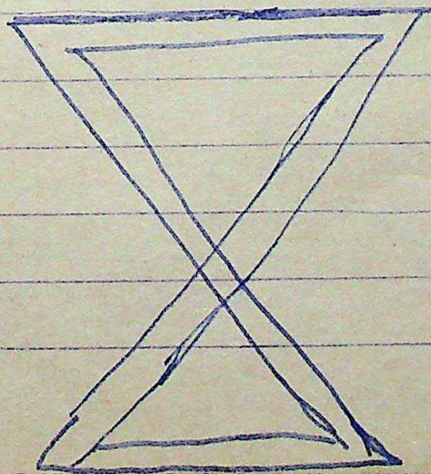
उदय से अस्त तक जपे । सायं स्वयं आहार करे देवी को भोग लगावे । तीन सप्ताह के बाद शैया पर पिशाचिनी आ जायेगी । २५वें दिन में देश का हाल बतावेगी ।

३० दिन में जम्बू तक की खबर कहेगी । ३२ दिन में तीनों लोक की बात सुना देगी । सभा, रण, जुवे, में बात करें

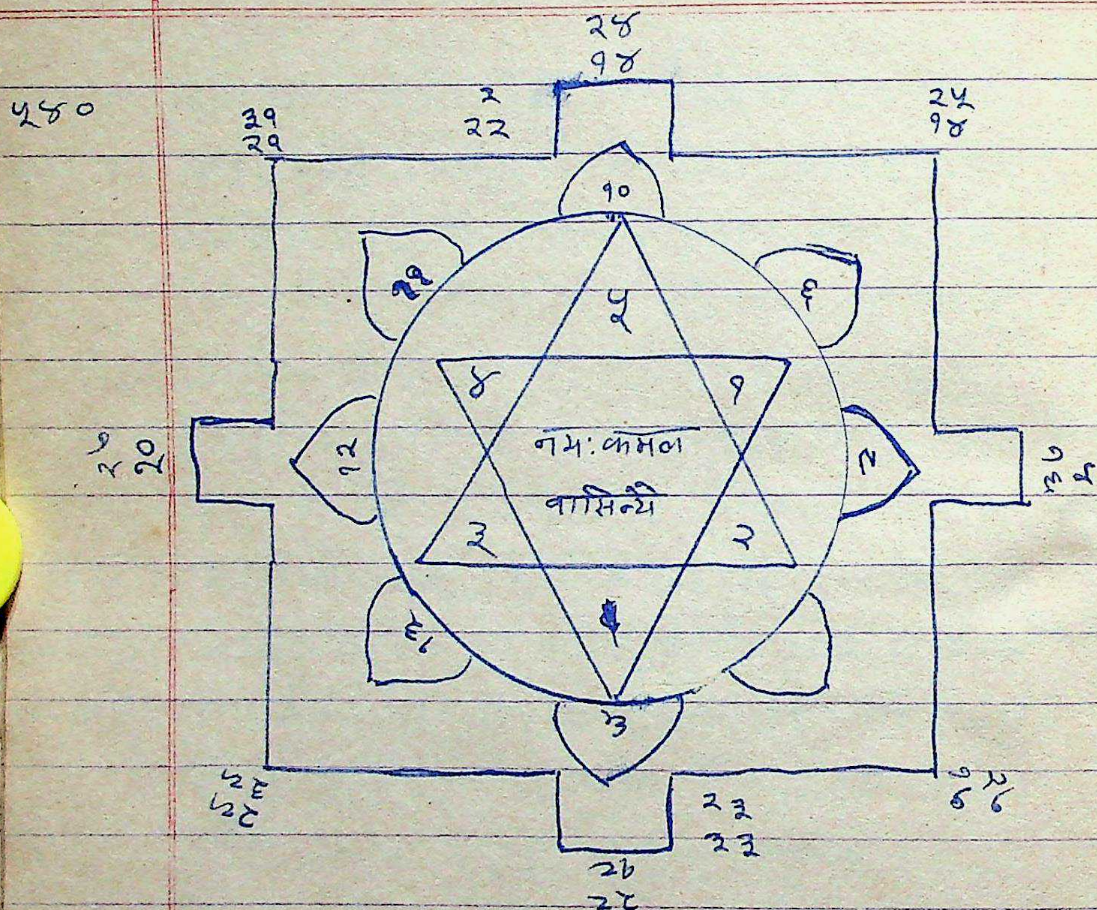
" उच्छिष्ट चण्डालिनी "

कृष्णपक्ष की अष्टमी को मांस डाल कर पुलाव बनावे। मेवा डाले। (या मेवे की खूब गाढ़ी खीर चावल डाल कर बनावे उसमें ४ दाने काले उरद डाल दे। सब अच्छा मीठा पुलाव ही रहता है।

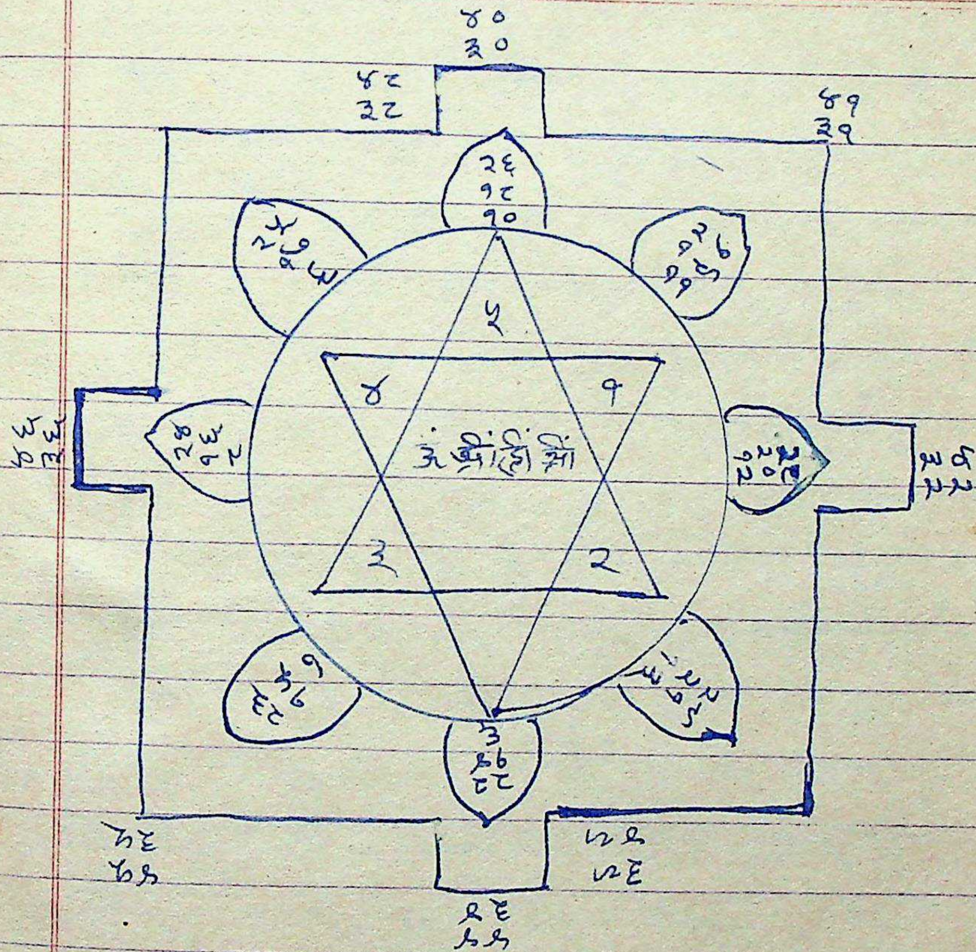
१ मिट्टी की बेदी चार अंगुल ऊंची १ हाथ लम्बी १ हाथ चौड़ी बनाओ। उसपर चावल के आटे से चावल पीसले सिलपर। या चाकी पर। उससे एक सर्वतोभद्र मण्डल बनावे। बीच में त्रिकोण रोली से बीच में बिन्दु सिन्दुर से बनाव नक्शा देख कर सर्वतोभद्र बनाओ। फिर नैऋत्य में समान्यअर्घ्य यह यन्त्र बना कर रक्खे। पश्चिम में अपना आसन रक्खे। 



लक्ष्मी दशाक्षर मन्त्र यन्त्रम्



लक्ष्मी सप्तविंशत्यक्षरमन्त्र पूजनम्



॥ उच्छिष्ट चंडालिनी का ही प्रयोग है यह ॥

फिर मूल मन्त्र पढ़ते हुए बेदी देखे। फट् बोलता हुआ समान्यअर्घ से बेदी पर जल के छींटे मारे। फिर एक तांबे के पात्र मे अग्नि जला कर किसी सुहागिन औरत से पात्र मंगा कर उस पर १० बार मूल मन्त्र का जप करके उसमें से एक अंगार का टुकड़ा हुं फट् क्रव्यादेभ्यो नमः कह कर फेंक दे दक्षिण तरफ। फिर उस अग्नि पात्र को बेदी के ऊपर चारों तरफ घुमा कर तीन बार उल्टा कर करके बेदी पर रख दो। फिर नैऋत्य दिशा में अग्नि की पुजा करो। पंचोपचार से। तीन आहुति घी से दो (ॐ भू: स्वाहा) (ॐ भुव: स्वाहा) (ॐ स्व: स्वाहा) फिर एक फूल को नाक के पास ले जाकर नीचे स्वास करो अग्नी में डाल दो। फिर संकल्प करो जो चाहते हो।

पश्चात् ११ आहुति पुलाव से दे (नवार्ण मन्त्र से २५ मूल मन्त्र से आहुति पुलाव से दो। फिर छे आहुती इन मन्त्रों से दे पुलाव की।

(ॐ श्रें हृदयाय नमः)(ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा)(ॐ क्लीं शिखायै वौषट्)(ॐ चामुण्डायै कवचाय हुं)(ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वषट्)(ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्)
ॐ गणेशाय स्वाहा ॐ वटुकाय स्वाहा ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा ॐ योगिनी स्वाहा। एक आहुती पुलाव से सब को दो। ॐ आवरण देवताभ्यो स्वाहा ॐ ग्राम देवताभ्यो स्वाहा ॐ स्थान देवताभ्यो स्वाहा ॐ कुलदेवताभ्यो स्वाहा ॐ इष्ट देवताभ्यो स्वाहा ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो स्वाहा ॐ सर्वे भ्यो देवेभ्यो स्वाहा। फिर (या साम्प्रतं चोद्धत दैत्य तापितै रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते। या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्ति विनम्र मूर्तिभिः ॥ पांचवे अध्याय का ८२ वां श्लोक इस मन्त्र से १०८ बार स्वाह अन्त में लगा २ कर हवन करे। फिर १ आहुति (ॐ आवरण देवताभ्यो स्वाहा) फिर घी से एक आहुती दे। (इदं चण्डिका देवताभ्यो नमः स्वाहा) से। फिर संकल्प करे ॐ अद्य श्री। ब्राह्मणो ज्ञाता ज्ञात दोष शमनार्थं क्षमार्थं पंचविंशति संख्या हवन करिष्ये। बोल कर २५ आहुती पुलाव की दे। उसी श्लोक से जो ऊपर है सप्तशती का फिर अन्त में एक बड़े चमचे में घी पान सुपारी पुलाव कपूर केला पूर्णाहुती दे इस मन्त्र से।

क्लीं जयन्ती सांगाये सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनाये धूमाद्वैये विद्यामायादि यतुर्विशद्धुवताम्यो महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा बोलकर डाले

फिर पंचोपचार से अग्नि पूजन करे। संहार मुद्रा से आत्म चैतन्य अन्दर करे। यानी एक फूल हाथ में उठा कर अग्नि को दे। एक फूल उठा के नाक में लगा कर उसे पृथ्वी पर यह यंत्र जल से बना के रख दे। ▽ । फिर आग्नेय में हसमव में ३ बार कह कर ३ घी की आहुति दे। बलि दी। फिर जूठे मुंह जूठे हाथ से जप करे न्यास की जरूरत नहीं।

दस हजार जप ~~हो~~ एक हजार हवन ~~...~~ सौ ~~...~~ तर्पन, दस बार मार्जन करे १ ब्राह्मण जिमांदे। यदि सिद्धि न हो इतने जप से तो १ लाख २५ हजार जप कर ले। हवन तर्पण मार्जन की भी हो जायेंगी

मूल मन्त्र

ऐं क्लीं सौं उच्छिष्ट चण्डालिनी सुमुखी देवी महा पिशाचिनी ह्रीं ठः ठः ठः।

रोज कुछ खाकर जूठे मुंह जूठे हाथ आसन पर बैठे। तब जपे।

ध्यान : श्वेतपीठ समासीनं रक्ताम्बर परिच्छिदाम् ।
रक्तालं [illegible] [illegible] भूषिताम् ।
षोडशाब्दञ्च युवतीं पीनोन्नत पयोधराम् ।
कपाल कर्तृकां हस्तां परमज्योति रूपिणीम् ।

रोज वासीसे पूर्वासेह (ए) यह यन्त्र बनाकर मूल मन्त्रपढ़ते हुऐ एक हथेली को उसपर रख कर कुछ खाने की बली एक पत्तेपर रखदे (उच्छिष्ट चण्डालिन्यै नमः

कर्ण पिशाचनी करना हो तो = यह मन्त्र है।
(श्रीं ह्रीं शत रुद्र सौ प्रान्ताङ्गी सफल वार्ता कह कर्ण पिशुन ह्रीं स्वाहा) यह मन्त्र केवल ~~[illegible]~~ १६ हजार जपे एक टाइम खावे रात्रि में ~~[illegible]~~ दशांश सो हवन करे ४० तर्पण १० मार्जन १ ब्राह्मणभोजन करावे।

संहार = (१) कड़ुवे तेल सरसों से हवन करने से
वाले : (२) मांस युक्त पुलाव से हवन करने से
इच्छावस्तु मिले (३) विद्या के वास्ते मधु खीर शक्कर से हवन करे
(४) त्रिलोकवश में होने वाले रजस्वला के वस्त्र से खीर पका कर करे मेवा शहद भी मिला ले।
गर्भ धारण करने में उल्लू के पंखों से हवन करे
श्मशान में हवन करने से देवी प्रगट होवे
विनियोग: सहदेव ऋषिश्चास्य अनुष्टुपछन्द श्री मत्कर्ण पिशुनी शक्ति: लक्ष्मी देवता ऐं बीजम् क्लीं शक्ति: सौं कीलकम् मम सकल रहस्य वाग्विज्ञानार्थे ति विनियोग:

पूर्व में १ अंक लिखो नैऋत्य में २ अंक उत्तर में ३ अंक वायव्य में ४ अंक

... ५ अंक पश्चिम में लिखे।
६ आग्नेय ७ अंक दक्षिण मे
फिर एक अंक से सूर्यादि नवग्रह पूजन करे। और नव दुर्गा पूजन करे दसों
दिक्पालों का पूजन करे दसों आयुधों का पूजन करे फिर भद्रेश्वर देवता का पूजन करे
एक दीप सुगन्धित तेल का एक घी का जलावे जब तक यन्त्र लिखे। १०८ बार मूल मंत्र जप
प्राणप्रतिष्ठा सब की करे।

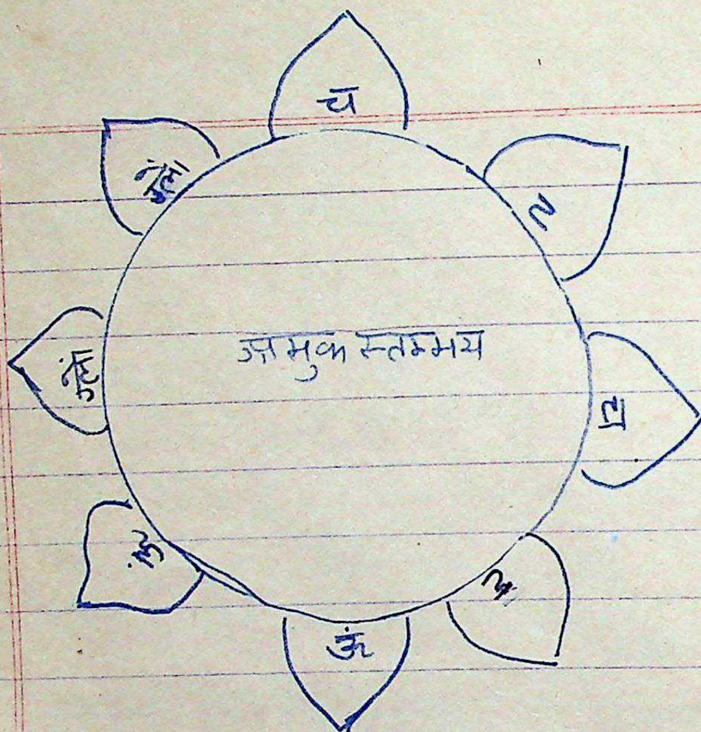
अनन्ताय

ईशान	पूर्व	आग्नेय
महागौरी राहु ८ ईशानाय त्रिशूलाय	शैलपुत्री सूर्य १ इन्द्राय, बज्राय	कात्यायनी शुक्र ६ वायव्ये, अंकुशाय
उत्तर: चन्द्र घंटा भौम ३ यमाय दंडाय	स्कन्दमाता भद्रेश्वर पूजन गुरु ५ वरुणाय, पाशाय	कालरात्री शनि ७ कुबेराय गदायै नमः (दक्षिण)
कूष्माण्डा बुध ४ नैऋत्याय खड्गाय	सिद्धदात्री केतु ९ ब्रम्हणे पद्माय	ब्रम्हचारिणी चंद्र २ आग्नेय शक्तये
वायव्य	पश्चिम	नैऋत्य

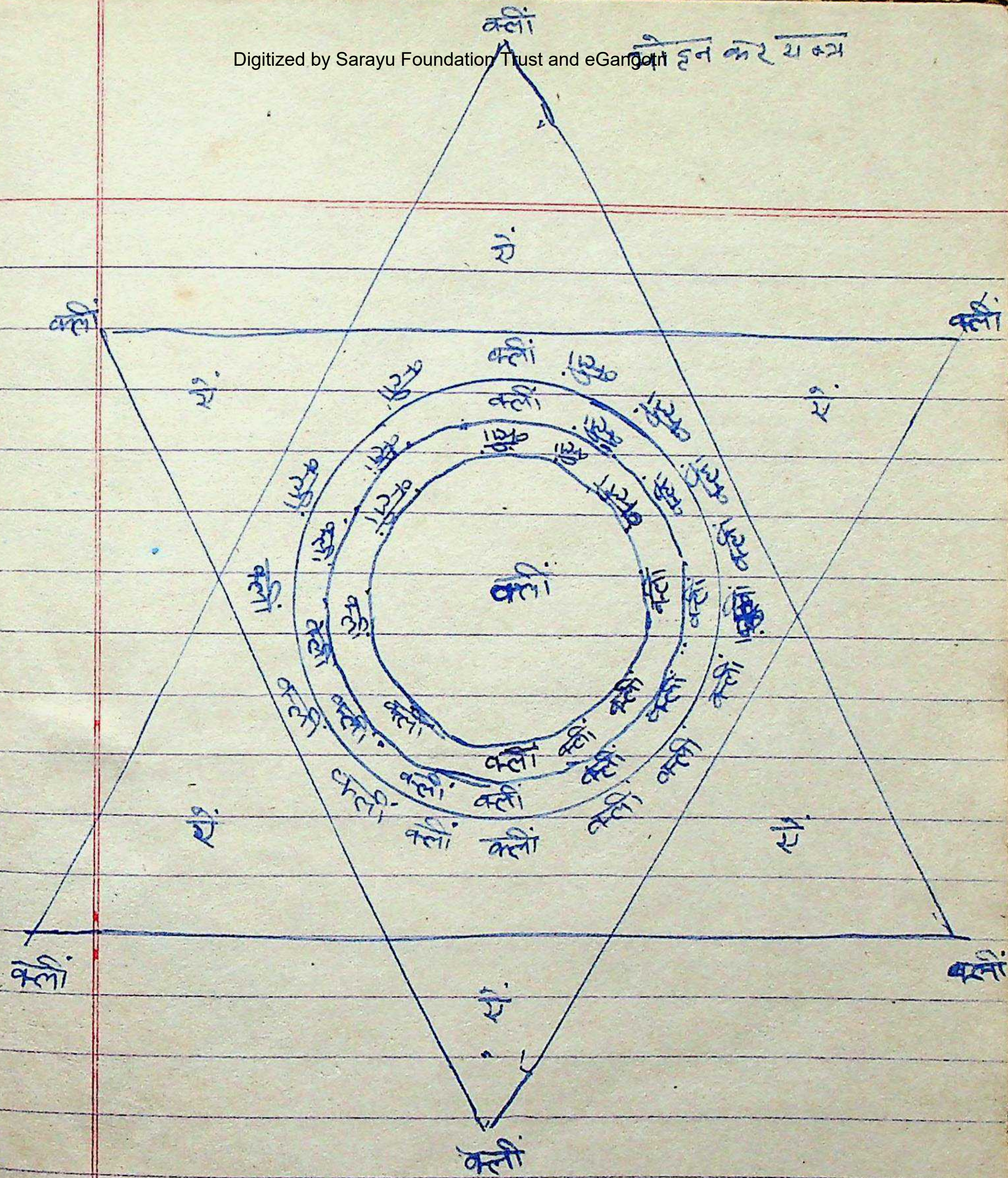
चक्राय

यह यंत्र इसतरह भोज पत्र पर बनाले एक केवल और उसे किसी क्षीर पट्ट पर लाल वस्त्र बिछाकर पधरा कर प्राण प्रतिष्ठा करे आवाहन पूजन सबका करे। फिर दीप जलावे जब तक यंत्र लिखे धूप दे फिर पंचोपचार पूजन करके १५०० यंत्र लिखे दशांश हवन तर्पण मार्जन ब्राम्हण भोजन करावे। लाल कनेर या गुलाब के फूलों से घृत से आम्र समिधा या पीपल समिधा में हवन करे।

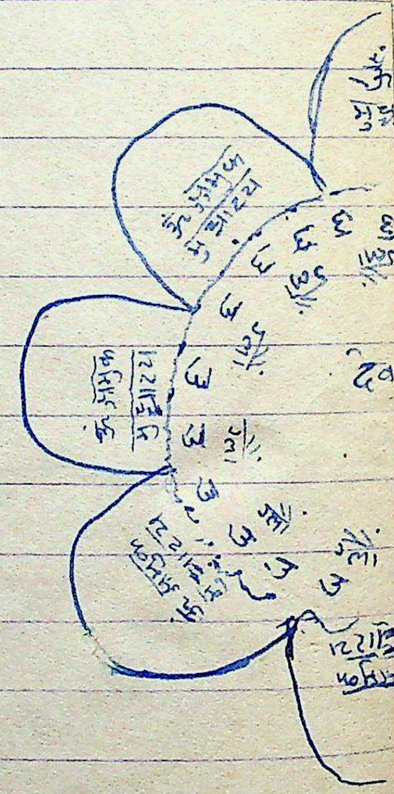
पश्चात् उस यंत्र को जो पूजन किया है त्रिलोह में भर
के पहन ले। फिर कोई प्रयोग करे।


अमुक स्तम्भय

मोहनकर यन्त्र



॥वर्तालीस्तम्भन यन्त्रम्॥



क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं

ॐ अमुक मुखाय

ॐ अमुक मुखाय

ॐ अमुक मुखाय

ॐ अमुक मुखाय

ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं

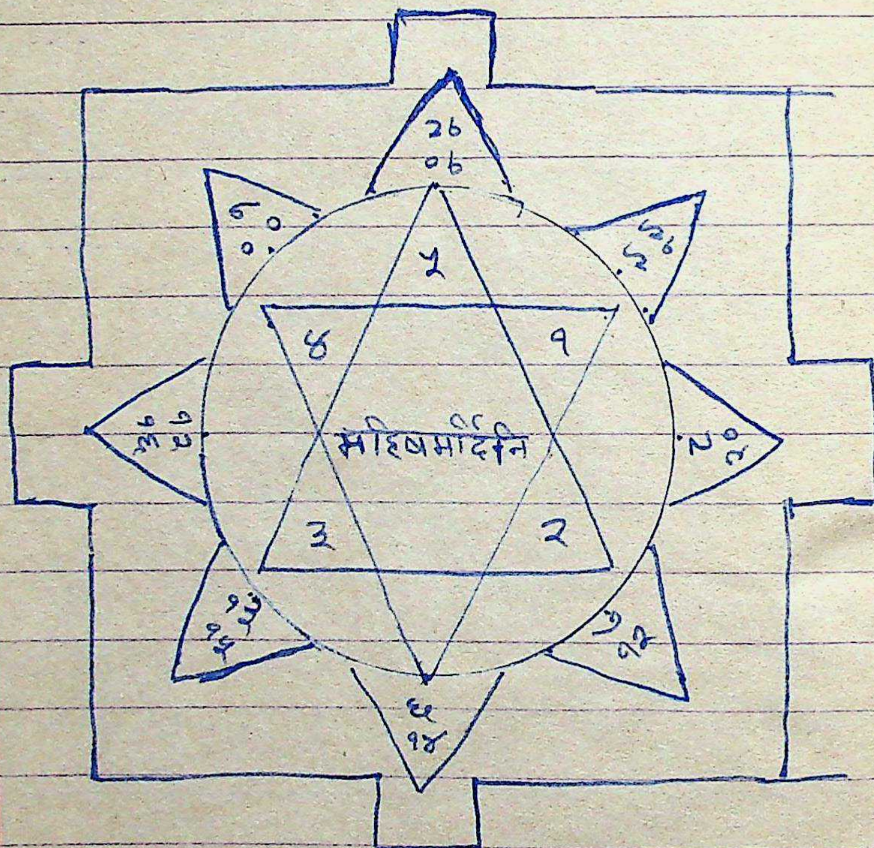
उ उ उ उ उ उ उ उ उ उ उ

देवदत्त

श्री ह कु रु लु भ ह्लं हा जि ति श्र स्वर्भु ख्च तां चि रं पं.कु वा वि स्वां वें स्व.छा दु

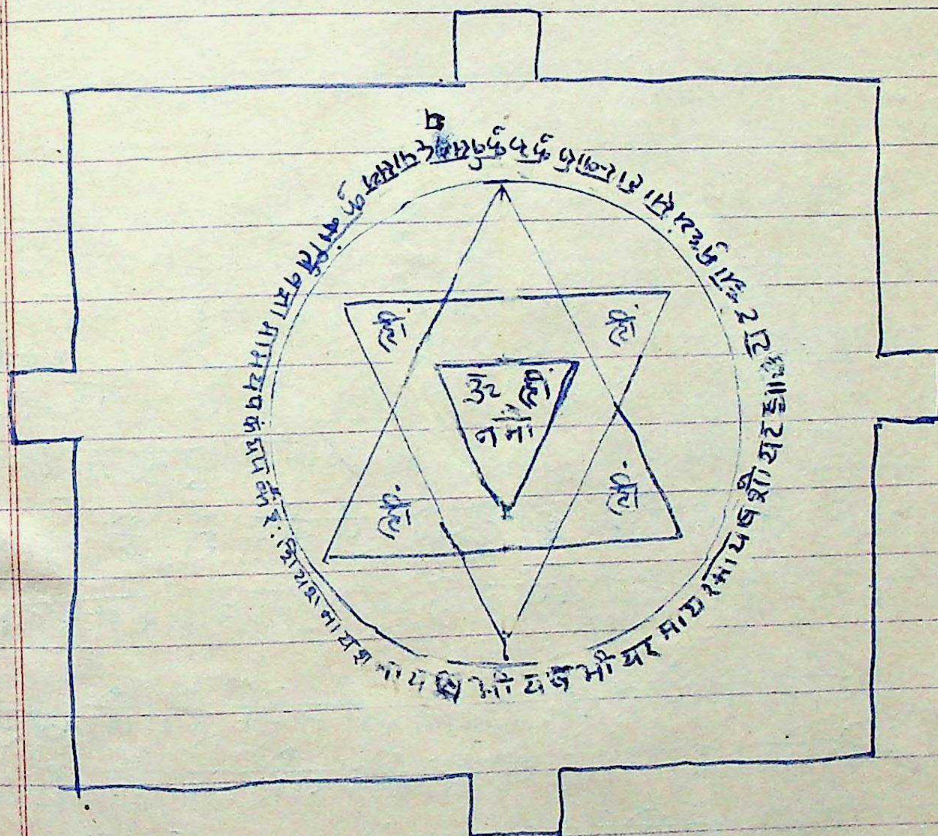
क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं

महिषमर्दिनि पूजन यन्त्रम् ।।



गोलाकार में इतने शब्द आने चाहिये इतना बड़ा
गोला बनाओ
द पा सतं ज्ञास्तु वतमर्मिकासह कुरु

॥ कारा ह्रीं वशीकरण यन्त्रम् ॥



सर्वांक

योग की गणना बिष्कुम्भ योग से करो। योग भी २७ होते हैं प्रश्न पूछने वाले दिन का/बार। नक्षत्र। तिथि। और पूछने वाले का नाम का पहला अक्षर पंचस्वरा में देखो किस नम्बर की पंक्ति में है। जैसे कमला नाम पूछने वाले का है और वह नाम का पहला अक्षर पहली पंक्ति में है। तो समझो १ संख्या नाम की हुई यदि (इ) नाम पूछने वाले का है। तो देखो (इ) दूसरी पंक्ति में है तो नाम की (२) संख्या पिंड के बनाने में रक्खो।

यदि तिथि संख्या जाननी हो तो उसकी रीति शुक्ल पक्ष की परिवा से गिनो १५ दिन पूर्णिमा तक संख्या हुई फिर कृष्ण पक्ष की परिवा १६वीं संख्या हुई दूज १७वीं मावस तक ३० वीं संख्या हुई। यदि प्रश्न कृष्ण पक्ष में छठ को किया तो पिंड बनाते समय तिथि संख्या २१वीं हुई। बार की गणना रवि बार से होती है मास की बैसाख से होती है। नक्षत्र की अश्वनी से

करण की बव से गणना होती है। ५ तो

शुक्लपक्ष की चौथ से तिथि गणना होती है।

प्रश्न दिन अष्टमी शुक्लपक्ष में हो तो ८ संख्या समझो

उदाहरण जैसे

तो २ प्रहर हुये समझो

नाम कमला है कृष्ण पक्ष रवि अष्टमी को पूछा

~~तो नाम पंच स्वरा की पहली पंक्ति में है~~

एक नाम संख्या रक्खो। शुक्ल ~~कृष्ण~~ पक्ष की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक १५ फिर बारिवां १६ - तो २३ संख्या अष्टमी तिथि को रक्खो। रविवार तो १ संख्या हुई। १ रक्खो। नक्षत्र अश्विनी था उस समय तो १ रक्खो। प्रश्न समय घड़ी में टाइम देखलो उस समय ~~कौन नक्षत्र चल रहा है उस नक्षत्र की संख्या रक्खो~~

३ नाम संख्या
८ तिथि संख्या
१ वार संख्या
१ नक्षत्र

१३
२×

६) २६ (४
२४

२ बचे

जैसे सुबह रेवती नक्षत्र ८ बजके ८ मिनट तक रहा पूछने के समय अश्विनी नक्षत्र लग गया तो १ संख्या हुई। यदि रेवती होता तो २७ संख्या रखते अब दो से गुणो ६ से भाग दो। फिर गुणनफल पिंड को ३ से गुणो ७ से भाग दो। फिर पिंड को ४ से गुणों ८ से भाग दो

सर्वाङ्क में ~~जाने~~ ~~प्रश्न~~ तिथि नक्षत्र बार का पिंड बना कर पिंड को पहले २ से गुणा करके ६ से भाग फिर पिंड को ३ से गुणा करके ७ से भाग दो। फिर पिंड को ४ से गुणा करके ८ से भाग दो। यदि तीनों में शेष बचे तो लाभ वर्ना हानि समझो

सर्वाङ्क की गणित

२६
२×
६) ५२ (८
४८
४

२६
३×
७) ७८ (११
७७
१

२६
४×
८) १०४ (१३
८
२४
२४
०

पहले भाग में शेष
(०) बचे तो लाभ न होगा ~~अब कोई~~ जगह
दूसरे भाग में (शेष ०) बचे तो शत्रुभय
तीसरे भाग में (शेष ०) बचे तो मृत्युभय
~~यदि शेष तीनों में (०) बचे तो लाभ होगा~~।

(लाटरी) (जूवा) (सट्टा) में देखे)

यदि तीनो में अंक बचें तो लाभ समझो कहीं ० कहीं अंक बचे तो सही भी न समझो। जब तीनों में अंक शेष बचें तो सर्वाङ्क सही समझना। यह सर्वाङ्क जब जिस मास में जिस दिन, जिस तिथि, जिस नक्षत्र में, जिस वार में पूर्ण बने उसी दिन काम करना चाहिये।

यदि मुद्दई मुद्दालय का नाम एक पंक्ती में पड़े तो इससे महुर्त का विचार मत करो। सर्वांक से देखो।

पंचस्वर सारणी

यदि एक ही पंक्ती में मुद्दई मुद्दालय का नामाक्षर पड जाय तो पंचस्वर से मुहुर्त न देखो।

	पं	पं	पं	पं	पं
	१	२	३	४	५
	अ	इ	उ	ए	ओ
	क	ख	ग	घ	च
	छ	ज	झ	ट	ठ
	ड	ढ	त	थ	द
	ध	न	प	फ	ब
	भ	म	य	र	ल
	व	श	ष	स	ह
तिथि	१	२	३	४	५
	६	७	८	९	१०
	११	१२	१३	१४	१५
बार	मं	बुध	गुरु	शु	श
	रवि	चं	०	०	०
नक्षत्र	रे.अ.	पुनर्व	उ.भा	अनु	श्र.
	भ कृ	अशा	ह.चि	ज्ये	ध.
			स्वा		शत
	रो.मृ.	मघा	वि.	मूल	पूर्वा
				पू.षा	भा.
	आर्द्रा	पू.भा.	सारवा	उ.षा	उ.भा

अब देखने की रीति यह है जिसको मुकदमा मुवासदा करने का महुर्त देखना हो उसका नाम अक्षर देखो किस पंक्ती में नाम का पहला अक्षर है जिस पंक्ती में नाम का प्रथम अक्षर हो वही पंक्ती बालस्वर उसके आगे वाली कुमार स्वर उसके आगे वाली युवा स्वर उसके आगे वाली वृद्ध स्वर उसके आगे वाली मृत्यु स्वर की पंक्ती कहलाती है। मुद्दई जो दायर करे उसको युवास्वर की पंक्ती के नीचे के नक्षत्र बार तिथियों में दायर करे परन्तु जिसपर दायर करे तो उसके नाम का प्रथम अक्षर वृद्ध स्वर, या मृत्युस्वर वाली पंक्ती में पड़े यह ध्यान रहे

मारकेश को देखने की रीति ॥

जनहां है

कुंडली में जातक को देखो द्वितियेश और सप्तमेश
द्वितियेश तृतियेश षष्ठमेश सप्तमेश इनमें से जिस
को जो गृह पूर्ण दृष्टि से देखता हो उस गृह को अन्तर
दशा में खतरा है। द्वितियेश सप्तमेश मारकेश
गृह होते हैं। यह अपनी अपनी अन्तर्दशा में
नहीं मारक होते हैं। हर गृहों की दृष्टि का चक्र
बना है देखलो।

गृहों की दृष्टियाँ

सूर्य ७ वें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है
चन्द्र ७ वें ,, ...
मंगल ७ वें चौथे ८ वें स्थान को पूर्ण रूप से
बुध ७ वें ....
गुरु ७ वे ५ वें नवें स्थान को ....
शुक्र ७ वें ....
शनि ७ वें १० वें ३ को
राहु केतु ७ - १० - ३ को पूर्ण दृष्टि को

यदि पापगृह अपने घर में या मित्र के घर में दृष्टि डाल रहे हों तो शुभ फल होगा शत्रु के घर को देखें तो अशुभ। हर गृह सातवें घर को पूर्ण रूप से देखता है।

प्रश्नलग्न बनाने का तरीका

जिस समय कोई प्रशन करे उस समय घड़ी देखो जैसे
सुबह ८। बजा के ८ मिनट पर प्रश्न किया तो इस टाइम में
सूर्योदय के उस दिन के घंटा मिनट घटा कर २।३० से गुणा
कर के इष्ट काल बनालो। यदि १२ बजे के बाद दिन में
प्रश्न करे तो प्रशन समय के घंटा मिनट में १२ बीता
घंटा जो के सूर्योदय घटा कर २।३० से गुणो इष्ट काल
बन जायेगा। इसी तरह यदि सूर्यास्त के बाद जो प्रशन करे
तो सूर्यास्त घटा कर २।३० से गुणो। दिन मान जोड़ दो इष्ट काल बनेगा
यदि रात को १२ बजे के बाद प्रश्न करे तो १२ घंटा प्रश्न
टाइम में जोड़ के २।३० से गुणो दिन मान जोड़ दो इष्ट काल

इसतरह इष्टकाल बना कर । उसदिन का सूर्यसपष्ट

पत्रा में देखो कितना रासी अंश कला विकला है। जैसे
२।२४।५७।५८। रासी अंश कला विकला हैं तो
समझो वृष गत मिथुन के २४ अंश बीत गये अब तुम
लगन सारणी में २५ वें अंश पर देखो मिथुन रासी के
सामने क्या संख्या है वह संख्या इष्टकाल में जोड़ कर
फिर देखो वह अंश कला कहां किस रासी के सामने
किस अंश के कालम में है लगन सारिणी में पत्रे में पीछे लिखी रहती है। जहां
मिले। जिसके सामने वह रासी फिर उस अंश के नीचे कालम में अंक मिले बस वही
नीचे हों वह अंक अंश समझो कला जो जो इष्टकाल
में जोड़ कर फल में आई है वह रखो लगन बन गई

जैसे

घं - मि
५।४० प्रशन का टाइम है शाम का होतो दुपहर के १२ बीते घंटे +
१२+ बीत घंटा दुपहर वाला जोड़ा
१७।४०
५।३० - सूर्योदय उसदिन का
१२।१० × २।३०
२४। २०
३६° ।३००
३१ ।१० । ० इष्टकाल

सूर्य सपष्ट उसदिन
३।२४।५७।५८
मिथुन बात कर्क में देखो २५ सवें अंश पर चूंकि २४ अंश तो बीत गये तो २२।६।३६ अंश कला वि है
३१।१० + इष्टकाल जोड़े
५३।१६।३६ जोड़ फल ये है

अब देखो जोड़ फल लगन सारिणी में कहां है। तो देखा ७ वीं तुला रासी सामने १५ वें अंश के नीचे यह जोड़ फल संख्या मिली तो तुम समझो ।। ७ । १५ तो यही लगन की हुआ पर |५३।१३।११|
पर अंश १३ ही है तो
कला जोड़ फल की जो १६ है उसमें से १३ और विकला बढ़ा दो तब रखो

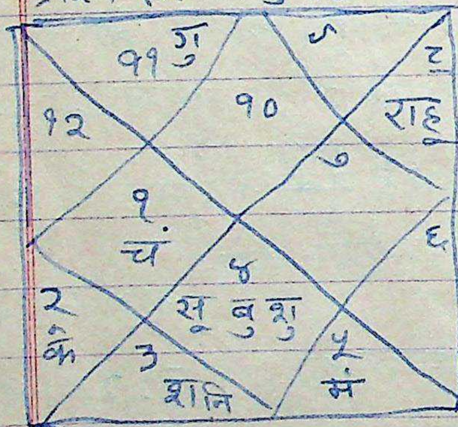
८।३।१६।२६ जोड़ फल की संख्या ये है तो
५।२।१३।११ जो पच्चीसवें अंश के नीचे थी उसे घटा दो
―――――――――
३। २५

यदि जोड़ फल, मिली संख्या से ज्यादा हो तो तब कला विकला का सही पता लग जायेगा। अब तुम्हारे रासी, अंश कला विकला सही हुआ

८ रासी १५ अंश ३ कला २५ विकला हुई।

८।१५।३।२५ लगन शुद्ध बनी इसे प्रश्न लगन कहते हैं इसी से गोचर पत्रा में देख के बना लो जो गृह जहाँ हो बैठा दो, फिर देखो कौन गृह बलिष्ट है तब फल जानो जैसे ८ रासी है तो धनगत मकर रासी हुई यानी मकर लगन का गोचर बना पड़ा।

प्रश्न लगन कुंडली



राशी ३० में से अंश घटाने पर जो शेष बचें वह राशी ही बचेंगी

२२ - ८ अंश राहु / ८ बचे — एक राशी एक मास में बीतती है इसलिये ८ राशी को माने ८ महीना समझो राहु का बीत गया। २२ मास और रहेगा।

प६ ज्ञात समझो बीता मास राहु का है।

जिस मास में जिस पक्ष के जन्म के समय राहु केतु का कितना हो पत्रा खोल के इस रीति से देखलो राहु केतु कितना बीता कितना बाकी है।

यदि राहु केतु का पता लगाना हो की कितने दिन आये हुऐ जातक की राशी पर और कितने दिन रहेगा।

सदा यह गृह उल्टा चलते हैं बाकी सब शीधे चलते हैं कभी २ बक्री मार्गी हो जाते हैं। अब राहु केतु इस रीति से देखो। पत्रा में अंश कला विकला सब जहाँ जिस जगह लिखे रहते हैं वहां देखो हम चक्र बना कर बताते हैं।

१७ पं शुद्ध भाद्र कृष्ण ८ रवौ सूर्योदय सपस्टग्रहा:। द्युगण: १२६६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	राहु	के
३	०	४	३	१०	३	२	७	१
२४	२५	१४	१८	२४	३	२०	२२	२२
०	१०	१६	२५	४	४१	३८	३६	३६
३४	५३	३५	६	५८	४०	३७	५	५
५७	७६	३७	७२	५	७२	६	३	३
२४	७	४३	२५	५३ व	२५	४४	११	११

अंश को मास

गृह चाल

यह लिखा रहता है अब देखो इसमें राहु के कालम में ७ राशी के नीचे २२ अंश लिखे है तो तुम यह समझो २२ मास और राहु केतु के भोगने पड़ेंगे भाद्र कृष्ण अष्टमी तक तिथि से ८ मास केवल बीते हैं। ७ माने तुला

मतलब तुला गत बृश्चिक राशी पर राहु के २२ अंश यानी २२ मास भोगेंगे आगे इसको देखने की रीति ३० अंश की एक राशी होती है तो ३० से २२ अंश जो राहु के नीचे लिखे हैं वह घटा दो। जो बचे

३० । २२ । ८

१६ बीते मास है

1) शनि १२वें १वें दूसरे स्थान पर शनि साढ़े साती
शनि ७वें ८वें ९वें स्थान पर कटक साढ़े साती की भांति
शनि चोथे दूसरे स्थान पर ढ़ैया। शनि शुक्र चंद्र
पक्ष में रासी से ३-६-११-१० वें स्थान पर बलवान
होते हैं। जब बलवान होते हैं तो विदेश यात्रा होती है।

2) राहू जन्म रासी में १८ मास रहते है, केतू भी १८ मास
१२वें, पांचवें स्थान पर भी राहू केतु १८ मास रहते हैं
यह २-४-७-८-१२ वें स्थान पर खराब होते हैं
बुध शुक्र एक मास एक रासी पर रहते हैं।

3) गुरु जन्म रासी में पांचवा ४-११-१२वें स्थान पर
१२ मास रहते हैं। ५-९-१०-११ स्थान पर
शुभ है। उस साल पास हो या तरक्की हो। १-३-६
१० वें स्थान पर भी शुभ हैं। ४-८-१२वें स्थान
पर मृत्यु दायक होते हैं।। (चंद्र सवा दो दिन एक कोष्ठ में रहता है
कुंडली में सूर्य एक रासी पर १ मास रहता है।।

4) सूर्य १-२-४-७-८-१२ स्थान में हो तो मृत्यु
दायक कष्टकर होते हैं। २-१२ वें स्थान पर हो तो
जातक काना टेढ़ा अन्धा होता है।
सूर्य, मंगल, लगन से १० वें घर में बली होते हैं। शनि लगन
से सातवें घर में बली होते है। शुक्र चन्द्र लगन से चौथे
स्थान पर बली होते हैं। मंगल एक रासी पर डेढ़ वर्ष रहता है।

5) मंगल मेष वृश्चिक मकर का कुंडली में हो तो महा
खराब महा मंगली होता है। ४-८-१२वें स्थान पर सादा
मंगली होगा। जिस वर्ष दशमेश बलवान होगा व्यापार स्वदेश का योग होगा
6) यदि नवमेश रासी से जिस वर्ष ५-७ वें स्थान पर हो गर्भ रहेगा

गुरु अस्त शुक्र अस्त वक्री गुरु या वक्री शुक्र
चन्द्र ग्रस्त में कोई सिद्धि नहीं करनी चाहिये।
मल मास में भी कोई सिद्धि नहीं की जाती है।

चन्द्रा ४-८-१२ वें स्थान पर बहुत खराब रहता है गोचर में हो या कुंडली में हो

यदि तुम्हें शनि, या राहु या केतु या गुरु या सूर्य या बुध, या मंगल किसी भी गृह का पता लगाना हो कि कितना दिन हुआ फला गृह को लगे हुआ तो पत्री में देखो

हर पक्ष में। हर मास में नीचे लिखा रहता है

जहां पत्रा में (सूर्योदय दैनिक स्पष्ट भौमादि ग्रहाः लिखा रहता है। जैसे शनि पता लगाना है कि कब से मिथुन रासी पर चल रहा है। तो जब जिस पक्ष वा मास में जानना हो। शनि के कालम में

देखो कितना अंश बीत गया। जितना अंश बीत गया उतना मास समझो बीत गया जैसे श्रावण शुक्ल रवि दुइज को पता लगाया तो दुइज रवि के सामने वेड़ी लाइन पर शनि देखो कि वृष गत मिथुन पर कितने अंश बीते। तो देखा २।१८।७।२२ | दुइज रवि शुक्ल में लिखा है।

तो समझो वृष गत मिथुन रासि पर शनि को आधे १८ मास बीता मतलब १ डेढ साल हुआ मिथुन पर शनि को आये

प्रयोगारम्भादिकमात्

स्थान	नं.	फलानि
शीर्ष	३	हानि
मुखे	३	सिद्धि
कण्ठे	३	मृत्यु
हस्ते	४	शत्रुभय
हृदये	४	इष्ट प्राप्ती
उदरे	३	हानि
कटि	३	इष्ट प्राप्ती
[illegible]रशा	४	धनप्राप्ती

जिस मास में प्रयोग करना हो तो सूर्य नक्षत्र पहले देखो कि सूर्य अब किस नक्षत्र पर है, जैसे देखा इस मास में (इस मास मे) सूर्य उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र पर है, तो उत्तरा फाल्गुनी के बाद देखो कौन नक्षत्र पड़ रहा है तो गणना में इसके बाद हस्त, फिर चित्रा, फिर स्वाती, तो तीन नक्षत्र तक प्रयोगारम्भादिकमात में तीन नक्षत्र तक हानी लिखी है फिर ४ नक्षत्र तक सिद्धी लिखी है इसी तरह सब समझ लेना।